

भूगोलज्ञानप्रकाश.

(भरतखंड हिंदुस्थानका.)

पंडित गंगाधर पुष्करलालकृत

मुंबादेवीके पास मोटी सडक कालकादेवी रोड तमाषुदुकान

आवृत्ति पहिली.



यह भूगोलज्ञानप्रकाश
हिंदुस्थानी भाषावचनीका बनाकर प्रसिद्ध किया है

यह पुस्तक मुंबईमें
जगदीश्वर छापरवानामें छपवाया है

मिती आश्वीन शु. ०५ रविवार संवत् १९४६ शकै १८११.

सन १८८९ अंग्रेजी तारीख २९ सितंबर

किंमत १ रुपैया डाक महसूल =)

यह पुस्तक सन १८६७ का आक्ट २५ प्रमाणें रजिस्टर
किया है.

सूचना.

यह भूगोलज्ञान प्रकाशमें सर्व हिंदुस्थानका वर्णन तथा सर्व कौशल्यता विद्या बुद्धि तथा अंग्रेज सरकारका राज्य और आश्रयभूत सर्व राजाका वर्णन राज्य प्रमाण लिखा है. और सर्व ऋतु-धर्म देशकालवर्णन लिखा है.

महाराजा सर्व मित्र विद्वान बुद्धिवान गृहस्थ और पाठशाला-के विद्यार्थीने ए अरज करता हूं जे नवीन भूगोलज्ञान प्रकाश बनाया है. इसीमें भरतरबंद हिंदुस्थानका वर्णन जेसी खबर मिलती-गई है और भूगोलमें प्रमाण मिलता गया है तेसी लिखता गया हूं. और विद्याकला कौशल्यता, चातुर्य और नदी पर्वत मेवा पदार्थ उत्पत्ति और प्राचीन राजा भुक्त गये हैं जिनका वर्णन और अंग्रेज सरकारकी महाराणीजीका गवर्मेंट महादिग्विजय राज्य वर्णन और वर्तमान महाराजाका राज्य भोगते हैं उनका वर्णन किया है. और जिसीको ये भूगोलज्ञान प्रकाश चाहिये इसीने अपणानाम ठीकाना और ग्राम जीला लिख देणा चाहिये और लिख्या प्रमाण किंमत १ = २ डाकमें भेज देना चाहिये तो इसिबर खत बुकरवाना किया जायगा और आपके आय पुचेगे. इसी हमारी अरज है.

भूगोलज्ञानप्रकाश.

भूगोलज्ञान जे भरतखंड हिंदुस्थान मोटो देश है. और प्राचीन-संस्कृतग्रंथामें भरतखंड तथा भरतवर्ष अथवा आर्यवृत्त नाम है. और यूरोपखंडके लोक अथवा अंग्रेजसरकार इंडिया नाम कहते हैं. भूगोलज्ञान इसीका अर्थान भू जे पृथ्वी इसीके गोलाकार इसीका वर्णन जे ज्ञानप्रकाश और भूगोलज्ञान शास्त्र वह विद्या है जिसके पृथ्वीके धरातलका वर्णन है. उसके तीन मुख्य भाग है अर्थात् गणितप्रधान-भूगोलविद्या प्राकृतिक भूगोलविद्या और श्रीपरमेश्वरअवतार प्राचीन क्षत्रीवंश राजा और राजसंबंधी भूगोलविद्या. १ और गणितप्रधान भूगोलज्ञान विद्यासे पृथ्वीकी आकृति गति लंबाई चौड़ाई, उसका दूरा रेखासे संबंध, और उसके धरातलके स्थानोंकी शुद्ध स्थितिका बोध-होना है. २ प्राकृतिक भूगोलविद्यामें पृथ्वीके धरातलके स्वरूप उसकी बनावट और जलवायुका वर्णन है. ३ श्रीपरमेश्वरका अवतार लीलाराज्यसंबंधी भूगोलज्ञानप्रकाशमें पृथ्वीके कृत्रिम विभाग अर्थात् राज्य देश इनके विस्तार मनुष्यसंख्या राज्यप्रबंध मत भाषा और प्राप्तीका वर्णन है.

भूगोलज्ञानप्रकाशगणितसंख्या.

यह सृष्टी जहांतककी मनुष्य दरियाफूत कर सका है. अनंत और इसमें अनेक अस्थिर प्रकाशवान् सूर्यके सदृश पिंड हैं. जो पृथ्वीसे इतने दूर हैं की वे केवल बिंदुओंके समान दीख पड़ते हैं. जब दुर्बिनीसे-नक्षत्रोंकी परिक्षा होती है तो वे असंख्य दिखलाई देते हैं. परंतु भूमध्यरेखापरसे स्वच्छ अंधेरी रातको खाली आसके द्वारा केवल ५००० ही दी-

रखते हैं. इनके छह भाग हैं. अधिकसे अधिक प्रकाशवान् पहिले भाग में आते हैं. और उनकी संख्या बहुत कम है. उनसे कुछ कम प्रकाश के दूसरे भागमें गिने जाते हैं. इसी प्रकार छठावे भाग तक जानो. दुर्वी नसे अवलोकनशक्ती बहुत बढ जाती है यहां तक कि ज्योतिषियोंने सो लहवे दर्जेके नक्षत्रभी देखे हैं. सातवे दर्जेके तारे अनुमान १३००० हैं. अच्छीसे अच्छी दुर्वीनसे ५००००००००० पांच स्वर्ष तारोके लगभग-दिरखलाई देते हैं. कई नक्षत्र अपनी धूरीके अनुसार पृथक् २ समयमें सूर्यकी परिक्रमा करते हैं. और अपनी धुरीपर भी घूमते रहते हैं. उनकी परिक्रमाकी गतीसे भिन्न २ ऋतु होती है. और धुरीपर घूमनेसे दिनरात ये नक्षत्र सूर्यके किद्वमान उसकी परिक्रमा करते और ग्रह कहलाते हैं. और सूर्यसहित इन सबको सूर्यमंडल कहते हैं. इस मंडलमें आठ ब-डो २ और कई छोटे २ पिंड हैं जिनके नाम नीचे लिखे हैं. बुध शुक्र पृथ्वी मंगल ९० लघुग्रह बृहस्पति शनी उरानस और नेपचून और सूर्य अपने मंडलका केंद्र है. उसका व्यास लगभग ४४१५०० कोस है. और वह प्रकाश गरमी और जीवनका मूल है. वह अपनी धुरीपर हर २५ दिनमें एकबार घूमता है. और सूर्यसे ग्रहोकी दूरी उनका व्यास और सूर्यकी परिक्रमाका काल नीचे लिखे अनुसार है.

ग्रह	सूर्यसे दूरी	व्यास	परिक्रमाका काल
बुध	३ करोड १० लाख मील	३१४० मील	८८ दिन
शुक्र	६ करोड ८० लाख मील	७७००	२२४
पृथ्वी	९ करोड ५० लाख	७९१६	३६५
मंगल	१४ करोड ४० लाख	४१००	६८७
लघुग्रह	२६ करोड ३० लाख		१६८५

बृहस्पती	४९ करोड मील	९०००० मील	४३३२ दिन
शनी	९० करोड मील	७६०६८	१०७५२
उरानस	१ अर्व ८० करोड	३४५००	३०६८६
नेपचून	२ अर्व ८५ करोड	४२०००	६०६२४

कई एकग्रहोंके साथ और छोटे २ ग्रह हैं जो रात्रिके समय सूर्यके प्रकाशमें चमकते हैं इन्हें उपग्रह या चंद्र कहते हैं. इसी प्रकार पृथ्वीके साथ भी एक उपग्रह है. अर्थात् चंद्र जिसका व्यास २१६० मील है. और वह पृथ्वीसे केवल सवा दो लाख मील दूर है. बृहस्पतीके ऐसे २ चार उपग्रह हैं. शनीके आठ और उरानस के छह. शनीके आसपास प्रकाशवान वृत्त भी हैं. सूर्यग्रह और उपग्रहोंको छोड़ और भी ऐसे तारे हैं. जो आकाशमें घूमते हैं. उन्हें पूंछल तारे कहते हैं ये सूर्यके स्वाधीन हैं. परंतु वक्राकार मार्गमें भ्रमण किया करते हैं. ग्रहणा और संक्रम भी आकाशमें हुआ करते हैं. इनका विशेष वर्णन होना चाहिये. सूर्य चंद्रग्रहण प्रमाण जब सूर्य और पृथ्वीके बीचमें चंद्र आजाता है. और चंद्रकी छाया पृथ्वीपर गिरती है तब सूर्यग्रहण होता है. और जब सूर्य और चंद्रके बीचमें पृथ्वी आजाती है तो चंद्रग्रहण होता है. इसलिये की पृथ्वीकी गोलछाया जबकी बुध और शुक्र सूर्य और पृथ्वीके बीचमें आजाता है तब सूर्यपर काला तिलसा दिखाई देता है उसीको संक्रम कहते हैं.

पृथ्वीका आकार परिमाण और उसकी गति.

पृथ्वीका आकार प्रायः गोल है. इसलिये उसे गोला कहते हैं परंतु ध्रुवोंपर वह कुछ २ दबी हुई है. और पृथ्वीकी गोलाईके कई प्रमाण हैं. १ समुद्रमध्ये नाविक लोग पृथ्वीकी परिक्रमा पूरी

र उसी स्थानपर आय पहुचते हैं. जहांसे की वे चले हैं और जहांत ककी हवा प्रवाह और अंतरगत धरतीके मारे बनसके हैं उनकी- जलयात्राकी दिशा नही बदलती है. २ समुद्रमे सबसे पहिले ज हाजके उपरि पालदृष्टी पडते हैं और ज्यों २ वह निकट आता- जाता है उसीके नीचेके पाल दिखाई देते हैं. यहातककी अंत- को उसका पेंदा भी दीखने लगता है. और जब जहाज किसी उंचे- अंतरीपसे चलता है तो पहिले उसस्थानसे उसके नीचेके भाग अ- दृश्य होने लगते हैं. यहातककी अंतमे उसकी चोटी भी दृष्टीके बहार होजाती है. थलपरभी मैदानमे कोईभी वस्तु समीप आने अथवा दूरजानेपर इसी प्रकार दिखाई देते हैं. ३ आकाशके अन्यग्रह उप ग्रह और नक्षत्रभी गोलाकार हैं. ४ जब चंद्रग्रहण होता है तो पृथ्वी की छाया चंद्रपर पडती है और वह छाया गोली दीखती है. इससे- भी यहा जाना जाता है की पृथ्वी गोल है. ५ जब कभी मनुष्य गुबारोपर बैठकर चार कोसकी उंचाईतक चले जाते हैं तब उन्हें पृथ्वीका आकार गोल दिखाई देता है. और पृथ्वी सूर्यसे ९ करोड ५० लाख- मील दूर है और वह वर्षभरमे एकवार सूर्यकी परिक्रमाकर लेती है उसकी कक्षाके वृत्तका केंद्र सूर्य है. और उस वृत्तका व्यास १९ करोड मील है. इसलिये पृथ्वी अपनी वार्षिक चाल पूरी करनेके हे तु हरघंटेमे अनुमान ७० सहस्र मील अवस्य चलती होगी इसी ग तीसे भिन्न २ ऋतु होती है. इस गतीको छोड पृथ्वी अपनी धूरी परभी २४ घंटेमे एकवार घूम जाती है. और भूमध्यरेखाके आस पासके निवासी इस गतीसे पृथ्वीके साथ हरघंटेमें १०४० मील चले जाते हैं परंतु वहासे उत्तर दक्षिणवाले उनकी अपेक्षा कुछ कम ग- तीसे चलते हैं. जैसे की कलकत्ते की रहनेवाले जो भूमध्यरेखासे-

२२-३ अंश उत्तर उत्तरको है. एक घंटेमे ९५० मील जाते है. और इसी प्रमाणसे वे भी जो इसी दूरीपर दक्षिणमे है घूमते है. पृथ्वीका व्यास पूर्वसे पश्चिमतक ७९१२ मील और उत्तरसे दक्षिणतक ७८९६ मील अर्थात् १६ मील कम है. और उसकी परिधि २४८५६ मील है उसके दक्षिणोत्तरी व्यासके सिरोको ध्रुव कहते है. पृथ्वीका संपूर्ण क्षेत्रफल १९ करोड ६५ लाख मील है.

भूगोलज्ञानप्रकाशकल्पितवृत्तादिवर्णन.

पृथ्वीपर स्थानोंकी स्थिति जाननेके लिये भूगोलशास्त्रीयोंने कुछ छेक वृत्त कल्पित किये है. इनमेंसे कोइतो महावृत्त कहता है और कोइ लघुवृत्त महावृत्त कहता है. जिसका केंद्र वही हो जो पृथ्वीका है और लघुवृत्त वह होता है की जिसका केंद्र पृथ्वीका केंद्र न होय. हर एक महावृत्तकी परिधीके ३६० अंश कल्पित कर लिये है जिनमे से हर एक अंश ६९ ३ अंग्रेजी या ६० भूगोलाके मीलके बराबर होता है. इन महा और लघुवृत्तोंके नाम नीचे लिखे है. विषुवरेखा या विषुववृत्त पृथ्वीपर वह महावृत्त है. जो दोनों ध्रुवोंसे समान अंतरपर पृथ्वीके २ तुल्य भाग करता है उनमेंसे एक विभागको उत्तरी गोलार्ध कहते है और दूसरेको दक्षिणी गोलार्ध और क्रांतिवृत्त वह महावृत्त है. जिसमें सूर्यपर यथार्थमे पृथ्वी अपनी वार्षिक परिक्रमा पूरी करती है. उसके बारह विभाग है जिनमेंसे प्रत्येकको राशी कहते है उनके नाम ये है. उत्तरी राशी:- मेष वृषभ मिथुन कर्क सिंह कन्या. और दक्षिणी राशी:- तुला वृश्चिक धन मकर कुंभ मीन, और उनमेंसे पांच राशी हर रातको दिखाई देते है. छद्दी राशी सूर्यके प्रकाशसे छिप जाती है और बाकी ६ राशी पृथ्वीकी आड़मे हो जाती है. क्रांतिवृत्त विषुवदरेखाको संपातके दो बिंदुओंमे वक्रकोणसे काटता है. और-

वेरेखा जो विषुवदरेखा की दोनों ओर क्रांतिवृत्त की सीमा है अयनवृत्त कहते हैं. उत्तरायणवृत्त वह है जो विषुवदरेखा से $२३\frac{1}{2}$ अंश उत्तर में है और वह जो विषुवदरेखा से उतनी ही दूर दक्षिण में है. दक्षिणायनवृत्त कहलाते हैं. हिंदुस्थान में विंध्याचल की श्रेणी उत्तरायणवृत्त के समीप है. सूर्य वार्षिक गति में विषुवदरेखा के उत्तर और दक्षिण की ओर अयनवृत्तों तक घूमता है. अयनवृत्तों के बीच के देशों को उष्णकटिबंध कहते हैं. मध्याह्नरेखा के कल्पित महावृत्त है जो एक ध्रुव से दूसरे तक या उत्तर से दक्षिण तक स्वीचे जाते हैं उन्हीं से देशांतर मापा जाता है मध्यरेखा के पृथ्वी से दो समविभाग होते हैं. उनमें से एक को पूर्वी गोलार्ध कहते हैं और दूसरे को पश्चिमी गोलार्ध. कृत्रिम भूगोल पर बहुधा २४ मध्याह्नरेखा स्वीची जाती हैं इसी लिये प्रत्येक मध्याह्नरेखा में एक दूसरी से १५ अंश का अंतर होता है अर्थात् एक मध्याह्नरेखा से दूसरी तक जाने में सूर्य को एक घंटा लगता है. पृथ्वी पर हर एक स्थान की एक मध्याह्नरेखा हो सकती हैं. क्योंकि सूर्य २४ घंटे में एक बेल हर एक स्थान के ठिकाने ऊपर आता है. उसी समय मानो वहां १२ बजते हैं और वह रेखा जो उस समय ध्रुव से सूर्य के स्थान तक स्वीची जावे और फिर उस स्थान से लेकर दूसरे ध्रुव तक बढाई जावे तो वही उस स्थान की मध्याह्नरेखा मानी जावेगी और इंग्लिस्थान की पहिली मध्याह्नरेखा ग्रीनिज नगर के राजकीय आबजर बेतरी पर से जाती है. ग्रीनिज नगर लंदन राजधानी के निकट है. जब मनुष्य सपाट मैदान में खड़ा होकर देखता है तो उसको वह जगह जहां आकाश से पृथ्वी मिली हुई दीखती है. प्राकृतिक भूगोलज्ञान विद्या हम इस पृथ्वी के अंतर भागों के विषय में बहुत थोड़ा जानते हैं. क्योंकि लोग उसके अंदर केवल ४ कोस तक काहाल दरयाफ्त कर सकते हैं. परंतु भू

गर्भशास्त्री पृथ्वीपर धातुओके स्थानोकी रचनाकी परिक्षा करनेसे उसके अंदर लगभग दसकोस तकका ज्ञान होता है.

पृथ्वीके द्रव्य धातुसंख्या.

वे द्रव्य जिनसे पृथ्वी बनी है और बहुधा मिश्रित पदार्थ हैं उन-कोशोधनेसे ६५ तत्व या शुद्ध द्रव्य निश्चित होते हैं. तत्वोके दो वर्ग हैं. अर्थात् धातुरूपी और धातु विरहीत. धातुओकी संख्या ५२ है उनमेंसे मुख्य प्लातिनम् सोना चांदी तांबा लोहा सीसा कधील जस्ता पारा हैं.

भूपृथ्वीरचना.

भूपृष्ठका संपूर्ण क्षेत्रफल १९७०००००० वर्गमील है जिसमें-से थल ५१५००००० वर्गमील है. अर्थात् संपूर्ण पृष्ठकी चौथाईसे कुछ अधिक हैं और जल १४५५००००० वर्गमील है.

पृथ्वीकी मनुष्यसंख्या.

हालकी गणतीके अनुसार संपूर्ण पृथ्वीकी मनुष्यसंख्या १ अर्ब २१ करोड ५० लाख है. और जुदा जुदा हर एक महादीपकी मनुष्य संख्या नीचे लिखी हैं.

गाहादीप	क्षेत्रफल	मनुष्यसंख्या
यूरोप	३८१२०००० वर्गमील	२८२३५८०००
एशिया	१६६२६००० "	७११२८००००
आफ्रिका	१२०००००० "	१३०००००००
उत्तरीअमेरिका	८३३५१४७ "	४९५०४७६४
दक्षिणीअमेरिका	६६३३८४१ "	२२५५४७६२
ओशनिया	४५००००० "	२०००००००

एक्यजुमले ५१९०६९८८

१२१५६९७५२६

मत हालके मुख्य धर्मोंकी संख्या नीचे लिखे प्रमाणे हैं.

रोमनकाथोलिकमतवाले	१५५०००००००
प्रातस्तंत	१००००००००
ग्रीकचर्च	८०००००००
अन्यक्रिस्ती	२००००००००
यहूदी	५००००००
मुसलमान	१३०००००००
ब्राम्हण	२००००००००
बौद्ध	३५०००००००
शेषमूर्तीउपासक	१००००००००
इतरहैं	७५००००००

पृथ्वीकी संपूर्ण मनुष्यसंख्या १२१५००००००

भरतरखंड हिंदुस्थानका मनुष्यसंख्या.

हिंदुस्थानका संपूर्ण मनुष्यवस्तीसंख्या २४ करोड अनुमान -
आसरे है. और आश्रित और स्वतंत्र राज्योंको छोड़कर ब्रिटिश इंडि-
याकी मनुष्यसंख्या १६ करोड १५ लाख है आसरे अनुमान हैं.

राज्यसंबंधी भूगोलज्ञानप्रकाश.

राज्यप्रबंध कई प्रकारके हैं अर्थात् बादशाही राज्य पंचाइति रा-
ज्य अष्टकौसल राज्य. सुबेनबाबी और इतर छोटे २ रजवाड़े बाद-
शाहीमें मुख्य अधक्ष अर्थात् बादशाहके आधीन कई देश होते
हैं और राजा या रानीके आधीन जो देश होता है उसे राज्य कहते हैं.
और हिंदुस्थानकी महाराणी जिनके आधीन बहुतसे देश हैं बाद-
शाही राज्य हैं. और अर्थात् राजतंत्रक और प्रजातंत्रक अथवा
सभाधीन और जिस राज्यमे सब इस्वतियार केवल राजा ही के

आधीन होता है. उसे राजतंत्रक राज्य कहते हैं. और राजा का जहां सब इखतियार सभा के आधीन होता है उसे प्रजातंत्रक अथवा सभा-धीन राज्य कहते हैं. और ऐसी राज्य सभा अंग्रेजी में पार्लिमेंट कांग्रेस कहती है. और जहां राजा को स्वयं अधिकार होता है. वहां की सरकार को स्वतंत्र राज्य कहते हैं.

भरतखंड का लंबाई चौड़ाई है.

इस्ट इंडिया १ भरतखंड हिंदुस्थान को कहते हैं. और भरतखंड हिंदुस्थान की लंबाई चौड़ाई मील है जिसमें लंबाई अधिक से अधिक रासकुमारी से लेकर काराकोरमतक १९०० मील है और चौड़ाई अधिक से अधिक सिंध से आसाम तक १८०० मील है.

भरतखंड हिंदुस्थान का क्षेत्रफल.

संपूर्ण क्षेत्रफल १४६५००० वर्ग मील चौरस है.

भरतखंड हिंदुस्थान में कैसब काम.

सूत कपड़ा जरी सोनेरी रुपेरी दुशाला दुपटा पागड़ी सतरंज ए-रंडी धुसा मुकटा पीतांबर रेसमी गलीला मुकटा कागद और सस्त्र तोपा बंदूक जज्जापल तमाई चा गोली तरवार छरी कटारी चाकू-ढाल और तांबा पीतल लोखंड का काम बहोत होता है.

सोना चांदी तांबा पीतल और हीरा माणक पन्ना मोती और खांडूल मधगीरत तैल और धान्य गोहूँ जव मका बाजरी जवार मू ग उडद चणा मारु चावल अलसी और गाय भैस बलद घोडा घोडी-हाती उंट सिंह रीछ हरण सूर सूसला और सर्प सर्पणी गोहिरा वीछु और देश पूर्व बंगाला में अफीम पटणा बंगाला बानारस में बहोत होता है. खेती करने को सरकारी का अधिकार है और इसमें पाच क-

रोडसे लेकर सात करोड रुपये तक आमंदानी होती है और चावल पाक २ तीन ३ अमल आउस कटक मे पास होता है. अराकान पेगू मे कपास रुई बहोत होता है. और राणीगंज में जबलपूर में कोलसाकी-खाना है. संबलपूर मध्य प्रदेश में कुलेर ज्जील कृष्णा नदी के किनारे परबुदे लखंड के पन्ना में हीरा मिलते हैं. हाती पूर्व नेपाल में हैं. और दक्षिण देश में उपज धान्य जुवार बाजरी अलसी तील चावल कपास रुई नागपूर जीलामे है. पूना में साग भाजी मेवो और मलबार में काफी काली मिर्च इलायची पीस्ता तमाखू तिली सिसम चंदन-साग लकड़ी रुई कपास कपडे जरी के रेसमी बने जाते हैं. हतयार बनते हैं. और पश्चिम देश गुजरात कच्छ भूज में कपास रुई बाजरी गीरत बडोदे का राज्य में तमाखू जरदा बहोत होता है. रेसमी मसरू सूरत में अमदाबाद में रेसमी कपडे जरी काम सोनेरी रुपेरी बहोत होता है. मध्य मालवा मेवाड़ देश में अफीम कपास रुई गहु चणाम-का जव बाजरी जवार दाणा तखार बंदूक ढाल कपडा होता है. और उत्तर देश पंजाब में गहु नील रेसम और रेसम के कीड़े भी मिलते हैं. कांदो जोलम जुवारी और तमाखू साठा बबुल फल केला आम नारंगी इमलात खबूज कागड़ी इत्यादि सर्व देश में होता है और निमख लूण सर्व देश में बहोत होता है. और पशु जाती जीव जंतु सर्व देश में होता है. पशु सिंह राजपुताना और गुजरात में बाघ पूर्व और दक्षिण में विशेषकर गंगा किनारे बंगाल के जंगलो में बहोत मिलता है परंतु बाघ और सिंह दोनों किसी एक ही जिलामे नहीं मिलते और जहा सिंह मिलते हैं वहा बाघ नहीं मिलता और सर्वत्र पाले जाते हैं. गेंडा बंगाले अति घने जंगलो में रीछ जंगली पहाड़ो पर जंगली गधा जिसे खचर गधा कहता है महाराजपुताना में और सिं

धमें अनेक प्रकार जातिके हिरन पहाडो और जंगलोमे पाये जाते है और चिंता जंगली सूअर शृगाल लोमडी खरगोश लंगूर पाये जाते है मंम उंट हाती सुरागाय सांड बैलगाय बकरी जिनके बालोसे दुधाले बनते है और पक्षी गीध तोता वगुला सारस बतक मोर मोरनीचकोर और पहाडोपर हंस राजहंस कबूतर अनेक भातीके कीडे इस देशमें बहोत होता है. और साप बहोत होता है. पैथन अति जहरीला फळदार चित्र विचित्र वीछु वीव होता है.

जमीनकी उपज आमदानी है.

भरतरवंड हिंदुस्थानकी आमदानी अंग्रेजी राज्यकी आमदानी रु. ५२ करोड आसंर अनुमान है. हिंदुस्थानकी अंग्रेजसरकारकी वर्ष १ की कुल आमदानी संवत् १९४३ की संख्या जमा.

२३६१००००० जमीनका हासील खेतीका.

८९५००००० अफीमकी डाणजगात.

६६६००००० लवणनीमखकी डाणजगात.

३१५००००० इष्टामका टिकटका.

४३७००००० दारुकी जगातका.

३०१००००० जमींदार लोगाके पास खीरणी.

१२७००००० जमिनकी फरजंदारी डबा.

४३००००० सुंबईका तथा मद्रासका जंगलकी लकड़ी धासका पेदास.

३०००००० रजिष्टरका.

६९००००० सरब राजाकी खीरणीका छुआनीका.

३१०००००० दीवानी कोरटका.

१०४००००० देसडाण जगातका कष्टका.

वर्ष १ का आमदानी जुमले रु० ५७३८००००० ता० ३१ मार्च स-
न १८८७ अंग्रेजी. देश बिलातमे सर्व राजाके कर्ज देणारु० १११ अ-
बज देणा है.

हिंदुमें मुख्यचार वर्ण भेद है.

ब्राम्हण क्षत्री वैश्य शूद्र चार जात वर्ण है. जिसमे ब्राम्हण अ-
नेक जातोके पैत्रिक मौलसी पुरीहित है और क्षत्रीय शस्त्रधारी है.
और वैश्य व्यापारकती है और शूद्र कर्षकर्म स्वेतीकर्म करते है और
ब्राम्हणकर्म धर्म उपदेश शैव वैष्णव देवी उपासक है.

भरतखंड हिंदुस्थानमें मुख्यधर्म.

हिंदु वैष्णव शैव देवी जैनमत बौद्धमत और मुसलमान पारसी यहू
दीकृस्ती अन्यधर्म यूरोपखंड धर्म है.

देशभाषा मुख्य है.

संस्कृत हिंदी मरेठी तैलंगी कर्णाटकी मद्राची द्राचडी और गु-
जराती कच्छी सिंधी पंजाबी काबल खंदारी और बंगाली उडिसा मारवा-
डी सेरवाचटी हाडोती मेवाडी मालवी और पारसी अर्बस्तानी मुसलमा-
नी और अंग्रेजी फ्रेंच पोर्तुगीस चिनाई नेपाली.

ठगलुटेरीजाते.

राजपूतानेमें मीणा और मेर जिसे मेरवार कहते है अर्बली पर्वतके-
एक भागमें और शेखावती एक लुटेरी राजपुताकी जाती है. उत्तरी जय
पूरमे ठग विशेषकर मध्य भरतखंडमें हैं. और बागोलीया काठियावा-
डमें गुजरातमें भील है और दक्षिणमें पूनाके पास रामूसी कोकनमे वडा
रिया और काशीमें ठग और दिल्लीमें चातुरी बोलीके ठग हैं.

भरतखंड हिंदुस्थानमें मुख्यनगरहैं.

देशभाग.	मुख्यनगर.	स्थाननदी.
बंगाल बिहार और उड़ीसा.	कलकत्ता.	हुगलीपर.
अवध.	लखनऊ.	गोमतीपर.
पश्चिमोत्तर देश.	इलाहाबाद.	गंगापर.
पंजाब.	लाहोर.	रावीपर.
मंबोई हाता.	मंबोई.	पश्चिम किनारेपर.
वराड.	इलिचपूर.	पूर्णापर.
मध्य प्रदेश.	नागपूर.	नागनदीपर.
मद्रास हाता.	मद्रास.	पूर्वी किनारेपर.
काश्मीर.	श्रीनगर.	ज्जेलमपर.

स्वतंत्र राज्य हैं.

भूतान.	तासीसूदन.	गोददपर.
नेपाल.	काठमांडू.	बागमतीपर.

नदीयाः—अर्बसमुद्रमें गिरती हैं.

नामनदी	तटके नगर इत्यादि.
सिंधुवा अटक.	ठठ्ठा हैदराबाद बकर देरा इस्माल खां कालाबाग अटक इसक बौ.
काबूल.	जलालाबाद अफगानिस्थान.
लोगर.
कूनेर.
गोमल.	गोमल.
सुहान.	रावलपिंडी.
पंचनद वा अर्धात घारा और त्रिमावका संगम.
त्रिमाव.	यह संगम नीचे लिखी हुई तीन नदियों का हैं.

नामनदी	तटस्थनगर	नामनदी	तटस्थनगर
ज्जेलम. . . .	पिंडदादनरवा.	चनाब. . . .	कजीराबादअकूर
वहात. . . .	ज्जेलम-श्रीनगर.	रबी. . . .	लाहोर.
घारा. यह दोतल लिखित दोनदीयोका		सतलज. . . .	{ भौरोवाल नदाउनअ.
ब्याहवा ब्यासा. . .	भावलपूर फिरोजपूर		{ लीवालरूपूर विलासपूर

नदीया जो कछके खाडी में गिरती है.

लूनी. . . .	जोदपूर जिला.	बनास. . . .	डीसा.
-------------	--------------	-------------	-------

नदीया जो खंभातके खाडी में गिरती.

माबरमती. . . .	अहमदाबाद.	तापीवाताप्ती. . . .	सूरतबुर्हानपूर.
मही. . . .	खंभात.	गीर्ना. . . .	
नर्मदा. . .	मडोचओंकारेश्वरहुसंगाबाद	पूर्णा. . . .	
हंडिया मंडला.			

नदीया जो बंगालके आखातमे गिरती है.

महावलीगंगा.	त्रिकोमली किनारा	लंकाविगेपाककामुहाता.	जिला मदुरा.
कावेरी. त्रंक्युवार	त्रिचिनापल्ली तंजौर श्रीरं	भवानी. . . .	भवानीकदल.
दक्षिणीपन्नार.	फोर्तसेंतदेविद. गपटन.	पलार. . . .	अर्काट वल्लोर.
उत्तरीपन्नार. . .	नल्लोर.	कषणा	मच्छलीपट्टन.
गंतपूर्वा. . . .		मलपूर्वा. . . .	
तुंगभद्रा. . . .	कर्नूल.	हुगरी	जीला बल्लारी.
भीमा. . . .	पंडरपूर.	मुळामूत्ता. . . .	पूना.
मूसा	हैदराबाद.	गोदावरी. राजमंदी	चिन्नूर मांदेर ना-
पूर्णा. . . .		दूधना. औरंगाबाद.	सिक.
प्राणहितावासंगम.	सिरोंचा.	वर्धा. . . .	चांदा.
पैनगंगा	माहूर.	चैन्नगंगा. . . .	

नामनदी.	तटस्थनगर.	नामनदी.	तटस्थनगर.
इंद्रावती.	जमलपुरवाबस्तार.	मंजरी.	बिंदर.
मनेर.	...	महानदी.	कटकसंबलपुर
ब्राम्हणी.	रासपालमेरा.	वैतरणी.	उडीसामें.
सुवर्णरेखा.	पिपलीजालेश्वर.		
गंगाका डेल्या राजमहलके दक्षिण से प्रारंभ होता है. और भागिरथी प- द्यानदी मुख्य है. ये ब्रम्हपुत्रमें मिली हैं.			
हुगलीसंगमसे.	कलकत्ता हुगली चंद्र	भागीरथी	बर्हिमपूर नदिया
जालंधी.	कृष्णनगर. नगर	मतभंगा.	...
दामोदर.	वर्दमान.	रूपनारायणवादलकिशोर.	वांकुडा.
कसई.	मेदिनीपूर.	पद्मा वागंगा.	पबना फरीदपूर.
महानंदा	मालदा.	गंगा.	मुंगेर पटनागाजीपूर बना
कोसीवासंकुसी	जीला पूर्णिया.		रसइलावादकानपूरकनोज
गोगरी	जीला भागलपूर	बागमती	जीला काठमांडू
लघुगंडक	मुजफरपूर	गंडक	हाजीपूर.
	छपरफैजाबाद	रापती	गोरखपूर.
घाघरावाशारदावाशरघु	अवधवहवाईच	चौका.	...
गौमती.	लखनऊ जौनपूर	रामगंगा	मुरादाबाद.
कोसिलावाकोसी	रामपूर.	सोन	दक्षिणी बिहार.
कोईल.	जीला पालामौ.	कर्मनाशा	चौसा.
यमुनावाजोन.	कालपी आग्रा दिल्ली	केन.	बुंदेलखंड.
बेतवाया बेतमा.	भेलसा इरीज.	सिंधु.	नरवर.
चंबल.	कोटा धौलपूर.	क्षिप्रा.	देशभालवा उज्जैन
काली सिंधु.	...	पार्वती.	

नामनदी.	तटस्थनगर.	नामनदी.	तटस्थनगर.
बनास.	टोकरणथंभोर.	आरिद.	...
कालीनदी.	बुलंदशहरबाबुस	ब्रम्हपुत्र.	भलुआ नसीराबादगवाल
तिष्ठा.	सिकिमकुचबिहारजलपेगे	दिहंगयासांपु.	लासा. पाडा गोहाटीदुरंग.
कोपेली	उतरीकछार.	सुरमा	सिलहट.
ब्रम्हपुत्राका डेल्टा गंगाकी शारवा किर्तीनाशाके द्वारा गंगाके डेल्टामे जा मिला है.			
कुनै बाजबुना वादलासरी. मैमनसिंह		अत्री तिष्ठाकी शारवा.	दिनाजपूर राजशाही
मेगना.	भलुआ.	कीर्तिनाशा गंगाकी शारवा.	...
बूढी गंगा.	ढाका.		

नदीया जो पूर्वकी और बंगालके आरवातमें गिरते.

फणी.	बंगालाकी पुराणी सीमा है	कर्णफूली	चाटगांव.
कोलादेनवा अक्याब.	अक्याब	बसीन	बसीनरासनिधैस.
ऐरावती.	रंगून. रंगून नदीपर प्रोम	सितंग	तुंगू.
सलबेन	मर्तबान मौलमीनके निकट	धनासरी	तिनासिरीम. तिनासिरीम.

मुख्य २ नदीयोका लंबाई और उनका निकास.

नदी	निकास	लंबाई मील	नदी	निकास	लंबाई मील
सिंधु.	कैलासपर्वतके उतरसे	१८००	ब्रम्हपुत्र.	तिब्बतके पूर्वसे	१४०
गंगा.	हिमालयमे गंगोत्रीसे	१५२०	गोदावरी.	नासिकके निकट प. घाट	१००
ऐरावती.	हिमालयके पूर्वसे	१०५०	यमुना.	यमुनोत्रीसे	८६०
ऋष्णा.	प. घाट महाबलेश्वरसे	८००	चनाब.	लदरवके दक्षिणमे	७६५
घाघरा.	तिब्बतके नैऋत्यकोणसे	६००	सतलुज.	मानसरोवरसे	५५०
महानदी.	मध्यप्रदेशमे शहाबसे	५२०	नर्मदा.	अमरकंटककी उच्चभूमीसे	४७०
ज्जेलम.	काश्मीरसे	४१०	कावेरी.	कुर्गिसे	४७५

नदी	निकास	लंबाईमील	नदी	निकास	लंबाईमील
सोन.	अमरकंटककीउच्चभूमीसे	४७०	रावी	कुलूसे	४५०
माही	अमजुरामालवासे	३५०	व्यास	प्लाहौरसे	२९०

भरतखंडमें पर्वत और सरोवर.

उत्तरमें हिमालय पर्वत और संस्कृतमें हिमपालेको आलय गृहको कहते हैं पृथ्वीपर सबसे उंचा है. इनकी लंबाई प्रायः १५०० मील है. और चौड़ाई १५० मील है. और कश्मीर, नेपाल और भूटान हिमालयके पहाड़ी राज्य हैं. इन श्रेणीके दक्षिणकी ओर हिमरेखा अनुमान १६००० फूटकी उंचाई पर है. और उत्तरकी उंची १७५०० फूट हैं. इसके उत्तरकी उच्च सम भूमिके विस्तार और उंचाईके कारण यह घटबट होती है क्योंकि वांहा ऊष्णता अधिक रहा करती है.

हिमालयके अनेक भाग पृथक् २ नामसे प्रसिद्ध हैं. अर्थात् चनाब और सतलजके मध्यमें जंबूकांगडा और कलूर सतलज और गंगाके मध्यमें सिवालिक पहाड़ गढवाल और कमाऊ पर्वत. नेपालके पर्वत जिनके दक्षिणी ढालमें तराई नामक रोगजनक जंगल और उत्तरी बंगालकी सालोकी डांग है. सिक्किम और भूटानके पर्वत ऊंचे शिखर चमलारी २४००० फूट है. भूटानके उत्तरमें डोंकिया २३००० फूट. सिक्किमके उत्तरी भागमें और मौंट एवरिस्ट जो करनेल एवरिस्ट साहिबके नामसे प्रसिद्ध हैं. २९००० फूट. पूर्वी. नेपालमें भागलपूरके ठीक उत्तरको धौलागिरी २६८६० फूट है. बनारसके ठीक उत्तरको नेपालमें नंददेवी पर्वत २६००० फूट है. उत्तरी कमाऊ में किञ्चिज्जंगा उच्च २८१५६ फूट. सिक्किमके वायव्य और दार्जिलिंगके उत्तरमें यमनोत्री २५५०० फूट है. जहांसे यमुना निकली है. और कश्मीरमें नंदपर्वत २६६०० फूट है. और युरुपवालेके पुराने नकशोंमें हिमालय और हिंदुकुश पर्वतोंको बहोत्सालिखते हैं.

हिंदुकुश वायव्यमें और इसके दक्षिणमें सफेदकोह हैं. अटकके पूर्वसे आरंभ होता हैं. काबूलनदी इन दोनों श्रेणियोंके मध्यमें हैं. और उत्तरी मध्य भरतखंडमें अर्बलीश्रेणी राजपूतानामें आरंभ हो गुजरातके पूर्वसे अजमेर की ओर चली गई हैं. इसका शिखर अबू पहाड़ उच्च ५००० फूट हैं. और विंध्याश्रेणी नर्मदाके उत्तर उसीके किनारे चली गई हैं. अर्थात् गुजरात और मालवाके दक्षिणासेले सागर और जबलपूरके जिलाओतक फैली हैं. जिसकी उत्तरसे एक शाखा निकलकर जिसे कैमूरश्रेणी अथवा रिवाका पहाड़ कहते हैं. मिर्जापूरतक जो गंगाके किनारेपर हैं चली गई हैं. विंध्याश्रेणीसे यमुनाकी सहायक नदिया निकलती हैं जैसे चंबल क्षिप्र-सिंधु पार्वती बेतवा और केन मध्यप्रदेशकी पूर्वीसीमाके निकट विलासपूरके उत्तरमें अमरकंटककी उच्चसमभूमी हैं. इसकी उंचाई ३५०० फूट हैं. और सोन और नर्मदा यहीसे निकलती हैं. और अमरकंटकसे पश्चिमकोबराबर और खानदेशकी और दक्षिणी गुजरातमें राजपी पली तक ताप्ती और नर्मदाके मध्य सातपुडा अथवा महादेवश्रेणी फैली हैं. जिसमेसे वर्धा वैनगंगा और ताप्ती निकली हैं. इसका सबसे उंचा शिखर धूपगड जिला हुशंगाबादमें उंचा ४४५४ फूट हैं. इसी उच्चसमभूमी के आग्नेयमें संबलपूर नवागढकाली हंडी और जयपूरके पर्वतोंकी पृथक् २ श्रेणी जम्बलपूर अथवा बस्तारके पहाड़ी देशके आसपास हैं. और जयपूरकी पर्वतश्रेणीको पूर्वी घाटभी कहते हैं यह गोदावरीतक और फिर उसीके किनारे २ उपर प्राणहितातक चली गई हैं और हजारीबाग अथवा छुदियानागपूरका पर्वत कैमूरश्रेणी सोननदीके चहूतरफ फैला हैं. और पारसनाथ इसका सबसे उंचा शिखर ४७५० फूट उंचा हैं. यहां जैन लोगोका प्रसिद्ध पूज्यस्थान हैं. और तलज्जूरके पर्वत और छुदिया नागपूरका पर्वत दक्षिण और महानदीकी श्रेणी उडिसामें चली गई-

हैं. और दक्षिणी भरतरबंदमें पश्चिमी घाट अथवा सह्याद्री पहाड अरबसमुद्रके किनारे २ आठसो मील तक चला गया है. उत्तरको इसका सबसे उंचा शिखर महाबलेश्वर ४४०० फूट है. यह श्रेणी मैसूरकी सीमाकी किनारे २६०० फूट तक उंची हो गई है और मिलगिरी पर्वतसे जा मिली है. इसका शिखर दूधभात ८०६० फूट है. और सुखेन श्रेणी पश्चिमी घाटके अंतमें लगातार २०० मील कन्याकुमारी तक चली गई है. शिवारय पहाड जिसकी सबसे उंची चोटी सुतनद ५२६० फूट है. और रासजगत पश्चिमी गुजरातमें कच्छकी खाडीके सिरेपर है. और हिमालय पर्वतमें मानस सरोवर पवित्र ज्वाल १५२०० फूट उंचा है. जहांसे सतलज नदी निकली है. और कमांडके उत्तरमें राक्षसताल अथवा रावण हृद जिसमें होकर सतलज नदी बही है. और पोखरण जैसलमेर लवण ज्वाल है. राजपुतानामें सांभर ज्वाल और सिंधमें मंचूर ज्वाल और गुजरात जालावाडमें लवण ज्वाल है. धांग धाराज्यमें और दक्षिणदेशमें लुनार ज्वाल यह लवण बुलदानाके निकट पहाडमें है इसमें खार बहोत है. और पल्ली घाट लवण ज्वाल मद्रासके उत्तरमें समुद्रके तटपर है. कुलेर ज्वाल मच्छली पट्टनके उत्तरमें चिल्का ज्वाल और उडिसाके दक्षिण कालवणसर समुद्रके किनारे पर है और भी बहुतसे ज्वाल हैं जिनका जल बहु धारवारा है.

श्रीहरीजी

श्रीगणेशायनमः॥ स्थिररूपजेश्रीहरिजी श्रीलक्ष्मीजी पादसेवा-
प्रसन्नबदनशांतरूपीश्यामवर्णकमललोचन धनःश्याम सुंदरशेषावता
रतेजस्वी समदृष्टीजेश्रीविष्णुनाभिकमलोद्भवमध्ये श्रीब्रम्हासृष्टीकर्ता
जन्मजगत्पिता चतुरवेदकर्ता सत्यलोकमान श्रीब्रम्हाजीके —

आयुष्यवर्षसंख्या १०० सतं और श्रीब्रम्हाजीके दिन १ में मनु १४ राज्यकर्ता है. इसिका वर्षसंख्या ४३०००००००००००० है. और वर्तमान-दिन १ इसिका भुक्तघटिका १३ पलानि ४२ हैं और मनु १ इसिका आयुष्य राज्य चौकड़ी ७२ राज्यकर्ता है इसीका वर्षसंख्या कृतयुगवर्ष १०२८०००० हैं. द्वापारवर्ष १२९६०००० हैं. त्रेतायुगवर्ष ८६४०००० हैं कलियुगवर्ष ४३२०००० हैं. और श्रीब्रम्हाजीके दिन १ में मनु भुक्तगये है इसिकानाम स्वायंभु १ स्वारोचिष २ उतम ३ तामस ४ रैवत ५ चाक्षुष और वर्तमान मनु चैवस्वत ७ अष्टाविंशति चलता हैं और भरतखंड हिन्दुस्थानमें श्रीहरीजी २४ अवतारजन्म अथवा सूर्यचंद्रवंशी और क्षत्री राजपूत महाराजा और शककर्ता महाराजा इसीका जन्म राज्य प्रमाण वर्षसंख्या इसीके पश्चात् वादशाही राज्य और पोर्तुगीस राज्य और इंग्लिश राज्य और फ्रेंच राज्य वर्णन लिख्या है.

श्रीहरिजी अवतार संख्या.

- १ मत्स्य. शंरवासुर मारणेको.
- २ कूर्म. मंदराचल धारणेको.
- ३ वृसंह. हिरण्याक्ष मारणेको.
- ४ नृसिंह. हिरण्यकशिप मारणेको.
- ५ वामन. राजाबलीको पातालमे प्रवेशकर्णेको.
- ६ परशुराम. क्षत्रियाका कुलक्षयको.
- ७ श्रीराम. रावणकुंभकर्ण मारणेको.
- ८ श्रीकृष्ण. कंस शिशुपाल धकदंत मारणेको.
- ९ बौद्ध. मौनरूप धारणेको.
- १० कल्की पुनः धर्मसंस्थापनेको.

पुनः श्रीहरीजीद्वितीयावतार.

- १ सनकादिचारभ्राता. ब्रम्हचर्यलेकरचनमें तपस्या करनेको.
 २ यक्ष. योगाध्याय करनेको.
 ३ नारद. ब्रम्हउपदेश देनेको.
 ४ दत्तात्रेय. गुरुमार्ग देनेको.
 ५ कपिलमुनी. माताकासांख्ययोगहरनेको.
 ६ नरनारायण. तपस्याका मार्गस्थापन करनेको.
 ७ हरिः. नक्रगजेंद्र मोक्ष देनेको.
 ८ पृथु. पृथ्वीका भारउतार पदार्थ प्रगट करनेको.
 ९ ऋषभदेव. परमहंसमार्ग स्थापनेको.
 १० हयग्रीव. हयसुरवराक्षस मारनेको.
 ११ हंस. ब्रम्हाजीको उपदेश करनेको.
 १२ धन्वंतरी. औषधी सुंदर करनेको.
 १३ मोहनी. मोहनरूप धारनेको.
 १४ व्यास. वेदस्तुती और पौराण प्रगट करनेको.

श्रीहरीजीका जन्मकालवर्षसंख्या.

युग नाम.	अवतार नाम.	पिता	माता	गुरु	जन्म स्थान	संवत्सर.	मास	पक्ष	तिथि	वार	नक्षत्र	योग	जन्म घटी.	अवतारवर्ष.
१	मत्स्य	सत्य व्रत	उंस्ता वति	उमा धारा	मच्छ लीप टन.	वि- भव.	चैत्र.	शुद्ध	३	चंद्र	रेवति	वि- ष्कं- म.	१५ दिवा.	६०००००
२	कश्यप	वराह रूप.	वीर हन्ते	वीर लो- चन.	कि- ष्किं धा.	प्र- भव.	वैशाख	शुद्ध	१५	बुध	रोहि- णी.	सा- ध्य.	किता ३०	६४०००००

युग नाम	अव- तार	पिता	माता	गुरु	जन्म स्थान	संव- त्सर	मास	पक्ष	तिथी	वार	नक्ष- त्र	योग	जन्म घटी	अवतारवर्ष
३	वराह	वराह रूप	पद्मा	देव ण	को- ल्हण	शुक्र	भाद्र पद	शुद्ध	३	रवि	अश्वि नी	साध्य	किता १५	४०००००
४	मत्स्य	संभ	मंदिर	हंस राज	वृषि हपूर	अंगि रा	वैशा ख	शुद्ध	१४	शनी	स्वाती	शुभ	किता ३०	३२८००० १७२८०००
५	वामन	कश्य- प	अदि- ती	अग- स्ती	विज- यपूर	धाता	भाद्र पद	शुक्र	१२	भौम	श्रवण	धृति	किता १५	५०००००
६	परशुराम	जम- दग्नी	रेणु का	शिव	माता पूर	प्रमा- थी	वैशा ख	शुक्र	३	शनी	रोहि- णी	शुक्र	किता १५	७८४९५९ चिरंजीव
७	श्रीराम	दश- रथ	कौस- ल्या	वसि- ष्ठ	अयो- ध्या	तार- ण	चैत्र	शुक्र	९	रवी	पुनर्व- सु	किता	किता १५	११०४१
८	श्रीकृष्ण	वसु- देव	देवकी	संदी- पनी	मथु- रा	विरो- धी	भाद्र पद	कृष्ण	८	बुध	रोहि- णी	वज्र	रात्रौ १५	८६३९००
९	बौद्ध	वत्स	सावि- त्री	गौत- म	गया	स्व	आ- श्विन	शुक्र	१०	रवि	विशा- खा	शुक्र	दिवा ३०	४३११५४
१०	कल्की	कल्की	विष्णु	ब्रम्हा- णी	ब्र- म्हा	कर- वीर	दुर्ग- स्व	शुक्र	६	शनि	पूर्वा- षाढा	सिद्धि	किता ३०	४३२०००

सूर्यवंशी और चंद्रवंशी

मनु७ वैवस्वत मनुराज्यवर्तमानपीछेसे सूर्य और चंद्रवंशी महारा जाहो गये हैं. इसीका वंशसंख्या जेश्री मद्भागवतकानवमस्कंधमें सूर्य चंद्रवंशी राजा किया हैं. जे वंशसंख्या.

भूगोलज्ञानप्रकाशः.

सूर्यवंशी राजावली

१ इक्ष्वाकु प्रथमः	२२ असदस्यु	४३ भगीरथ
२ विकुक्षी	२३ अनरण्य	४४ श्रुत
३ पुरंजय	२४ वृषदम्ब	४५ नाम
४ काकुस्थ	२५ हर्यम्ब	४६ अंबरीष
५ अजेनास	२६ वसुमन .	४७ सिंधुद्वीप
६ पृथु	२७ विधन्वा	४८ अयुताश्व
७ विश्वागम्ब	२८ भरुण	४९ ऋतुपर्ण
८ आर्द्रा	२९ त्रिशंकु	५० सर्वकाम
९ भद्रार्द्र	३० हरिश्चंद्र	५१ सुदास
१० युवनाश्व	३१ रोहिताश्व	५२ मित्रसह
११ शाबस्त	३२ हरित	५३ अश्वक
१२ बृहदम्ब	३३ चंप	५४ नारीकवच.
१३ कुचलयाश्व	३४ सुदेव	५५ दशरथ १
१४ दृढाश्व	३५ विजय	५६ ऐडविड
१५ हर्यम्ब	३६ भरुक	५७ विश्वसह
१६ निकुंभ	३७ वृक	५८ खट्वांग
१७ सांकेताश्व	३८ बाहुक	५९ दीर्घबाहू
१८ प्रसेनजित	३९ सगर	६० रघू
१९ युवनाश्व २	४० असमंजस	६१ अजपाल
२० मांधाता	४१ अंशुमान्	६२ श्रीदशरथ
२१ पुरुकुस्त	४२ दिलीप.	६३ श्रीरामचंद्र

श्रीरामजन्मपत्रिका.

॥ श्रीगणेशायनमः ॥ स्वस्ति श्रीजपोमंगलमभ्युदयश्वास्तु सजय

ति॥ आदित्याद्याग्रहाः सर्वे सनक्षत्रासराशयसर्वे कल्याणामिच्छन्तु य-
स्यैषा जन्मपत्रिका अष्टाविंशंति महायुगातर्गतत्रेतायुगस्य गतवर्षा-
णि १२८४९५९ शेषत्रेतायुगवर्षाणि १११०४१ तारणनाम सर्वत्सरे-
श्रीसूर्यउत्तरायणगते वसंत ऋतौ शुभे चैत्रशुक्लपक्षे तिथौ ९ नवम्यां
रविवासरे घटिकाः ५३ पलानि १० पुनर्वसुनक्षत्रे घटिकाः ९ पलानि
८ शक्रयोगे घटिकाः २४ पलानि तात्कालिके बालवकरणे श्रीसूर्यो-
दयादिष्टघटिका १५ पलानि ३२ मध्याह्ने कर्कलक्ष्मे मेषसंक्रातिगतां-
शा १ शेष २९ श्रीजंबुद्वीपे भरतरवंडे कौसल्यदेशे शरयूतीरे श्रीमदयो-
ध्यानगरे मुकुटमणिछत्रपतिराजराजेंद्रमहाराजाधिराजेश्वरपुरुष
६२ वंश श्रीरघुकुलभूषणपुरुष श्रीअजपालराजात्मजमहाराज
श्री १०९ श्रीदशरथराजविजयमहाराजगृहे ज्येष्ठपत्नि सौभाग्या-
द्याखिलगुणसंपन्ना कौसल्यदेवी तस्याकुक्षे प्रथमपुत्रजन्म अमू-
ततस्याराशी भवं नाम हरिहरिचंद्रहरिहर इति जन्मनाम प्रतिष्ठि-
तं परंतु मातापित्रो यथारुची मेषयोनिदेवगणो विप्रवर्णे मांजारवर्गे-
मध्यनाडी स्थिते फणिचक्रे लाभंशं भं.

श्रीरामचंद्रजन्मचक्रं

अथरव्यादयोग्रहाः स्पष्टाः सगतिकाः

५	३ के०	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.	लग्न.
६	गु० चं०	०	३	९	११	३	११	६	०	६	३
२	१ सू०	१	१२	१	२२	२	१४	१	२	२	५
७ श०	१ सू०	५९	४२	३५	३४	२३	२९	३०	१६	१६	२२
८	१० मं०	१९	२३	५९	३०	४२	५४	४२	४३	४३	३२
९ रा०	११	५८	७९०	१२	१११	१२	७४	४	३	३	३
		२५	५३	४३	५६	२५	८	३९	११	११	३०

श्रीरामचंद्रजन्मकालग्रहाः संपत्तिः तस्य श्लोकः

श्रीरामे चैत्रमासे दिनदलसहिते पुष्पभेक कर्कलक्ष्मे ॥ जीवेन्दुकीटराशौ-
भकरगतकुंजे श्वेज्जषे मेषगेर्के ॥ कोदंडे राहु मंदौ तुलगतज्जषे भा-

गवियेनवम्यांपंचोच्चस्थेनिजर्क्षेदशरथतनयोरामचंद्रोबभूव॥१॥
वंशोविस्तरमायातुकिर्तियातुदिगंतरम्॥आयुर्विलयतांयातुनि-
त्यमुत्साहिमंगलम्॥२॥ और श्रीरामचंद्रजीको जन्मवर्षसंख्या -
८८००३५ परंतु श्रीरामनवमीको जन्मपोत्सववर्षवर्षमें होता है और-
श्रीरामचंद्रजीका जन्म लेने का कारण पृथ्वीका भार उतारनेको और-
दुष्टरावण और कुंभकर्णको मारनेको और विभीषणको श्रीलंकाका-
राज्य देनेको और धर्मसर्पादास्थापनेको और जलसमुद्रमें पाषाणकी
पाजवाध कर राक्षसको मारनेको और इसीरघुकुलमें मुरयादा पुरु-
षोत्तम जन्म लिया था और श्रीरामचंद्रजीका भक्त श्री वाल्मिक ऋषी
ने शतकोटि प्रकार की रामायण कीया है.

श्रीरामचंद्रजीके सीताज्येष्ठपुत्र कुशलवकी वंशसंख्या.

कुशवंशावलीसंख्या.

१ अतिथी.	११ दलकिंवाल	२१ ध्रुवसंधि
२ नैषध.	१२ छाल	२२ सुदर्शन
३ नल	१३ उक्थ	२३ अपवर्मा
४ नभ	१४ कज्जनाभ	२४ शीघ्र
५ पुंडरीक	१५ अर्क	२५ मंरु
६ क्षेमधन्वा	१६ शंखनाभ	२६ प्रसुश्रुत
७ देवानीक	१७ विधृति	२७ सुसंधि
८ अहिनायु	१८ विश्वसह	२८ अमर्श
९ कुरु	१९ हिरण्यनाभ	२९ महस्व
१० पारिपुत्र	२० पुष्य	३० विश्वबाहु

३१ प्रसेनजित्

३२ बृहदबल.

करीयुगप्रवेशहुवा पीछे से राजहुये जिसका वंशावलीसंख्या.

कलियुगकाराजाकाराजावली.

३३ बृहत्सेन	४० सहदेव	४७ सुनक्षत्र
३४ उरुक्रिय	४१ वीर	४८ किशिनर
३५ वत्स	४२ बृहदश्व	४९ अंतरिक्ष
३६ वत्सवृद्ध	४३ भानुरत्न	५० सुवर्ण
३७ प्रतिव्योम	४४ प्रतीकाश्व	५१ अमित्रजित्
३८ भानु	४५ सुप्रतीक	५२ बृहद्राज
३९ दिवाक	४६ मरुदेव.	५३ धर्म
	५४ कृतंजय.	

और अयोध्यापुरी कौशल्यदेश छोड़कर कृतंजयराजा सोरठदेश में गीया हैं.

५५ रणंजय	५८ शतद्वोद	६१ क्षुद्रक
५६ संजय	५९ लांगल	६२ कंडक
५७ शाक्य	६० प्रसेनजित्	६३ सुरथ
	६४ सुमित्र.	

सुमित्रराजा के समय कलियुगका वर्ष १००० गत हुवा था और द्वापारका वर्ष ८६२९०० भुक्त गये पीछे से श्रीकृष्णचंद जी का ८ अवतार हुवा और द्वापारका वर्ष १०० शेष रह्यथा.

चंद्रवंशी राजावली संख्या.

१ यदु मुरवी हैं.	६ चित्ररथ	११ सितीश
२ क्रोष्टा	७ शरविंद	१२ रुचक
३ वृजिन्वन्	८ पृथुश्रवा	१३ कराल
४ श्वाहि	९ तामस	१४ परावृत्त
५ रुद्रोक्तु	१० उशनस	१५ जटयनाग.

१६ विदर्भ	२७ दशरथ	३८ अंधक
१७ ऋथ	२८ शकुनि	३९ भजमान
१८ कुंति	२९ देवरात	४० विदूरथ
१९ घृष्टी	३० देवक्षत्र	४१ शूर
२० निवृत्ति	३१ मधु	४२ समान
२१ दाशार्ह	३२ अनावृत्त	४३ प्रतिक्षिन्न
२२ विजयमन	३३ कुरुवत्स	४४ स्वयंभोज
२३ जीमूत	३४ अनुरथ	४५ हृदिक
२४ विकति	३५ पुरुहोत्र	४६ देवमीठ
२५ भीमरथ	३६ आयु	४७ शूरसंन
२६ नवरथ	३७ सात्वत	४८ वसुदेव

४९ श्रीकृष्णचंद्रजी

श्रीकृष्णजन्मपत्रिका.

श्रीगणेशायनमः॥स्वस्तिश्रीजयोर्मंगलमभ्युदयश्चास्तु॥सजय-
तिसिंदुरवदनौदेवोयत्पादपंकजस्मरणं वासरमणिरिवतमसारा
शिनाशयतिविघ्नानाम्॥१॥आदित्यादिग्रहाःसर्वसनक्षत्रास-
राशयःसर्वकल्याणमिच्छंतुयस्येषाजन्मपत्रिका॥स्वस्तिश्रीम-
त्भगवतोमहापुरुषस्यविष्णोराज्ञयाप्रवर्तमानस्यअघास्मिन्नब्र-
ह्मांडेभूलेकेब्रम्हणद्वातीयपरार्धेविष्णुपदेश्रीश्वेतवराहकल्पेवैव-
स्वतमन्वंतरेअष्टाविंशतिमहायुगांतगतिद्वापारयुगस्यगतवर्षाणि-
८६३९०० औरशेषद्वापारयुगवर्षाणि१०० प्रवर्तमानेविरोधीनामसं-
वत्सरेसूर्यदक्षिणायनगतेवर्षाक्रतौमासोत्तममासेशुभकारीमा-
सेशुभेभाद्रपदकृष्णपक्षेतिथौ८ बुधवासरेघटिका५० पलानि४४
रोहिणीनक्षत्रघटिका५२ पलानि५१ वज्रयोगेघटिका५३ पलानि-

२० बवकर्णे घटिका २७ एवपंचांगशब्दं अत्रदिने श्रीसूर्योदयादिष्ट
घटिका ४५ पलानि ५ अष्टवर्गशब्दाः सर्पयोनी मनुष्यगणे वैश्यवर्णे
मृगवर्गे अंत्यनाडी फणीचक्रे अस्यांशु मग्नहावलोकिन्यां पुष्योदय
बेलायास्वस्ति श्रीजंबुद्वीपे भरतरखंडे मैधुवदेशे यमुनातीरे श्रीम-
न्मथुरापुरनगरे महाराजाधिराज श्रीउग्रसेनराजस्य जामाता श्री
चंद्रवंशोत्पन्नपुरुष ४८ श्रीयदुकुलभूषणीभूत श्रीशूरसेनराजा-
त्मज श्रीविसुदेवराज विराजमानस्य गृहे सौभाग्याद्यखिलगुण-
णसंपन्नो देवकीतस्याः कुक्षौ कारागृहे अष्टमपुत्रस्य जन्म अभूत्.
तस्य राशिभवं नाम विष्णुः वासुदेवः वनमालिः इति जन्मनाम प्रति-
ष्ठितं परंतु मातापित्रोर्गुरोरिच्छया यथारुचि करग्रभं भवतु लाभं शुभं

श्रीकृष्णजन्मांगच.

अथरव्यादयो यहाः स्पष्टाः

३	१ के.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.	रुम
४	२ चं.	४	१	९	५	११	६	१०	६	०	१
		१६	११	११	९	२२	१९	२८	१५	१५	११
५ सू.	११ श.	३९	४६	५	१४	४०	१८	०	२१	२१	४६
		२४	०	२०	५५	३५	१८	२३	८	८	०
६ बु.	८	५७	८५८	३१	८१	२२	३७	२	३	३	५
७ रा. शु.	९	५८	२५	०	३२	१२	०	५६	११	११	०

श्रीकृष्णजन्मकालगृहसंपत्तेः श्लोकः.

श्रीमत् भाद्रमासिके ऽसितदले ऽष्टम्यातिथौ चंद्रजौ रोहिण्यानिशिम-
ध्यभागसमये योगाधिपे वज्रगे ॥ शुक्रस्य स्थिरलभके सुखगते सूर्य-
विधौ लग्नगे धर्मस्थानगते तु मंगलस्वगे ज्ञे ऽपत्यभावाश्रिते ॥ १ ॥ जीवे
लाभगते सितेरिपुगते व्योम्नि स्थिते ब्रध्नजे ॥ षष्ठस्थानगते तमे व्ययग-
ते केतौ पुरीमाथुरे ॥ श्रीरव्यातानकदुंदुभे च भवने श्रीकृष्णनाथो
जनि-॥ श्रीभाराहरणाय सौख्यजनकः पायादपायाभुवि ॥ २ ॥ -

औरयदुवंशीकुलमें श्रीवसुदेवजीऔरमातादेवकीकागर्भमें श्रीकृष्णाजीसोलाकलाजन्मलियाऔर श्रीनंदजीऔरमातायशोदाजीकेगृहबाललीलाऔरशत्रुवाकेनाशकियाऔरमामाकंसकोहत्याऔर श्रीकृष्णाचंद्रजीके वीवाहोत्सवलभकियाजेराण्यासंख्या१६१०८ स्त्रियाहोतीऔर श्रीकृष्णाचंद्रजीकेपुत्रसंपत्तिसंख्याएकराणिकेदशपुत्र १०औरएककन्याइसकासंख्यापुत्रसंख्या१६१०८०और कन्यासंख्या१६१०८होतीऔरबाललीलाकियाहै गोवर्द्धनधारण औरगोपीकाकाकात्यायनव्रतसंपूर्णकियाऔर श्रीकृष्णाचंद्रजीनेमितीआश्विनशक्लपक्षेतिथौ१५कीरानीषद्मासकियाऔरकुंजबनमेंगोपिकासहरासक्रीडाकियाथाऔरकालीमर्दनऔरअग्निभक्षणकियाथाऔरपांडवाकीधर्मरक्षाऔरद्रौपदीकीलज्जाकीरक्षाकियाथाऔरपश्चात् श्रीकृष्णाचंद्रजीपश्चिमदेशमें श्रीदुवारकादेशमेस्थापनाहुईथीऔरराज्यवर्ष१२५कियाथाऔरनिजधामपदारहेहैऔर श्रीदुवारकासमुद्रमें प्रवेशभईहै औरयादवाकेपरस्पर-क्लेशहोकरकुलक्षयहुवाथा.

श्रीकृष्णाचंद्रजीनेगोकुलमथुरावृंदावनमेंशत्रुवाकानाशकियाहै

१ अघासुर	८ जलासुर	१५ वत्सासुर
२ असुरासुर	९ तृणावर्त	१६ विटपासुर
३ कपिवृंदारसुर	१० धेनुकासुर	१७ वृषभासुर
४ कागासुर	११ प्रलंबासुर	१८ व्योमासुर
५ केशिकासुर	१२ बकासुर	१९ शकटासुर
६ रवगासुर	१३ शीठासुर	२० शंखासुर
७ चूडामणी	१४ यादवांतक	२१ सुदर्शनासुर

२२ पूतनाराक्षसी

२३ कंसमामा.

और कलीयुगमे बौद्धावतार मिती भाद्रपद कृष्ण पक्षे तिथौ १३ शक्र
वार प्रवेश इस समये श्रीकृष्णचंद्रजी मौन्यरूप प्रगटे श्रीजगदीश्वर औ
र देशदक्षिणमें दंडकावन भीमानदीके तट पर श्रीविठलनाथजी इनको
विमौन्यरूप कहते हैं और कलीयुगमें भक्ती कियासे मोक्ष होता है.

पांडवाका कुलवर्णन.

धर्मराजा हस्तनापुरमें राज्य वर्ष ५४ किया है और अर्जुनका पुत्र.
अभिमन्युका पुत्र परिक्षित राजा इसीको राज्य देकर और पांडव द्रौप-
दी सहित हिमालयमें गया था पश्चात् राजा परिक्षितने राज्य वर्ष २४ रा-
ज्य किया पीछे से ब्रह्मस्त्रापकरेन सर्पडंस मृत्यु हुवा परंतु श्रीसुखदेव
जी की कृपा थी श्रीमत् भागवत श्रवण करनेसे सद्गति मोक्ष हुई है. प-
श्चात् राजा परिक्षितका पुत्र जन्मे जयराज्य किया था.

युधिष्ठिर विक्रमशालीवाहनौ ततो नृपस्य द्विजयाभिनंदनः ॥ त-
तस्तु नागार्जुनभूपतिः कलौ कल्की षडैते शक्रकारका स्मृताः ॥ १॥
१ युधिष्ठिर (धर्मराज) २ विक्रम ३ शालिवाहन ४ विजयाभिनंदन
५ नागार्जुन ६ कल्की. षट् राजा शक्रकर्ता हुये हैं.

शक्रकर्ताराजा षट्. वर्ष संख्या.

- १ प्रथमतः युधिष्ठिरराजा इंद्रप्रस्थी गत वर्ष ३०४४
२ द्वितीय विक्रमादित्यराजा उज्जैन गत वर्ष १३५
३ तृतीय शालीवाहनराजा पैठण गत वर्ष १८०७
४ चतुर्थ विजयाभिनंदन वैतर्णी सिंधुनदीके समीप वसाईज
न्मेगे वर्ष १००००

५ पंचम नागार्जुन उत्तरगौडदेशी धारा तीर्थमें जन्मेगे वर्ष-

४०००००

६ षष्ठा कल्कि कर्णाटकदेशी करवीर पतनी कोल्हापूर जन्मेगे

वर्ष ८२१

पांडवकौरवाकासंवाद राजादुर्योधनअर्धराज्यदेणेको नही कियाजदी पांडवराजायु धिष्ठिरनेयुद्धकरनेको आरंभ कियाजदीसै न्या २१८७०० अक्षौणी संख्या जुमले अदारा अक्षौणी ३९३६६०० फौज युद्धमे होती.

पांडववंशावलीसंख्या.

१ युधिष्ठिर	१० युक्त	२१ नृपंजय
२ परिक्षित.	११ चित्ररथ	२२ ऊर्व
३ जन्मेजय	१२ कविरथ	२३ निमि १
४ शतानीक	१३ वृष्णिमान्	२४ ब्रह्मद्रथ
५ सहस्रानीक	१४ सुषेण	२५ सुदास
६ अश्वमेधज	१५ महीपति	२६ शतानीक
७ असीमकृष्ण	१६ सुनीथ	२७ दुर्दमन
८ निमिकेराज्यमेगंगा-	१७ सुखीनल	२८ वहीनर
मेहस्तनापूरवहगयाहै	१८ पारिप्लव	२९ दंडपाणि
९ चक्रनेको सुभीनवी	१९ सुनय	३० निमि २
पुरीवसाईहै:	२० मेधावी	३१ क्षेमक.

राजा ३१ वर्ष १८१२ राज्य कियाहै.

मगधदेशाधिपति जरासंध इसीका बंश राजगिरि मे जाकर राज्य किया इसिका बंश संख्या.

मगधदेशका सहदेव राजा की वंशावली.

१ सोमापी	४ निरामित्र	७ सेनजित्
२ श्रुतमान्	५ सुक्षेत्र	८ श्रुतंजय
३ अयुत	६ बृहत्कर्ण.	९ विप्र

१० सूची	१३ धर्म	१६ सुमंत
११ क्षेम्य	१४ सुशर्मा	१७ सुबल
१२ सुव्रत	१५ घर्षण	१८ शतजित्

१९ विश्वजित्

२० रिपुंजय.

राजा २० वर्ष ३३८ राज्य किया है.

रिपुंजयका प्रधान शुनक होता इसीने राजाको मारकर अपने पुत्रको राज्य दिया है.

शुनकवंशराजावंशावली संख्या.

१ प्रद्योत	२ विशारदधूप	५ नंदीवर्धन.
२ पालक	३ जनक	

राजा ५ वर्ष १३८ राज्य किया है. जुमले २२३८

शिशुनागराजावंशसंख्या.

१ शिशुनाग	४ क्षेत्रज	७ दर्भक
२ काकवर्मा	५ विधिस्वार	८ अजय
३ क्षेमधर्म	६ अजातशत्रु	९ नंदिवर्धन

१० महानंदी. राजा १० वर्ष ३६२ राज्य किया है.

नंदवंशकाराजावली संख्या.

१ महानंद ८ और आठ राजा हुवा इसका वर्ष १०० राज्य किया.

मौर्यवंशकाराजावली संख्या.

१ चंद्रगुप्त	४ सुयश	७ शालिश्शुक
२ बिंदुसर	५ दशरथ	८ सोमशर्मा
३ अशोकवर्धन	६ संगत.	९ शतधन्वा

१० बृहद्रथ.

राजा १० वर्ष १३७ राज्य किया है जुमले २८८७.

शुंगवंशकाराजावलीसंख्या.

१ पुष्पमित्र	४ वसुमित्र	७ घोष
२ अग्निमित्र	५ भद्रक	८ वज्रमित्र
३ सुज्येष्ठ	६ पुलंदक	९ भागवत
१० देवभूती. राजा १० वर्ष ११२ राज्यक्रियाहै.		

कण्ववंशराजावलीसंख्या.

१ वासुदेव	२ भूमित्र	३ नारायण
४ सुशर्मा. राजा ४ वर्ष ४५ राज्यक्रियाहै जुमलेवर्ष ३०४४		

विक्रमादित्यराजा

गतकलिचर्ष ०१०९ सूर्यवंशी गंधर्वसेन राजा देशमालवा ग्राम-
धारानगरीमें राज्यकर्ता था इसीके ४ स्त्रिया होती. जिसिके पुत्र ६ ज-
न्म्या. प्रथमपुत्र भर्तृराजा उज्जैनमें राज्यकर्ता था और किसी समयसे स्व-
स्त्री इसकोनेष्ट चाल चलनेको दृष्टीसे देखी जदी राजा भरतरी राज्यत्या-
गिकै तपस्या करनेको गीया था जदी राजा विक्रमादित्य ने खबर मिली -
इसी समय उज्जैनमें आकर राज्याभिषेक करेन राज्यकरणेको लगा था
और पहिले राजायु धिष्ठिरका शक चलता था और पीछेसे राजा विक्र-
मसंवत् चालु किया इसीका संवत् नाम ब्रम्हपक्षे पंचांग जो सीचंहुवा-
णीयाकावर्ता प्रमाण जिसीके पर विक्रमसंवत् लिखवाजाता है. और न-
र्मदाके उत्तर दिशा देशमालवा मेवाड़ और मारवाड़ और सिंधमें और पू-
र्वमें प्रसिद्ध है. और राजा विक्रमादित्य की राजसभामें पंडित कालि-
दासजी महाविद्वान् रहता था और बहोत्सा ज्योतिषकाग्रंथ नवीन
बनाया है और सूर्यवंशमें राजा विक्रमादित्य धर्मिष्ठ दयालु महाप्रता-
पी ऐश्वर्यसंपत्ति सैन्यजे फौज परदुःस्वभंजन महादातार होता इसी
का जन्ममिती चैत्रकृष्णपक्षे तिथौ २ जन्महैं और विक्रमादित्यरा-

जाके पुत्र जैत्रपाल नामये उज्जैनी छोडकर अवंती नगरीमें जायकर राज्य किया था. अथ विक्रमादित्य राजा.

५	३ के	२ वं. शं. सु.
६	४ गु.	१ सू.
७ श.	१० मं.	१२
८	९ रा.	११

तृतीयशककर्तार राजा शालीवाहन.

देश दक्षिणमें गोदावरी तटपर एक ग्राम पैठण नाम इसीमें सोमकांत नाम राजा राज्य करता था यह एक सुलोचन नाम ब्राम्हण रहता था इसीके कन्या एक सुमित्रा नाम जिसिके बहु धान्य नाम संवत्सरीमें कुंभार शालामध्ये पुत्र जन्म इसीका नाम शालीवाहन रखा था. और वर्ष ८ में ब्राम्हण कर्म और यज्ञोपवीत दीया था और बडा होनेसे राज्य कर्म तेजस्व च धने लगा था और एक धनंजय नाम साहुकार होता जिसका पुत्र इसीका न्याय इंसाफ कर्तार राजा विक्रमादित्य को और शालीवाहन राजा को बुलाया था परंतु राजा विक्रमादित्य नही आनेसे राजा शालीवाहन को क्रोध उत्पन्न हुवा था और अपनी फौज सैना को लेकर राजा विक्रमादित्य की सात युद्ध किया और नर्मदाके दक्षिण दिशा में शक शालीवाहन नाम प्रसिद्ध किया था.

भोजराजा.

संवत् १०३९ में देश मालवा ग्राम धारानगरीमें यदुवंशी कुलमें भोजराजा कीर्तीमान होता. इसीकी राजसभामें नवमहापंडित नव रत्न जसा होता और एक पंडित कालीदास जी महाकवी राजसभाचा तुर्य होता और महा भोजराजा विद्वान् गुणज्ञ महादातार कीर्तीमान प्रजापालक धर्मिष्ठ शीलवंत राज्य नीतीमान कर्ता था और राजा-

भोजकीसभामें देशी परदेशी विद्वानगुणज्ञ पंडितशास्त्री जे राज-
सभामे जे कोई नवीन श्लोक बना कर जे पंडितशास्त्री सुनाता थाइ-
सीको १२५००० सवाल हरु पर ये देता था और ब्राह्मणको मान प्रति-
ष्ठा दातारी दान देता था.

गोपीचंद्र राजा.

शके १०६१ में देश उत्तर बंगाला का राजा सूर्यवंशी त्रैलोक्यचं-
द और माना मैनावती राणी का पुत्र राजा गोपीचंद्र राज्य करता था औ-
र एक समय श्रीगुरु गोरखनाथजी का आगम हुवा और धर्म उपदेश-
दीया जदी राजा गोपीचंद्र गुरु मार्ग सुन कर और राज्य छोड़ कर भग-
वा भेस ले कर तपस्या को गया था.

रामचंद्र राजा.

शके १५१२ चतुर्दशी का राजा रामचंद्र नाम ग्राम देवगिरी में—
राज्य कर्ता था. कीर्तीमान होता और इसी के राज्य गीया पीछे से यवन-
जे मुसलमान राज्य प्रवेश हुवा था और चारवर्ण ब्राह्मण क्षत्री वैश्य
शूद्र कावल क्षीण प्राप्त हुवा है. और धर्म विरुद्ध चलता है.

शालीवाहन राजा का शक चालु हुवा पीछे से तैलंग देश मे राजा
हुवा है.

वृषपालवंश राजा संख्या.

१ सिप्रक	८ अरिष्टकर्ता	१५ शांतकर्ण ३
२ कृष्ण	९ राल	१६ शिवस्वामी
३ शांतकर्ण १	१० पट्टलक	१७ गोतमीपुत्र
४ लंबोदर	११ प्रविलसन	१८ पुलीमन
५ हविलक	१२ सुंदर	१९ शांतकर्ण ४
६ मेघश्वेत	१३ शांतकर्ण २	२० शिवश्री
७ पातमन	१४ चकोर	२१ शिवस्कंद

२२ यजनश्री २३ विजय २४ चंद्रश्री
२५ पुलोमर्च . राजा २५ वर्ष ३५० राज्य किया है.

तारागढ और अजमेर और दिल्लीयहा चन्हाण राजा चक्रवर्ती
राज्य किया था इसीमें राजा पृथ्वीराज महा पराक्रमी दिग्विजयक-
र्ता था. ॥ दोहा ॥ बामन हात ५२ चो विसगज २४ अंगुळ अष्ट० प्र-
माण, इतने पर सुलतान है मत चूके चन्हाण ॥१॥

चन्हाण वंश राजा संख्या.

१ सुमंत देव	११ प्रताप सिंह	२१ बली अंगराय
२ महादेव	१२ मोहन सिंह	२२ प्रथमराय
३ अज सिंह	१३ सिताराय	२३ अंगराय
४ वीर सिंह १	१४ निगहस्त	२४ विशालराय
५ विंदुसुर	१५ लोह घर	२५ शारंगराय
६ वैवी बिहंता	१६ वीर सिंह २	२६ अनादेव
७ दौलराय	१७ विबुध सिंह	२७ जय सिंह
८ माणिकराय	१८ चंद्रराय	२८ आनंददेव
९ महा सिंह	१९ हरिहरराय	२९ सोमेश्वर
१० चंद्रगुप्त	२० वसंतराय	३० पृथुराजा.

राजा ३० वर्ष ३७६७ राज्य किया था. जुमले वर्ष १११४.

बादशाही राज्य संख्या.

भरतखंड में यवनी राज्य प्रवेश हुवा पीछे से फारसी ग्रंथ इसी का-
नाम है.

१ शाहनामा ३ अजमोल सैलातै गिजनी ५ तबारी फिरस्ता.
२ अयीनी अकबरी ४ मजमोल सैलातै न दिल्ली

फारसी ग्रंथ का अंग्रेजी तरजुमा किया है. नाम:—

- | | |
|------------------------------|------------------------------|
| १ हिस्टोरिया आफ हिंदुस्थान | २ आकू आफ हिंदु मैथलोजी |
| ३ हिस्टोरी आफ धी मरेठान् | ४ ऐनशेट हिंदु मैथलोजी |
| ५ हिस्टोरी आफ ब्रिटिश इंडिया | ५ प्रिन्सेस यू स फुल टेबल सू |
| ६ बांबे क्यालेंडर सन १८३६ | ७ धी हिस्टोरिया आफ इंडिया |
| ८ युनिवर्सल हिस्टोरी | १० किलस् महाभारत अंगरामायण. |

यवनराज्य प्रवेश संख्या.

प्रथम ए भरतर खंड हिंदुस्थान में यवनराज्य जे मुसल बादशाह स्वदेश छोड़ कर वैल २४ पर असवारी कर्के भरतर खंड हिंदुस्थान लुटने कोलगे और इसी लूट में धन मिल्या है. और हीरामण ५०२ माणक मण १००० मोती मण ७ सोनो मण ३३०० और चांदी मण ४०६० और रोकड़ रुपये और रेशमी कपड़ा इसी लूट में धन की संख्या २ थी ३ अबुदको धन लुट कर उठ ४०० भरेन अपने देश में ले गया था और खुद्द लडाई ले कर मनुष्य ७ लाख युद्ध काम आया और फेर वटने लगा था - कौसुं भी काशी सोरठ सोमनाथ देवगढ़ और पार्चीन मोटे मोटे ग्राम लुटने लगा था और अपने राज्य स्थापने कोलगा जहां तहा किल्ला बांध कर बादशाही राज्य नेमाथा.

प्रथमतः गजनीस बादशाही राज्य संख्या.

- | | | |
|---------------|------------------|-------------|
| १ सबाद ज्जांग | ६ गोदूद | ११ अब्राहाम |
| २ ईसमयिल | ७ मसाउद २ | १२ बहिराम |
| ३ महमूद | ८ अबु हसन अल्ली. | १३ खुशरु |
| ४ महंमद | ९ अबदुलरसीद | १४ बहिराम |
| ५ मसाउद १ | १० फिरूजशाह | १५ खुशरु |

१६ स्वोशुमलिक. बादशाहा १६ वर्ष २१४ राज्य किया था.

और इराण देश का बादशाहा महमद शके १११३ में असी-

निश्चय किया जे भरतरवंड हिंदुस्थानमे रहणा चाहिये. इसी समय में चङ्गाण पृथुराजा कुलाकुलराज्य कर्ता था तारागढ अजमीरकारा जा होता और भ्राता चङ्गाण राव दिल्लीकाराज्य कर्ता था और जयदे वराठोड कान्यकुब्ज जेकनोजकाराजा होता इसीकाराज्य प्रयाग काशी अयोध्यापुरी होती और भीमदेव ये पश्चिम देश मध्य गुजरात देशका राजा होता ये सर्व राजाका राज्यशके १११४ मे बादशाहामह मदने जीत लिया था.

प्रथमतः दिल्लीमे तुर्की बादशाही.

१ कुतुबुद्दीन ऐबक	४ रुकनुद्दीन फिरोज	७ मसाउद
२ आराम	५ राजिया बेगम	८ नासरुद्दीन
३ अलतमष	६ मजलुद्दीन	९ म्यासूद्दीन
१० बुलबन	११ कैकोबाद	

बादशा ११ वर्ष ९४ राज्य किया था जुमले वर्ष ३०८

खिलजी वंशका बादशाहा.

१ जलालुद्दीन दयालुथा	३ उमर	बादशा ४ वर्ष ९२ राज्य किया था
२ अल्लाउद्दीन	४ मुबारिक	जुमले ४००
		तोगल वंशका बादशाहा.

१ म्यासुद्दीन	३ फिरोज	५ आबु बखर
२ महंमद	४ म्यासुद्दीन २	६ नासरुद्दीन
७ हुमायून	८ महंमद	

बादशा ८ वर्ष ४९ राज्य किया था जुमले ४४९

सादत वंशका बादशाहा.

१ सय्यद रिजजरवान	२ सय्यद मुबारिक	३ सय्यद महंमद
४ सय्यद अल्लाउद्दीन	बादशा ४ वर्ष ३६	राज्य किया था जुमले ४८५.

लोदीवंशकाबादशाहा

१ बहिल्लोलखानलोदी २ शिकंदर ३ इब्राहिम
बादशाहा ३ वर्ष ७५ राज्यकियाथा जुमले ५६०

पहिलेतैमूरवंशकाबादशाहा.

१ चावर २ हुमायून
बादशाहा २ वर्ष १५ राज्यकियाथा जुमले ५७५
दुसरे मुगल बादशाहा.

१ शीरशाहा २ सलीमशाहा ३ फिस्तुजशाहा
४ महंमद ५ सिकंदर
बादशाहा ५ वर्ष १२ राज्यकियाथा. जुमले वर्ष ५८७.
तिसरे बादशाहा.

१ हुमायून ४ शहाजहान ७ जहानदर
२ अकबरशाहा ८ फरुकशीर
५ औरंगजेब बादशाहा ८ वर्ष १४२
३ जहांगिरशाहा ६ बहादुरशाहा राज्यकियाथा जुमले
दिल्लीमे बादशाहाराज्यकावर्ष ५१५ ७२९

बादशाहाजु दीजातनामसंख्या.

१ तुर्कीबादशाहा	११	५ लोदीवंश	३
२ खिलजीवंश	४	६ तैमूरवंश मोगल	२
३ तोंगलवंश	८	७ दुसरे मोगल	५
४ सादतवंश	४	८ तिसरे बादशाहा	८
		दुसरे बादशाहा.	जुमले ६५

१ रेफियाअदरजाट २ रेफियाआदलाट ३ महमदशाहा १

४ महमदशाह ५ आलिमगीर ६ शहाआलिम
बादशाह जुमले ५१ हुवा और दुसरा अकबर होकर राज्य समा
प्ती हुवा और अंग्रेजी राज्य दिल्ली में बादशाही हुवा है

शताराकासूर्यवंशी शाहूराजा

क्षत्रीसूर्यवंशी सिसोदिया सतारामे शाहूराजा पराक्रमी पृ-
थ्वी दातार दयालू धर्मिष्ठ परंतु महाराजाके शरीरमें रोगोत्पत्ति ग-
र्भ विकारादि इसीमें महाराजाने ब्राम्हणाना बुलाकर पुछायाके-
मेरे शरीरमें व्याधी कैसे मटेगी जदी सर्व ब्राम्हणाना कीया था जे पृ-
थ्वी दानराज्य विभाग दान देना चाहिये इसी ब्राम्हणाने अरज कर-
नेको महाराजने किया की बहोत अच्छी बात है इसी मन इच्छा करी
जे बाजीरावके वंशका देखकर राज्य दिया था शके १५६६ और रा-
ज्य चतुर्था भाग रखा था तीन हिस्सा राज्य दे दिया था. इसी वंशमें-
से कुलशारवा देशमें वाडमें चितौरगढ उदयपूर महाराजाजीका-
राज्य और देशनेपालराज्य और तंजावलमें द्रावड देशमें सूर्यवं-
शी सिसोदिया सताराका राज्य है.

श्रीमंताईराज्यमरेठी.

ब्राम्हणजाती श्रीमंत पेशवाराज्य शक १५८६ में प्रथमतः शाहा-
जीका पुत्र शिवाजी भोसले शके १५९४ में ज्येष्ठ शुद्ध १३ के दिन रा-
यगढके उपर राज्याभिषेक यथाविधी से किया था और अष्टकौशल
राज्यका काम कर्त बिनाया था. और इसीके पीछे शके १६०२ में सं-
भाजी राजा हुवा और शके १६११ में रामराजराजा हुवा शके १६३०
सवाई शिवाजी हुवा और प्रधान बालाजी विश्वनाथ यशस्वी होता
इसीका पुत्र बाजीराव बालाजी मोटा पराक्रमी था. इसीने होलकर-
शिंदे गायकवाड एतीन सरदार मुखी किया था. और सुसलमाना-

काराज्य बळहीन किया था. और फिरंगीके पाससे ग्राम बशाईका इके १६६१ मे किल्ला लिया था और इसी पीछे शक १६६२ मे बालाजी बाजीरावजे नानासाहेब ए मोठा पराक्रमी था और जगाजगाथाणावेठाकर मरेठाकाराज्य वधाया था. और इके १६८३ में ग्राम सोनपत पानिपत-ए दिल्लीके पास उत्तर में है. इसी ग्राम मे बादशाह अमदशाहा और श्रीमंत पेशवाके युद्ध लडाई हुई थी इसीमे फौजकी संख्या घोडास्यार- ५५००० हजार और पायदल ११५००० हजार तोफा २०० दोनशे जुम ले ३००००० तीन लक्ष होती. और इसी लडाईमे विश्वासराव सदाशिवराव और जनकोजी शिंदे इनीका मृत्यु हुवा. और दायलक्ष फौज-मृत्यु हुवा था. और पीछे लडाईकर पुनामे आये थे मल्हारराव होलकर दामाजी गायकवाड विठल शिवदेव विंत्तुरकर लडाईमे से बचकर पीछे आये थे और इके १६८३ मे माधवराव बाळार्जा राजगादी बेठा. इसीने कोकन देशमे और समुद्र तटपर बहोल्साराज ले लिया था इसी पीछे इके १६९५ मे रघुनाथराव बाजीराव राजा हुवा था और इसी-पीछे इके १६९६ मे सवाई माधवराव नारायण श्रीमंत राजा हुवा और न्यार्या धर्मिष्ठ दयालु विचारवान होता. इसी पीछे इके १७१७ बाजीराव रघुनाथराव श्रीमंत राजा हुवा ए राजाका राज्य वर्ष २३ ताईर या था. इके १७४० तक पुनाका राज्य किया था. इके १६३० थी इके १७४० राज्य किया. सर्व राजाका वंश वर्ष ११० और इसी पीछे अंग्रेज सरकारका राज्य हुवा था.

पोर्तुगीस और इंग्लिश राज्य.

शक १४१९ पोर्तुगाल पोर्तुगीसजे फिरंगी वासको डिगामाकार-हिस था ये गलबन में बैठकर भरतर खंड हिंदुस्थान मे प्रथमतः देश मलवार मे गामकलीकोट मे उतरा था और यहां राजानायरजातीका-

ज्जामोरिन नाम इसीका राज्य था. जिस राज्य ने लेकर अपणो स्वाधीन किया था और गोवा का राज्य लिया था और कोचीन का राज्य को अपणे जपा किया आर कानोनेर का राज्य युद्ध कर लिया और बंगालाबी लिया था- और शके १४३४ मे पोर्तुगीस लोक उतर को कन मे आया मंबोई मे और वसा इमे एक किल्ला बांध कर राज्य किया था. आज दिन उजड है और अंग्रेज-सरकार के स्वाधीन है. और या पीछे से शक १५२२ मे अंग्रेज सरकार प्रथमतः भरतखंड हिंदुस्थान में प्रवेश हुंवा था और व्यौपार कर्ता एक कं पनी ज्मा हुई और अलीजाबेथ महाराणी जी के ताई अरजी किया के एक इस्ट इंडिया कंपनी नाम से भरतखंड मे व्यौपार कर्ता चाहिये जदी एक पट्टासन द कर लिया था. और यहा आकर देश गुजरात मे गाम सुरत मे उतरी कंपनी और पीछा से शक १५३४ मे दिल्ली का बादशहा जहांगिर शहाने असी अरजी किया की सुरत मे व्यौपार कर्ता एक कोठी बांधवी जदी बादशहाने होकम दिया था और कोठी बांधी थी और मद्रास मे शके १५६२ मे एक किल्ला बांधा था. इसीका नाम फोर्ट सेंट जा र्जरवा था और शके १५८३ मे पोर्तुगीस लोकाना अपणी कन्या-क्याथरैन दुसरा चार्लस ने दिया था और लभ कर लिया और वाई को हात खरच में गाम मंबोई अं दण दिया था जदी शके १५८६ अंग्रेज-सरकार अपणा राज्य कर लिया था और पोर्तुगीस फरंगी वशाई छोड-कर स्वदेश मे गया वर्ष ३५५ राज्य किया था. शक १६६१ छोडी थी और गोहा दमण मे आज दिन फरंगी का राज्य चलता है और धीर धीर कल-कत्ता और बंगाला में राज्य किया था. और कलकत्ता मे एक किल्ला न-वीन बांधा था. फोर्ट उलियम नाम रखा था. और धीर धीर अयोध्या-काशी दिल्ली और श्रीरंगपट्टण और बी मोटा मोटा सहर लिया था और शक १७४० मे पुना का पेसवाई राज्य लिया था. और अंग्रेज सरकार ने-

मंवाईमें राज्यकर्ता वर्ष २०० आसरे अनुमान है और नीतीसे राज्य-कर्ता वर्ष ६६ आसरे अनुमान है और शके १८३१ ताई राज्य आनंदमें हैं.

शकराजा युधिष्ठिर विक्रम शालीवाहन एतीनूही शक मिलाकर गत कलीवर्ष संख्या ४९८५ कलीयुग का गया है.

और भरतरखंडमें किती जातका शक चलता है इसीका संख्या १ राजा युधिष्ठिर शक कलीयुग आरंभमें चालु हुवा है इसीका वर्ष ३०४४ २ राजा परशुराम नाम था देशमलबारमें शक चालु किया २९२२ राजा युधिष्ठिर होता जदी किया.

३ राजा विक्रम संवत् राजा युधिष्ठिर शके ३०४४ पीछे चालु हुवा है.

४ शालीवाहन शक १३५ राजा विक्रम संवत् १३५ पीछे से चालु हुवा है.

५ क्रिस्तीसन जे अंग्रेजीसन राजा विक्रम संवत् पीछे वर्ष ५७ को अंतर है वर्ष ५७ पीछे चालु हुवा है.

६ फसलीसन अकबर बादशहाने इसवी ५९१ पीछे से चालु किया है ७ अरबीसन अब्राहाम बादशहाने पुत्रस्हीत इसवीसन ६०० पीछे से चालु किया है.

८ हिजरीसन मुसलमानाका पैगंबर महमद इसवीसन ६२२ पीछे से चालु किया है.

९ यजदीजीरद जे तिसरे इराण देशका बादशहा इनका नाम से-पारसी लोग चलाता है. इसवी ६३२ पीछे से चालु किया है.

१० सताराका शिवाजी महाराजाका शक अपने नाम से इसवीसन १६६४ चालु किया था.

शकनिर्णय.

१ जूलीयन शक जूलीयन नाम रोम देशका राजा होता इसीने कली

युगके पहली द्वापारयुगका वर्ष १६१२ बाकीरया थाजदी चालू किया है इसीको वर्ष ६५९६

२ याहुदीजे इस्राईल इनका शक कलीयुग पेली द्वापारयुग ६६१ का वर्ष बाकीरया थाजदी चालू किया हैं आज दिन वर्ष ५६४५ हुवा है ३ चिनीलोकाका शक २७०३ इसवीसनके पेली चालू किया है और अपने ज्योतिषकामतसे पंचागमें संवत्सर ६० है ऐसा चिनीलोका का संवत्सर है

४ ज्यापानीशक ६६१ वर्ष इसवीसन पेली चालू था.

५ बुधेष्ट शक सिंहल द्वीपात चालू किया था वर्ष ४५४४ इसवीसन-पेलीसे चालू किया हैं.

६ जोरागास्तर शक एक पारशी होता इसीने प्रथमतः पारशी धर्म-स्थापन किया हैं और अपना नामका शक ३९० वर्ष इसवीसन पेलीसे चालू किया है

७ ग्रीकलोकाका शक ३१३ इसवीसनके पेलीसे चालू किया है.

८ बंगालीसन ५९४ वर्ष इसवीसन पेलीसे चालू किया है.

९ ब्रम्हीसन इसवीसन ६३८ पेलीसे चालू किया है.

अंग्रेजसरकारकाराज्य हिंदुस्थानमें आया हैं

१४९८ वासको डिगामकारस्तासे हिंदुस्थानमें आया है.

१५०० काब्राल फिरंगीका फलासहित हिंदुस्थानमें आया हैं.

१५०५ आलमीडा हिंदुस्थानमें पहली फिरंगी सुबा हुवा हैं.

१५०८ आलफोंसो आलब्युकर्क सुब्यो थयो.

१५१५ पोर्तुगलकाराजाको वगर कारण अलब्युकर्कने राज्यहीन-

१५३६ दीवबेट फिरंगीका हातमें आया हैं. किया हैं

१५९४ डचइस्टडंडिया कंपनी उभी हुई थी.

- १६०० अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनीने इंग्लिशकी राणी इलिझाबेथे भरतखंड हिंदुस्थानमें व्यौपारकर्ता होकम दिया.
- १६०८ कपतान हाकिम्स ईस्ट इंडिया कंपनी दरबारमे (बादशाह)के पास आया हैं
- १६१३ बादशाह जहांगीरने चार ठिकाने कोठी बांधवाका होकम दियाथा.
- १६१५ इंग्लंदना पहिला जेम्स बादशाहानो एलचीसर. तामसरो जहांगीरका दरबारमें आया.
- १६१६ अंग्रेजका जेसूरत, मसलीपट्टन और कलीकोटमे व्यौपारकर्ता कोठीया बांधीथी.
- १६४० अंग्रेजाने मद्रासमें राज्यस्थापन किया और फोर्टजार्जना-किला बांधाथा.
- १६६२ पोर्तुगीसकाराजाने अपनी कन्या क्याथेरीन इंग्लंदनारा जा दुजा चार्ल्सको दियाथा. और परणायी पीछे पहरावणीमें चार्ल्सको संबोर्ड दियाथा.
- १६६४ फ्रेंच ईस्ट इंडिया कंपनी उभी हुई.
- १६६८ इंग्लिशकाराजाने ईस्ट इंडिया कंपनीको संबोर्ड दिया.
- १६७४ फ्रेंचने पोंडिचरी सहर बसायाथा.
- १६८८ फ्रेंचने चंद्रनगर शहर बसायाथा.
- १६९६ अंग्रेजने कलकत्ता शहर बसायाथा.
- १७२५ फ्रेंचअमलदार लाबडेने इनेमाही बंदर लीधाथा.
- १७४१ दुफली पोंडिचरीका हाकम हुवाथा.

महाराणीजीकाराज्यवर्णन.

महाराणीजी विक्टोरिया माताजी भाग्यशाली है इसीका ग्रह

बलवान हैं इनका जन्मग्रहाः सन १८१९ इसवी मेह मासतारीख २४ रातने प्रातः काल इष्टकलाक ४ मिनुट ४ सेकंद ३४ एसमये जन्म-काल है.

महाराणीकी जन्मकुंडली

अथरव्यादयो ग्रहाः स्पष्टाः

मं.	श.	गु.	रा.	के.	लमः	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	श.	रा.	के.	लमः
१	१२	११	१०	९	९०	०	१	०	१०	०	११	७	१०	१०
२	१	२	३	४	५	२६	३	१७	९	१६	२६	२८	२३	२४
३	०	०	०	०	०	०	३३	३८	१२	५७	३४	४६	२०	०

महाराणीजी सन १८३८ इसवीमें वर्ष १९ की अवस्था में राज्यगादीपर बेठी थी इसीको वर्ष ५१ राज्य गादी बेठा हुवा है. इज्जार्ड नावाके कंट ड्यूक कंट गाम जेरहनेका स्थान हैं और विकटोरिया माताजीके पिताजीके हेटे युनिव्हर्सल हिस्टोरिया नामथा और विकटोरिया मानाजीके मातो श्रीके नाम विकटोरिया होता और हिस्टोरी आफ इंग्लंड नामथा. और इसीका राज्यमें मनुष्य हिंसा नहीं है और शत्रुभय चोरभय और दगलबाजी और खोटा चलनके रुपये और खोटी सही करनेको मोटी शिक्षा करता है. और महाराणीजीर शरीर सुख और पुत्र पौत्र सुख आनंद है और पुत्र और कन्या बुद्धिमान विचारवान विद्वान है और इसीका राज्य हुवा पीछेसे नवीन क्याक्या हुवा जे वर्णन कर्ता हूं राज्यकछे डी न्यायाधीश अष्टकौसल कोडत सकस्तारीजे राजसभा और विद्याशाला और ग्रंथसरस्वती भंडार पुस्तक संग्रह और कलाकौशल व्यातर्कचानुरी और यंत्र और अंजनेर विद्या और द्रव्य खजाना कोटिअर्ब संख्या हैं और प्रजासुखी आनंदवर्णन बुद्धिवान विद्यावान् चातुर्य मोटाव्योपारबुद्धि गुणवान् पृथ्वीसोधन औषधीशोधन र-

सायण और शस्त्रविद्या यंत्रविद्या अभिरथतारायंत्र बहोत बुद्धिबल-
वध्या है. और ईश्वरका स्थीर भजन होता है और व्यौपारी को व्याधी-
शलक्षाधीश निर्भयसे व्यौपार कर्ते हैं और प्रजापालक महाराणी-
जीकी दीर्घायु भवति. भरतरवंड हिंदुस्थानका राजा दिग्विजयकर्ता
सानसाहजी श्रीदलीपत बादशाहा श्रीमलिकामा आजमा विकटो-
रिया ग्रेट ब्रिटन अयरलंड संयुक्त राज्यनी महाराणी धर्मको रक्षणक
रणारी केंसर ई हिंद.

ब्रिटिश इंडिया का राजकीय वर्णन.

भरतरवंड हिंदुस्थानका गव्हर्नमेंट पार्लमेंट राज्यका विभाग-
चार है. इसमें प्रथम १ कलकत्ता बंगाला हाता. २ द्वितीय मद्रास-
हाता ३ तृतीय मंबोई हाता ४ चतुर्थी पंजाब हाता है. और गव्हर्नर
जनरल साहेब बहादूर दिग्विजय राज्यकर्ता है.

भरतरवंड हिंदुस्थानमें गव्हर्नर जनरल सा- हिबका याद.

१	वॉरन हेस्तिंग्स	इ.स. १७७४	थी १७८५
२	लॉर्ड कॉर्नवालिस	इ.स. १७८६	थी १७९३
३	सर जॉन शोअर	इ.स. १७९३	थी १७९८
४	लॉर्ड वेल्सली	इ.स. १७९८	थी १८०५
५	लॉर्ड कॉर्नवालिस पुनः फेर	इ.स. १८०५	
६	सर जार्ज बाले	इ.स. १८०५	थी १८०७
७	लॉर्ड मिंटो	इ.स. १८०७	थी १८१३
८	लॉर्ड हेस्तिंग्स	इ.स. १८१४	थी १८२३
९	लॉर्ड अम्हर्स्ट	इ.स. १८२३	थी १८२८
१०	लॉर्ड वुडलीयम बेंटिक	इ.स. १८२८	थी १८३५

११	लॉर्ड अल्लंड	इ.स. १८३६	१८४२.
१२	लॉर्ड एलनबरो	इ.स. १८४२.	१८४४
१३	लॉर्ड हार्डिज	इ.स. १८४४	१८४८
१४	लॉर्ड डलहौसी	इ.स. १८४८	१८५६
१५	लॉर्ड क्यानिंग	इ.स. १८५६	१८६१
१६	लॉर्ड एलजिन्	इ.स. १८६२	१८६३
१७	सर जॉन लारेन्स	इ.स. १८६४	१८६८
१८	लॉर्ड मैयो	इ.स. १८६९	१८७२
१९	लॉर्ड नॉर्थ ब्रुक	इ.स. १८७२	१८७६
२०	लॉर्ड लिटन	इ.स. १८७६	१८८०
२१	लॉर्ड रिपन	इ.स. १८८०	१८८४
२२	लॉर्ड डफरिन	इ.स. १८८४	१८८८
२३	लॉर्ड लॉसडोन्	इ.स. १८८८ ता. ३ डिसेंबर	

२०००० भरतरखंड हिंदुस्थानका राज्याधिपति लाट साहेब बहादूर, कलकत्ता हाताका मास १ पगार.

१०००० छोटा लाट साहेब बहादूर बंगाल हाताका मास १ पगार.

७००० गव्हर्नर साहेब बहादूर मद्रास हाताका मास १ पगार

१०००० गव्हर्नर साहेब बहादूर मुंबई हाताका मास १ पगार

५००० लेफ्टेनेंट गव्हर्नर साहेब पंजाब हाताका मास १ पगार

आसरा अनुमान हैं:

अंग्रेज सरकार का राज्यको वर्णन:

भरतरखंड हिंदुस्थानमें अंग्रेज सरकार का राज्य की बराबर तो कभी किसीने राज्य नहीं किया. अर्थात् इतिहासमें कोई राजा अथवा बादशाह नहीं हुआ है. और किसीने इनके जैसा मुल्क का बंदो-

बस्त किया नही और रेलगाडी तार विद्या और हुनर कला इसीके बराबर नही कोइ ना किया और प्रजापालक और न्याय धर्मकर्ता है और रजमिदारोके सात ऐसा पका बंदो बस्त किया जाता है के एकवरि जमाठेरा देना सोलेना पीछासे इसने कुछ भी केहेता नही है और जैसा शिवनिर्माल्यको छोडे देता है अर्थात् गव्हर्नर जनरल साहेब बहादूर दिग्भिजय राज्यकर्ता अपने चहाके कर्ता दूध छटाक कार्बी पैसा देता है और मजूर दारकी मजूरी हिसाबसे रोकडा देता है मफतमें कोइ बीचीज लेता नही है और व्यौ पारियाके पाससे मैसूल धारापर माण लेता है और प्रजाको कोइ तराका दूस्व नही देता है इसीसे रयत व्यौ पारमे धन मिलाता है और प्रजा आनंदमें रहती है और धन हरनेका व्यौ पारीको सोच नही रहता है और रस्ताकी सडका पकी साफ रखता है और जाड वृक्ष लगा देता है छाया रहती है इसी सडका उपर प्रजा आनंदसे रहागीर चलता है और अंधालुला खोडा गरीब सर्वलोक आनंदसे चलता है और नदीयाके पुल सडका बंधाणेसे राहा धारी चलता रहता है और डाक घर होनेसे व्यौ पारी अथवा गरीब लोगाका धरके नवाजुनी खबर मिलती है और जहा रुपये पुचानेका होवजहा पता चार पुचाते है गरीब लोक बडा इसका सुख मानता है और गरीबोके लडके को विद्या पठानेके लिये ग्रामग्राममे पाठशाला बनाई है और गरीब लोगाके लिये ग्रामग्राम में दवाखाना (इसपिताल) बनवाई है और छापखानामें पुस्तका छपनेसे विद्याभ्यास चातुरी बहोत्साहुवा है और इसीकाराज्यमें मनुष्य हिंसा नही है और शत्रुभय चोरभय दगलबाजी खोटा चलणाके रुपये और खोटी सही करणे कूं मोटी शिक्षा कर देता है.

अंग्रेजीराज्य बंगाला कलकता हाता.

बंगालकी लंबाई चौड़ाई लेफटेनेंट गवर्नरीके देशे. बंगाल हा-
 तेके दक्षिणी देश. इनकी पश्चिमी सीमा छुटिया नागपूर हैं और पूर्वी
 सीमा उत्तरी आसाम तक हैं और उत्तरमें नेपाल सिक्किम भूटान और-
 आका दुफ्ला मिरी और मिश्मी जातोके देश, पूर्वमें स्वतंत्र और ब्रि-
 तिश ब्रम्हा, और दक्षिणमें ब्रिटिश ब्रम्हा बंगालकी खाड़ी और
 मद्रास हाता, और पश्चिममें मध्य प्रदेश रीवा और पश्चिमोत्तर दे-
 श हैं और बंगालाका संपूर्ण क्षेत्रफल २८०२०० वर्ग मील है और म-
 नुष्य संख्या ६५०००००० है अर्थात् प्रत्येक वर्ग मीलमें २३२ मनुष्य
 हैं और प्राप्ती कलकतेकी जमींदारी सन १७५७ ई. में इस्ट इंडिया कं-
 पनीको दे दी गई थी. बर्दवान मेदिनीपूर और चाटगावकी आमदनी
 मीरकासिमने सरकारको सन १७६० में दे डाली थी बंगाल बिहार-
 और उड़ीसाकी दिवानी अर्थात् आमदनी उगाहनेका अधिकार श-
 हा आलमने इस्ट इंडिया कंपनीको सन १७६५ में दे दिया, बंगाल
 केनबाबोको सन १८१० इसवी में पिन्शन अर्थात् वार्षिक वृत्तिल-
 गा दी गई थी, सन १८२६ इसवी में ब्रम्हावालोने आसामको जिसे
 उन्होने थोड़े दिन आगे से जीत लिया था सोप दिया सन १८३५ ई-
 सवी में अंग्रेज सरकारने जयंतिया छीनकर अपने राज्य में लगा
 लिया कारण इसका यह की वाहाकाराजा उन लोगो से मिला हु-
 आथा जो अंग्रेजी राज्यकी प्रजाके लोगोको नरबली देनेके लिये
 पकडले जाते थे और आमदनी रोक डजमा बंगालकी आमदनी
 प्रायः सोला करोड रुपये हैं और जमींदार भूमीका कर लॉर्ड कार्न
 वालिसके इस्तमरारी बंदोबस्तके अनुसार देते हैं और निवासी
 भरतरवंड हिंदुस्थानके और २ भागोकी अपेक्षा बंगालमें अधि

कजाते हैं हरजातिके हिंदु इस देशमें हैं और उनके अनेक प्रतिभा-
गवसते हैं और कायस्थ अगणित हैं और बंगालके ब्राम्हण अपनी
उत्पत्ति उन ब्राम्हणोंसे बतलाते हैं जो कनोजसे यहा लाये गये थे और
मुसलमान को बंगालके आग्नेय कोणके भागमें अधिक रहते हैं.
बहुधा अफगानोंके वंशसे हैं और बहुतसे नीच हिंदु आदि जाति हैं
और अरकनि जातिके हैं जो मुसलमान हो गये थे और आदि लोगो-
की जाति विशेषकर आसाम पूर्वी बंगाल उडिसा छुटिया नागपूर-
और राजमहलके पहाड़ी देशोंमें पाई जाते हैं आदि जातोंके बहुतसे
मनुष्य अपना देश छोड़कर पूर्वी बंगालके उन सब जिलोंमें आ-
बते हैं जहा चाबोई जाति हैं. भाषा खास बंगालमें बंगाली और उ-
सकी कई देशी भाषा उडिसामें उडिया आसाममें आसामी बिहार
में हिंदी और हिंदुस्थानी बोली जाती है. आदि जातिके लोग अनेक
प्रकारकी भाषा बोलते हैं.

भाग बंगालकी लेफटेनेंट गवर्नरीके देश भूगोलशास्त्रके अ-
नुसार ऐसे विभाजित हैं और मध्य बंगाल दक्षिण और उडिसा प-
श्चिमी मध्य बंगाल आसाम और पश्चिमी पूर्वी बिहार और राजके अ-
नुसार ११ विभाग अथवा ५२ जिले हैं जो नीचे लिखे हैं.

परगना.

जिलअ.

- १ पहली कलकत्ता मध्य बंगाल दक्षिण { १ कलकत्ता और २४ परगने और
रसुंदरबन. २ नदिया ३ जस्यर.
- २ दूसरी राजशाही मध्य बंगाल { १ मुर्शिदाबाद २ दीनाजपूर ३ मालदाह
राजशाही पुरंगभूमि ६ वगुरा ७ पबना.
- ३ तीसरी उडीसा. { १ कटक २ पुरी वा जगन्नाथपुरी ३ बाला-
सोर अ. बलेश्वर ११ कगधीन महल.

- ४ चौथी वर्दवान पश्चिमी बंगाल. { १ वर्दवान २ बाकुरा ३ वीरभूमी ४ हु-
गली और हौडा ५ मेदिनीपूर.
- ५ कुचबिहार मध्य बंगाल उत्तर { १ दारजिलिंग २ जलपेगोरी कुच-
बिहार.
- ६ छटवीं ढाका पूर्वी बंगाल { १ ढाका २ फरीदपूर ३ बाकरगंज ४
मैमनसिंह ५ सिलहट ६ कछार.
- ७ सातमी चाटगाव पूर्वी बंगाल { १ चाटगाव पहाड़ी देश २ भलुआ नवा
खाली ३ टीपरा पहाड़ी.
- ८ आठवीं आसाम. { १ गोआलपाड़ा २ कामरूप गोहाटी
३ दुरंग ४ नवगाव ५ शिवसागर ६ ल-
किरवमपूर ७ गारो पहाड़ ८ स्वसिया
जयंतिया पहाड़ी ९ नागा पहाड़
- ९ नववीं पटना पश्चिमी बिहार { १ पटना २ गया ३ राहावद ४ सारन
५ चंपारन ६ तिहुत.
- १० दशमी भागलपूर पूर्वी बिहार { १ मुंगेर २ भागलपूर ३ पुर्निया ४ सं-
ताल पर्वना.
- ११ ग्यारवीं छुट्यानागपूर नैऋत्य { १ लुहारदंगा २ हजारीबाग ३ सिंह-
कोनके सिवाने की अजंटी. } भूमी ४ मानभूमी कराधीन राज.

१ पहला परगना मध्य बंगाल कलकत्ता.

प्रेसिडेन्सिक पश्चिमे हुगली नदी दक्षिणमें बंगाल का अखात, पूर्वमें बाकरगंज फरीदपूर और पवनाराज शाही के जिले, उत्तरमें मुर्शिदाबाद और राजशाही के जिले. उपज धान्य नील तील तमा खू खांड पाट चमड़ा और कलकत्ता चौबीस परगना और सन १५०६-इसवी के आइने आकबरी में पहिले पहल लिखा है की कलकत्ता-

सरकार सातगाव का एक महल था जा व चार्नक गवर्नर साहिब के अधिकार में अंग्रेजों ने यहां पर सन १६९२ में एक कोठी बनाई क्योंकि धरती यहां की उंची थी और उसके चारों ओर कोट घेर कर उसका नाम उस समय के इंग्लिस्तान के राजा तिसरे विलियम के नाम से गढ़ विलियम रखा सन १७४२ में मरहटों के आक्रमण से बचने के हेतु उसके आस पास एकरवाई खोदी गई सिराजुद्दौलाने जो कलकत्ते को अली नगर कहता था गढ़ विलियम ले लिया था उसके एक वर्ष पीछे अर्थात् सन १७५७ में लार्ड क्लैव ने इस नये वर्तमान गढ़ के बनाने का आगाज गाथा. सन १७७२ में यह भरतखंड की राजधानी नियत हुवा और कोष संबंधी सर्वराजकाज मुर्शिदाबाद से यही उठ आये.

कलकत्ता.

कलकत्ता हुगली नदी के बाए किनारे परवसता है और गवर्नर जनरल अर्थात् बड़े लाट साहिब बहादुर और छोटे लाट साहिब बहादुर के रहने का स्थान है और इसकी मनुष्य संख्या ४४७६०१ है यहां बहुत सी वस्तुएं अन्य देशों से आती हैं और यहां से भी अन्य देशों को भेजी जाती है. और यहां पर सरकारी कोठिया बहुत सी हैं और उनमें में मुख्य ये हैं लाट साहिब बहादुर के रहने का महल बंगला बहुत सुंदर हैं. नया हाईकोर्ट सरकारी अजायब घर अद्भुत पदार्थ लिय महाविद्यालय लाट पाद्री का महाल प्रेसिडेन्सी कॉलेज अर्थात् प्रधानशाला मेडिकल कॉलेज वैद्यक विद्या की बड़ी पाठशाला मद्रसातं कसाब पृथ्वी भर में सबसे भारी कोठी डाक घर एशियाटिक सोसाइटी सन १७८४ में नियत हुई थी मेडकाफ हाल अक्टर लोनी का मिनार बड़ा गिरजा घर है और चौरंगी अंग्रेज लोग के रहने का विशेष स्थान है और बाबु लोग की और रईसों की कोठियों की सुंदरता है

२४ चौविसपरगना.

२४ परगनेके प्रतिभागयेहैं. डायलंडहार्बर अलीपूर दम्दमा बारासतबासरहात बारखपूर सातकीराबारुईपूर. इसकाक्षेत्रफल २५३६ बर्गमील मनुष्यसंख्या २२१०००० नदियाहुगली मत्ता हरियाभंगाजमुनाऔरशारवाअथवारवाल जिनसेगंगाकापश्चिमीडेल्टाबनाहै. कलकताऔर २४ परगनासन १७५८ मेंकंपनीकोजागीरमेंदेदीगयेथे.

अलीपूर औरबल विडियर बंगालके लेफ्टेनेंट गवर्नर अर्थात् छोटेलाटसाहिब बहादुरकेरहनेकास्थानहैं.

पोर्टक्यानिंग मादला नदीपर यहबंदरकलकत्तेसेरेलसडकेद्वारामिलजानेकेकारण बंद होगयाहैं सुंदरबन २४ परगनेकेदक्षिणमेंहैं यहदलदलीऔरजंगली जिलअहैं. औरगंगानदीकीअनेकशारवारवालीसेजहांतहांकटाहुआहैं जैसे मादला कपडक-कोवाडक मोलिंगु मर्जता औरहरिनघाटा क्षेत्रफल ५५७० बर्गमीलहैं यहालकडी सुंदर निकलतीहैं. यहांनिमकबनताहैं.

जिलअ नदियाक्षेत्रफल ३४०९ बर्गमील मनुष्यसंख्या - १८०६००० हैं नदियाभागीरथी गंगानदीकी प्रधानधारा जिसे-पद्मा भीकहतेहैं औरइसकीशारवाजलंगीऔरमतभंगा भैरव ईचमाती चूर्नी गोरईऔर पंगासी कुमार भीहैं. क्रष्णनगरजलंगीनदीकेबाएतटपरसेंदर मुकामहैं यहांपर एक कालेजहैं

नदीयानवद्वीप भागीरथी नदीकेदहिनेतटपरहैं यहांबंगालकेलक्ष्मनीराजाओंकी राजधानी सन् १२०३ तकबनीरही इसीसनमेबकतयार खिलजीनें इसेजीता यहापरबडे २ हिंदुशास्त्री होगयेहैं.

शांतीपूर भागीरथी अथवा हुगली नदी के बाएँ तट पर सूती कपड़ों के लिये प्रसिद्ध है. पलासी भागीरथी के दहिने तट पर हैं. यहां पर क्लैव और सिराज उद्दौला में सन १७५७ में संग्राम हुआ था. चागदा हुगली नदी के बाएँ किनारे पर हैं. कुमार खाती गोरई नदी के उपर हैं जिल अजसर जसोर क्षेत्रफल ३७१३ वर्ग मील है मनुष्य संख्या २०७६००० हैं नदियां गोरई कुमार मधुमती भैरव नदी और कपोदक ये सब गंगानदी की शाखा हैं जसर भैरव नदी के दहिने तट पर हैं खुलना और बाघर हाट भैरव नदी के दहिने तट पर है कोट चंदपूर कपड़क नदी पर यह खांडका बड़ा व्यापार होता है और नदी का कपड़क भैरव द्वारा गंगा से फूट निकली थी गोरई मधुमाती हरिन घाटा यही तीनों गंगा सहीत समुद्र में गिरती हैं.

अंग्रेजी राज्य दुसरा परगना उड़ीसा कलकत्ता.

जिल अकटक अर्थात् मध्य उड़ीसा. उड़ीसा देश सन १८०३ में मरहटो से ले लिया गया था. इसके पश्चिमे पहाड़ हैं जिसमें आशिया श्रेणी सबसे प्रसिद्ध हैं इसकी अत्यंत उंची शिखा नाल्दिगिरी है जिस पर चंदन के वृक्ष हैं और बौद्ध धर्म के चिन्ह अभि कपाये जाते हैं उदयागिरी जिस पर बुध की बड़ी भारी मूर्ती हैं आशिया गिरी २५०० फूट उंचा है इस पर एक मसजिद बनी है पूर्वी भाग की धरती कछारी और दलदली हैं. नदीया महानदी कटजूरी ब्राह्मणी चैतरणी. क्षेत्रफल ३१७८ वर्ग मील मनुष्य संख्या - १४४९०००.

कटक जिसे कटक बनारस भी कहते हैं महानदी के दहिने किनारे पर है. कहते हैं की उड़ीसा के राजा अनंग भीम देव ने सन १२०० इस वी में इसे बसाया था. जाजपूर चैतरणी नदी के बाएँ तट पर-

हैं प्राचीन राजधानी था.

श्रीजगन्नाथपुरी.

जिलअपुरी अर्थात् दक्षिणी उडीसा. क्षेत्रफल २५०५ वर्गमील मनुष्यसंख्या ७६९००० है. इसके नैऋत्यमें भानपूर और खुर्दा पहाड़ हैं अत्यंत उंची शिखा सिलारी और वरुणी जिनमें मुनी-लोगोंकी बहुत सिकुटी है दक्षिणमें सूरज्जील और चिल्काज्जील जिनमें महानदीकी कई शाखा बहती है.

जगन्नाथपुरी यहां श्रीजगन्नाथजीका मोटा मंदिर है. इसको चारवर्ण धाम कहते हैं अर्थात् ब्राम्हणको विशेष अधिकार है और रथयात्राके उत्सव समय हजारों यात्री दर्शनको जाती हैं और इनमें से बहोतसे लोग रथचलनेके समयमें रथके पैयोंके तले दब मरनेके मनोरथसे गीर पड़ते हैं. और महाप्रसादके लेनेका सर्व-ज्ञ आचार है. वर्तमान मंदिर सन् ११९८ ई. में बना था. कन्नारक-१९ मील है पुरीके इशानको है ज्योश्याम मंदिरको कारण प्रसिद्ध है खुर्दा पुरीके वायव्यको है यहां सन् १८१७ तक स्वतंत्र राजाओं की राजधानी रही.

जिलअ बालासोर क्षेत्रफल २०४२ वर्गमील मनुष्यसंख्या— ७७०००० है नदिया सुवर्णरेखा बूढा बलंग जो मयूरभंज पहाड़ी-से निकलती है और वैतरणी पर्वत अधोनीलगिरी पहाड़ हैं.

जलेश्वर उत्तरमें सुवर्णरेखानदीके दहिने किनारे पर इसके दक्षिणामें पिप्ली जो अगर हवेशतकमें इस्ट इंडिया कंपनीकी-कोठी थी परंतु अब उजड़ हैं उन्नीस कराधीन महाल स्थान हैं. जंगली पहाड़ी जिले हैं इन सबकी वस्ती धनी नहीं है धरती बंजर है. नाम उनके ये हैं. रनपूर नयागढ़ खंडपारा दसपाला आतग

ठवरवाबानकीबोदनरसिंहपूरतिगरीहिंडोलअंगुलआठमालिकपललहराधेनकनालतलचीरनीलगीरीक्युनज्जूरमयूमजिक्षेत्रफळ १६०६८वर्गमीलमनुष्यसंख्या १२८३००० हैं और उपज-धानदालतमारबूकपाससाटासनएरंडीकातेलनारियलकातेलनीमकलट्टे

अंग्रेजीराज्य तीसरा परगना बर्दमान कलकत्ता.

पश्चिमी बंगाल इस परगनाके पूर्वमें हुगली नदी और मुरशिदाबाद जिला, उत्तरमें संताल परगना, पश्चिममें छुट्यानागपूर, और दक्षिणामें उड़ीसा हैं. यहांके रहनेवाले हिंदु सब जातिके और मुसलमान हैं और भाषा बंगाली और हिंदुस्थानी बोली जाती हैं. जिलअ बर्दमान क्षेत्रफळ ३५८८ वर्गमील, मनुष्यसंख्या २००५००० यह जिला सन १७६० में कंपनीके हाथ लगा था. नदीगा भागीरथी जो नदीयानगरके जरा आगेसे हुगली कहताती हैं. अजय जो कटवामें भागीरथीसे मिलती है. दामोदर और बर्दमान ३५००० मनुष्योकी वस्ती है. सदर मुकाम और बर्दमानके महाराजाकी राजधानी हैं. यहां नूरजहां बेगमका पहला पति शेरअफ मारा गया था. कटवा और कलना दोनो भागीरथी नदीके तीरपर बसते हैं यहां व्यौ पार बहु होता हैं. रानीगंज वायव्यमें कोयलाकी खदानोंके लिये प्रसिद्ध हैं. उपज धान्य कोयला तसरतिल

जिलअ बांकुरा इसे पूर्वी बर्दवान भी कहते हैं क्षेत्रफळ १३४६ वर्गमील मनुष्यसंख्या ५२६००० हैं. नदिया दामोदर और दलकिसोर बांकुरा सदर मुकाम हैं.

विष्णुपूर जो बांकुडाके प्राचीन राजा ओकी राजधानी था बहु तउजड पडा हैं. उपज सोना मुरवी व्यौ पार होता हैं.

जिलअ बीरभूमी क्षेत्रफल १३४६ वर्गमील हैं मनुष्यसंख्या- ७२५००० मुख्य नदिया अजय मोरये दोनो भागीरथीकी सहायक हैं और बलकेश्वर नदीमें ऊष्णजलके बहुतसे कुंड हैं और दुबराजपूर इलाम बाजार दोनो वाणिज्य स्थान हैं. उपज धान्य चमड़ा लारवनील लकड़ी लकड़ीके बर्तन टसर रेशम तिल.

जिलअ हुगली क्षेत्रफल १४७० वर्गमील मनुष्यसंख्या १४९१ ००० हैं. नदिया हुगली सायक हैं दामोदर दलकिशोर रूपनारायण. और हुगलीमें सदरमुकाम हैं. बड़ा इमामवाड़ा हैं. सन १५३७ में पुर्तुगालवालोंकी बस्ती थी और शहाजहान बादशहाके राज्यमें सन १६३२ में मुगलोंने इसे लूटा इसके दक्षिणमें चिनसुरा जो सन् १८२४ तक डच लोगोंकी बस्ती थी. इसी सनमें सुमाना द्वीपके अनेक स्थानोंका अधिकार देकर लिया था. यहा एक बड़ी पाठशाला हैं.

हवरा कलकत्तेके सन्मुख ९८००० मनुष्योंकी वस्ती हैं. और पारियोंकी पाठशाला हैं. और बगीचे उद्भिज्ज वृक्षादि विद्या सिरवलानेके लिये नाना प्रकारके वृक्षादिलगे हुये हैं. आमता उलूवे डियारबीरपाई वाणिज्यस्थान है. उपज

जिलअ मेदिनीपूर क्षेत्रफल ५०८२ वर्गमील, मनुष्यसंख्या १७५०००० हैं. यह जीला पहिले उड़ीसामें लगा था. नदीया रूपनारायण सिलाई हुगली कसई हल्दी हुगली सुवर्णरेखा हुगलीमें गिरती हैं जंगल महल पहाडी है. मेदिनीपूर कसई नदी पर सदरमुकाम है. नदीरूप नारायणतलूक अववाणिज्यस्थान हैं. उपज धान रेशम जूट कपास नील खांड निमक.

चौथा परगनाराजशाही. अंग्रेजीराज्य.

मुर्शिदाबाद क्षेत्रफल २७०५ वर्गमील मनुष्यसंख्या १३४८०००

नदीयागंगा और उनकी छोटी शाखा भागीरथी और जलंगी. मुर्शीदाबाद भागीरथी के बाए किनारे पर है. मुर्शीदाबाद का नाम मुर्शीद कुलजाफर खा के नाम से पड़ा है जिसने सन १७०१ में इसे बंगाल के सूबे की राजधानी ठेराया था. इस जिले में विशेषकर के शिया लोग रहते हैं और यहां पर नचावना जिमकाराज महल है. और एक मंदिर सा भी है. मुर्शीदाबाद के दक्षिण में कासिम बाजार जिसका वर्णन इस्ट इंडिया कंपनी के आदि इतिहास में बहुधा किया जात है. और बर्हम पूर साहिब लोगो के रहने की छावनी है यहां पर एक कालेज है और जंगी पूर अजीम गंज नगर है. बर्हम पूर के पश्चिम और पूर अताई के निकट राजा मान सिंह ने अफगानो को सन १६०० में पराजय किया था.

दीनाज पूर क्षेत्रफल ४१२६ वर्ग मील मनुष्य संख्या १५०,५००० है. नदिया विस्ता और उसकी एक छोटी सी शाखा अत्राई पूर्णबद- और करतोया. मुख्य नगर दीनाज पूर हमताबाद ददहाराय गंज धोराघाट. पहिले यहां पर मुसलमान राज्य था. उपज धान्य, जूट साटा, तमाकू, भाजी तरकारी. देवकोट मुसलमानो के समय में सूबेदारो की राजधानी था. अध्यक्षो का प्राचीन राज्य स्थान और वन- राजा का खंडहर है.

मालदा क्षेत्रफल १६५० वर्ग मील मनुष्य संख्या ६१८००० है. नदिया गंगा और इसकी सहायक महानदी अत्राई गिरती है. मालदा महानदी के बाए किनारे पर है. इसके निकट अंग्रेजी बाजार है. जो साहिब लोगो की छावनी है. गौड अब उजड है. लखनौ तीबाज नता बाद गंगा के निकट पहिले बंगाल की राजधानी था. परंतु आबो हवा अच्छी न होने के कारण १६वीं शतक में यहां से राज्य स्थान उठा दिया गया था. इसके निकट महापंडु आ. यहां पर बहुत से खंडे हरे प-

डे हैयहांरमकाजहाचैतन्यकेमहात्मका एकमेलालगतोहैं. इसनेबंगालके बैष्णवीपंथको स्थापित कियाथा. उपज गल्ला, तिलरेशमआमनील.

राजशाही क्षेत्रफळ २२३४ वर्गमील मनुष्यसंख्या १३३३३३३हैं. जिसमे १०लाख मुसलमानहैं नदीया गंगाऔर उसकी शाखा बरल महानदी जोरामपूर बुलिया गंगाके बाए किनारेपरहैं. नाटोरराजा-ओके रहनेकास्थानहै. उपज पाटगांजा धान जूट रेशम गल्ला तिल नील तमाकू. इस जिलेमे दलदलके स्थान बहुतसे हैं चलानज्जी ल सबसेबडाहैं.

रंगपूर क्षेत्रफळ ३५९९ वर्गमील मनुष्यसंख्या १९३९०००हैं. नदिया ब्रम्हपुत्रा तिष्ठाकरतोया धर्ला. मुख्यपूर रंगपूर. उपज गल्ला तिल नील तमाकू खांड दस्तकारीकीचीजे कागद गोदड रेशम शतरंजी बनात.

बगुरा क्षेत्रफळ १५०१ वर्गमील मनुष्यसंख्या ६८९०००है. नदीया कोईनाई वाजमुनाजो ब्रम्हपुत्र नदीकी शाखाहैं करतो-या धागट तुलसीगंगाहैं. शहर बागुडा, मुलतानगंज. उपज-धान साटा सहतूत नील कपास.

पबना क्षेत्रफळ २१११ वर्गमील मनुष्यसंख्या १२लाख. नदी-या महानदी गंगा पद्माशाखा गोरईजमुना ब्रम्हपुत्रकी शाखा छोटीशाखा उरसागर. इचमती नदीके बाए किनारेपर पबना औरज मुनानदीके दहिने किनारेपर सिराजगंजहै. उपज गल्ला तिल भाजी तरकारी तमाकू.

अंग्रेजीराज्यपांचमा परगनाकुचबिहार कलकत्ता.

१ दारजिलिंग बहुतसा भाग पहाडीहै. नदिया तिष्ठा तिबतसे निकलतीहै. इसके सहायक नदीरंगीतहैं. दारजिलिंग सिक्किम-

के नजदीक आरोग्यस्थान ७००० फूटसे भी कुछ अधिक उंचे पर बसता हैं. कुर्सि आंग यहाँ चहा बहुत उपजती है. इसके पूर्वसे महानदी निकलती है. क्षेत्रफल १२३४ वर्ग मील मनुष्यसंख्या ९३०००

१ जलपेगोरी क्षेत्रफल २९०६ वर्ग मील मनुष्यसंख्या ३२८००० नदीया तिष्ठा और महानदी वकसा पहाड़ है. मुख्यनगर जलपेगोरी तिष्ठा नदीके दहिने किनारे पर हैं कुचबिहार कराधीन राज्य है. कुचबिहारका परगनामे गोआल पाडा और आसाम भी मिला हुआ है.

अंग्रेजी राज्य छटवा परगना ढाका कलकत्ता.

१ ढाका क्षेत्रफल २८९७ वर्ग मील मनुष्यसंख्या १८५३००० है नदीया मेगना अथवा ब्रम्हपुत्रा नदीके नीचेका भाग जो समुद्रके निकट हैं बूढ़ी गंगा अथवा जमुना की छोटी सी शाखा धलासिरी मे जा मिली हैं. किर्तिनाशा वा गंगालखिया और मेगना की अनेक शाखा है. ढाका अथवा जहांगीरनगर बूढ़ी गंगाके किनारे पर हैं. इसे जहांगीर बादशाहके नामसे जहांगीरनगर कहते हैं पहली में मुगल सूबेदारों की राजधानी हुआ था यहा पर एक अंग्रेजी कालेज है और अगले समय मे उत्तम मलमलके कारण प्रसिद्ध था. औरनगर ये हैं धामराय नारायण गंज मानिक गंज मुन्शी गंज रामपंत बगालके राजा बल्लाळसेनके रहनेका स्थान था.

२ फरीदपूर ढाकाके पश्चिममें क्षेत्रफल १५२४ वर्ग मील मनुष्यसंख्या १०१२००० है. नदीया गंगा पट्टा इसकी शाखा भुवनेश्वर नदी और फरीदपूर भुवनेश्वर नदीके निकट वस्ता हैं.

३ बाकरगंज फरीदपूरके दक्षिणमें क्षेत्रफल ५२६४ वर्ग मील मनुष्यसंख्या २३७९००० हैं नदीया गंगा और मेगना और इनकी अनेक शाखा उपज गल्ला खांड कपास तील नारियल-

इत्यादियहाकी आबो हवा आरोग्यताके लिये उपकारी है और गर्मीके दिनो मे साहिब लोग बहु धायहा पर हवा खाने को आते हैं.

४ मैमनसिंहवाकाके उत्तरमे क्षेत्रफल ६३८३ वर्गमील मनुष्यसंख्या २२८४००० है. नदिया ब्रम्हपुत्रजमुना धलासिरी. बहु तसा भाग इस जिलाका मधुपूरजंगलसे घिरा हुआ है. उपज धान नीलजूठरवांड

५ सिलहट मैमनसिंहके पूर्वमे क्षेत्रफल ५४४० वर्गमील मनुष्यसंख्या १७२०००० पहाड उत्तरपूर्वदक्षिणमे है. नदी सुर्मा जो कछारसे निकलकर ब्रम्हपुत्रमे गिरती हैं. उपज निंबूलठुबास नारंगी अदरकचा. सिलहटसुर्मा नदीके बाए तटपर हैं.

६ कछार सिलहटके पूर्वमे क्षेत्रफल ५००० वर्गमील हैं मनुष्यसंख्या १८२००० हैं. बोरल श्रेणी पूर्वसे पश्चिम तक चली गई है. इसकी उंचाई २००० से लेकर ६००० फूट तक है नदी बराक. उपज चाअरा.

अंग्रेजी राज्य सातवा परगना चाटगाव कलकत्ता.

१ चाटगावके पहाडी देश संपूर्ण जिला पहाडी हैं इसमें सबसे उंची २ शिखाये हैं शुण्डकार अर्थात् गउड्रुम पहाडी चाटगावके आग्नेय कोणमें ३०१५ फूट ऊंची हैं. सीता पहाड चाटगावके ईशान्य कोणमें ११३९ फूट ऊंची है. सीतारवंड अथवा चंद्रनाथ उत्तरमें ११५५ फूट ऊंची है. मुख्य नदिया फनीकरनफुली सांगसवकी सव बंगालकी खाडीमें गिरती हैं. उपज चहा, कपास, लठ्ठे, धान, पाट, तमाकू, पान, जंगली हाथी बहुत हैं. यह जिला अंग्रेजोंके सन १७६० मे सोपागया था. चाटगावका क्षेत्रफल २७१७ वर्गमील और मनुष्यसंख्या ११२५०००. और चाटगाव-

के पहाड़ी भागका क्षेत्रफल ६८८२ वर्गमील हैं. चाटगाव करनफुली नदीके दहिने किनारेपर वसता है. और बड़ा बंदरस्थान है. इसके दक्षिणमें रामू कैसिलिंग पहाड़ी भाग है.

२ नवारवाली अथवा भलुआ मेगना नदीके सुहाने पर है. और सोनद्वीप मल चीरा हतिया सिद्दी विहू आदि टापू इसी जिलेमें है. उपज धान पानकपास तील नारियल वास. इस जिलेमें दलदल बहुत है. नवारवाली और भलुआ क्षेत्रफल १५५७ वर्गमील मनुष्य संख्या ७१५००० हैं.

३ टिपरा और पहाड़ी टिपरा भलुआ चाटगावके उत्तरको पहाड़ लालमयश्रेणी उत्तरसे दक्षिणतक फैली हैं. नदीया मेगना सहायक गूमती. उपज पान नील जूट खांड तिल कुसुमका फूल लोहा पत्थरका कोयला. मुख्यनगर कोमिल्ला और दाउदखंडी दोनों गूमती नदीके बाए किनारेपर वसते हैं. अगरतला राजा के रहनेका स्थान है. टिपराका क्षेत्रफल २६५५ वर्गमील है और मनुष्य संख्या १५३३००० है. पहाड़ी टिपराका क्षेत्रफल २८७९ वर्गमील मनुष्य संख्या ६९०००.

अंग्रेजीराज्य आठवा परगना आसाम कलकत्ता.

आसाम उपज गल्ला तिल तमाकू चहा मधु तरकारी पान नारंगी आदी फल खंड लारव लाकड़ी निंबू हाथीदात जंगली हाथी कस्तूरी. आसाममें सन १२३० लेकर १८२४ तक ब्रम्हावालो राज्य किया था इसके पश्चात् सरकारने इस देशको ब्रम्हावालोसे थोड़े ही दिन पहिले पराजय किया था ले लिया था.

१ गोआलपाड़ा ब्रम्हपुत्र नदीके बाए तट पर हैं और इसके और बनास नदीके संगमके संमुख बसता है. धोब्री रंगामती ब्र-

ब्रह्मपुत्र नदी के दहिने किनारे पर हैं क्षेत्रफल ४४३३ वर्ग मील मनुष्यसंख्या ३९३००० हैं.

२ कामरूप गोआलपाडा सदर मुकाम गोहाटी ब्रह्मपुत्र नदी पर है. क्षेत्रफल ३६३१ वर्ग मील मनुष्यसंख्या ५६१०००.

३ दुरंग कामरूप के पूर्व और ब्रह्मपुत्र के उत्तर में है मुख्य नगर तेजपूर क्षेत्रफल ३६४८ वर्ग मील मनुष्यसंख्या २५६०००.

४ नौगाव दुरंग और ब्रह्मपुत्र के दक्षिण में है सदर मुकाम नौगाव क्षेत्रफल ३६४८ वर्ग मील मनुष्यसंख्या २५६०००.

५ शिवसागर ब्रह्मपुत्र के शाखा लोहित के दक्षिण में शिवसागर इसके निकट नाजिराह यहां प्राचीन राजधानी था धारगाव के स्थान पर वसो है माजुली द्वीप लोहित ब्रह्मपुत्र के मध्य में है क्षेत्रफल २८२५ वर्ग मील मनुष्यसंख्या २९८००००.

६ लखिमपूर नदिया दिहंग दिगार ब्रह्मखंड ब्रह्मपुत्र के निकास पर का जिला है यहां पर यात्री बहुधा आया जाया करते हैं क्षेत्रफल ११६०० वर्ग मील मनुष्यसंख्या १२०००० हैं और ७ बे ८ बे ९ बे जिले ये हैं गारो खसिया जयंतिया नागा पहाड़ हैं क्षेत्रफल १४९४० वर्ग मील मनुष्यसंख्या २५९००० हैं. ये पहाड़ी जिले जहां केवल जंगली अथवा आदि जातिके लोग वसते हैं. और खसिया पहाड़ की सबसे उंची चोटी शिलांग ६४५० फूट और स्वेर ६४०० फूट उंची हैं मुख्य नगर चेरापुंजी. उपज लोहा निंबू स्लेट पत्थर-काकोयला मोम नारंगी लारव पान.

अंग्रेजी राज्य नवा परगना पटना पश्चिमी बिहार
(कलकत्ता.)

मुसलमानी राज्य के समय में पुर्निया और संताल परगना बि

हारसे अलग थे मुसलमानी राजधानी था.

१ पटना क्षेत्रफल २१०१ वर्गमील मनुष्यसंख्या १५५९००० है. इसके पूर्वमें राजगिरके पहाड़ है नदीया गंगा; शाखा सोन, पुन पुन फल्गु. उपज धान गन्ना तिल अफिम तमाकू तरकारी खांड अंगूर.

पटना गंगानदीके दहिने किनारे पर हैं और बांके पूर यहां अंग्रेज सरकारकी छावनी हैं यही पर पटना कालेज है. दाना पूर यहां पलटण रहती हैं. पटना मे मिरकासी मनेसन १७६३ में २०० अंग्रेजोंकी हतन किया था

बिहार बौद्ध मतका आदिस्थान हैं. यहां पर बौद्ध लोगोके अनेक मंदिर हैं और मुसलमानोंकी अनेक मसजिदें उजाड़ पड़ी हैं. नदिया मुनेर सोन और गंगाके संगमके निकट बसा हैं शरफुद्दीन औलिया यंहीं पर पैदा हुए और बिहार मे उनकी कबर हैं.

गया पटनाके दक्षिणमें क्षेत्रफल ४७१८ वर्गमील मनुष्यसंख्या १९६४००० हैं. नदिया सोन इसकी सहायक नदी कोयल पुन पुन मुहार फल्गु. गया फल्गूके बाए तट पर तीर्थस्थान है और बौद्ध मत के दूटे फूटे मंदिर है. दावदनगर सोन नदीके निकट है. अर्बल देशी कागदके कारण प्रसिद्ध है.

शहाबाद गंगा कर्मनाशा और सोनके मध्यस्थ है क्षेत्रफल ४३८५ वर्गमील मनुष्यसंख्या १७२६००० है. रोहतास पहाड़के मूरभ्रेणीका एक भाग हैं. नदीया सोन और गंगा और अपवित्र कर्मनाशा जो रोहितास पहाड़के निकटसे निकलकर चौसाके पास गंगा में गिरती हैं और उज्जैनिया भोजपूर राजाओंकी राजधानी थी.

बक्सर गंगानदी पर यहां पर सर. एच्. मनरो साहेब बहादुर ने मीरकासीम और अवधके वजीरको सन १७६४ में पराजय किया था

चौसा कर्मनाशा और गंगाके संगमपर यहांपर शीरशहानें हुमायू-
नको सन १५३९ में हराया था और रोहतास सोन नदीके निकट य-
हापर एक प्रसिद्ध गढ़ १४८५ फूट ऊंचा है.

४ चारन घाघरा गंडक और गंगाके मध्य वसा है क्षेत्रफल ३६३४
वर्ग मील मनुष्यसंख्या २०६३००० उपज गहूना नील अफीम खांड
शोरा और चूनेका कंकर सारन अथवा छपरा गंगाके बाए किनारेके
निकट सदर मुकाम है.

५ चम्पारन गंडक नैपाल और बागमतीके बीचमें है क्षेत्रफल
३५३१ वर्ग मील मनुष्यसंख्या १४३९००० है सोमेश्वर और दूनश्रेणी
वायव्यमें है यहा बड़े बड़े जंगल भी है.

६ तिहूत नैपाल और गंगाके मध्य इसका प्राचीन नाम कौशिला
है जो आगले समयमें संस्कृत विद्याभ्यासका मुख्य स्थान था क्षेत्रफ
६३४३ वर्ग मील मनुष्यसंख्या ४३४८००० है नदियां गंगा गं-
डक बागमती. उत्तरमें तराईकी जंगल है दलदली है. उपज नील
गहूना खांड तमाकू अफीम शोरा.

अंग्रेजी राज्य दसवा परगना भागलपूर कलकत्ता.

पूर्वी बिहार.

१ मुंगेर इस जिलेका भाग गंगाके दक्षिणको पहाड़ी है और इ-
समें खरकपूर मुंगेर चकई गिद्धोरे श्रेणी है. खरकपूर पहाड़ोकी
सबसे उंची शिखा मौंट मरुक १५२७ फूट मुंगेरके दक्षिणमें है. नदी
या गंगा बुटगंडक. उपज गहूना खांड अफीम तमाकू लोहा स्लेट.
कापथर. क्षेत्रफल ३९४५ वर्ग मील मनुष्यसंख्या १८१२००० हैं.
मुंगेर प्राचीन नगर गंगाके दहिने किनारे पर हैं और लोहे चमड़ेकी
वस्तुओंके कारण प्रसिद्ध हैं. इसके निकट सीताकुंड है जिसमें.

गरम पानी निकला करता है. जमालपूर के निकट पहाड़ के नीचे रेलेवे स्टेशन हैं.

२ भागलपूर गंगानदी के परवसता है इसके दक्षिण में पहाड़ीयो की कई छोटी छोटी श्रेणी है नदिया गंगा, सहायक घाघरा बाईचंदनद-हिनी. उपज लोहा अबरक सीसा तांबा गड़्हा तिल तरकारी. क्षेत्रफल ४२९७ वर्ग मील मनुष्य संख्या १८२६००० हैं. दस्तगारी की चीजे कांच मिट्टी के वरतन लोहे पितल की चीजे. भागलपूर गंगानदी के दहिने तट के निकट सदर मुकाम हैं यहां पर यहां के निवासियों क्लीवलैंड साहिब अगले माजिस्ट्रेट का नाम रहने का हेतु एक स्तंभ बनाया है और दक्षिण में मंदिर प्रसिद्ध हैं.

खलगाव गंगा के दहिने किनारे पर है यहां पर दस्तकारी की चीजे बहुत बनती हैं और यहां पर एक पुराना गढ़ भी है.

३ पूर्निया भागलपूर और नैपाल के मध्य में क्षेत्रफल ४९५७ वर्ग मील मनुष्य संख्या १६६६००० हैं नदीया गंगा सहायक कोसी सावरा पनार महानदी. उत्तरीय भाग में दलदली जंगल हैं उपज धान तमाकू पान तरकारी.

४ संताल परगना यह पहाड़ी और जंगली जिल्ला राजमहल के निकट गंगा की मोड़ या मुड़कर से लेकर बाराक और अजय नदीयों तक बीरभूमी के नैऋत्य में चला गया हैं क्षेत्रफल ५४०० वर्ग मील. पहाड़ राजमहल श्रेणी जिस पर पहाड़ी लोग रहते हैं उपज लोहा पत्थर का कोयला काला पत्थर लकड़ी. नदीया गंगा; सहायक मोर अजय बाराक.

राजमहल अथवा अकबरनगर जिसे राजा मानसिंह ने बसाया था. गंगा के दहिने तट पर. तेलियागढ़ी राजमहल के वायव्य को गं

गानदीके दाहिने तटपर स्थित है. पुराने गढको लोग बंगा की कुंजो फाटक कहकर मानते हैं.

अंग्रेजी राज्य म्यारहवा परगना. कलकत्ता हाता.

छुटियानागपूर अ० हजारी बाग.

यह पहाडी जिला जिसे अगल समय मे जारखंड कहते थे दक्षिणी बिहार पश्चिमी बंगाल उड़ीसा और मध्य प्रदेश के बीच में हैं और यहा नागपुर के राजा रहते थे इस जिले मे विशेष करके आदि जंगली जाती बसती है कोल उडाव मुंडा भूमिज कोरवा इत्यादि. और इसमे छोटे रजवाडे भी अनेक है. भोकार कोरिया सरगुजा उदयपूर जशपूर गंगपूर बोनय सरुहा. और हजारी बाग का क्षेत्रफल ७०२२ वर्ग मील मनुष्य संख्या १२८३००० है लोहार डांगा का क्षेत्रफल ११४०४ मनुष्य संख्या १२३२००० सिंध भूमी का क्षेत्रफल ४५०३ मनुष्य संख्या ४१४००० है. मान भूमी का क्षेत्रफल ४९२१ मनुष्य संख्या १०४०००० हैं. यहा पर्वत शिखर है जहा एक छोटा सा जैनियो का पारिसनाथ का मंदिर है. ऊंचा ४५०० फूट हैं महाबोर ४१०० फूट उंची

अंग्रेजी राज्य पश्चिमोत्तर प्रदेश लेफटेनेंट गवर्नर कलकत्ता हाता.

लंबाई चौड़ाई और अंश ७७ थी ८४ ३ अंश पूर्वी देशांश और २४ थी ३१ ३ अंश उत्तरी अक्षांस के मध्य में हैं. सीमा-उत्तर में नेपाल अवध और हिमालय, पूर्व में बिहार, दक्षिण में छुटियानागपूर रीवा बुंदेलखंड सागर गवालीयर धौलपूर, पश्चिम में भरतपुर जमना और पंजाब अजमेर आगरा के पूर्व राजपुताना में हैं. पश्चिमोत्तर देश का क्षेत्रफल ८३३७९ वर्ग मील है मनुष्य संख्या ३ करोड १५ लाख बस्ती हैं जिनमे से ४७ लाख मुसलमान हैं प्रत्येक वर्ग मील

पीछे ३७५ मनुष्य पडते हैं. बनारस जिले में घनी वस्ती है प्रत्येक-
वर्ग मील पीछे ८१० और गढ़वाल जिला जुदा वसता है जहा प्रत्येक
वर्ग मील पीछे केवल ५५ मनुष्य है. और आमदनी बर्ड और लामसन
साहिब के ३० साल बंदोबस्त के अनुसार सरकार में गाव भरका एक ब
लिया जाता है सन १८७० में पाच करोड सत्तर लाख रुपये की आमद
नी थी. और पहाड सिवालिक श्रेणी गंगा जमुना गढ़वाल कमाऊन
के पर्वतों के मध्यस्थ है. विंध्याचल श्रेणी का अंत बांदामे. कैमूर श्रे-
णी मिरजापूर में. अरवली श्रेणी अजमेर में है. और नदिया गंगा औ
र यमुना मुख्य नदीया है. जलाशयो की मध्य भूमी को घेरती हुई इ
लाहाबाद में एक दूसरे से जामिली है. उपज मुख्य ये हैं. गेहू मकाई
बाजरा ज्वार तिल मुंग मटर चा उत्तर के पहाडों में खांड अफीम नी-
ल कपास सन पाट साल की लकड़ी एरस वृक्ष देवदारु और २ प्र-
कार की लकड़ी दस्तकारी की चीजे उनी सूती रेशमी कपडे दरिया
दुशाली पागडी दुपटा कलावतू और सुजनी का काम शोरा. औ
र इस्ट इंडियन और पंजाब रेल्वे इस देश में होकर निकलती है और
ब्यौ पार बहोत्सा होता है. निवासी भासा यहा के निवासी विशेष-
कर हिंदु और मुसलमान हैं. और हिंदुओं में ब्राम्हण और राजपुत
बहुत हैं. और हिंदी ब्रज भाषा गवारी बोली जाती हैं.

अंग्रेजी राज कीय विभाग कलकत्ता.

पश्चिमोत्तर देश में ९ भाग है जो ३५ जिलों में विभाजित हैं जि
नके प्रत्येक जिले में अनेक परगने हैं. भाग ये हैं.

भाग.

जिले.

१ मेरठ

{ १ देहरादून २ सहारनपूर ३ मुजफ्फरनगर ४ मेर-
ठ ५ बुलंदशहर ६ अलीगढ़.

- २ कमाऊन. १ कमाऊन २ सरकारी गढवाल.
- ३ लहेलखंड. { १ बिजनौर २ मुरादाबाद ३ बदाऊं ४ बरेली ५ शहाजहानपुर ६ तराई परगने.
- ४ आगरा. { १ मथुरा २ आगरा ३ फर्रुकाबाद ४ मैनपुरी ५ इटावा ६ एटा.
- ५ ज्जांसी १ जालौन २ ज्जांसी ३ ललितपुर.
- ६ इलाहाबाद { १ कानपुर २ फतहपुर ३ बांदा ४ इलाहाबाद ५ हमीरपुर.
- ७ गोरखपुर १ गोरखपुर.
- ८ बनारसकाशी { १ आजमगढ़ २ जौनपुर ३ मिरजापुर ४ बनारसकाशी ५ गाजीपुर.
- ९ अजमेर १ अजमेर.

अंग्रेजीराज्य १ मेरठ छावणी कलकत्ता हाता.

इसमे ४५७७००० मनुष्योंकी बसती हैं नदीया जमुना और गंगा संपूर्ण भाग प्रत्येक जिलेकी सीमा पर हैं पर्वत सिवालिक श्रेणी उत्तरमें हैं. यह भाग सन १८०३ में मरहटो से लिया गया था.

१ देहरादून क्षेत्रफल १२५३ वर्ग मील है. मुख्य नगर देहरादून २३६९ फूट ऊंचा है. यहां पैमाइश के महकम में कास दर मुकाम हैं. और मसूरी ६७०० फूट ऊंची और लंधौर ये सब आरोग्य स्थान हैं यहां पर चहा के वृक्षों के अनेक खेत हैं.

२ सहारनपुर क्षेत्रफल २२२८ वर्ग मील. मुख्य सहारनपुर हरिद्वार गंगा नदी के तीर पर सिवालिक श्रेणी के तले बसता है यहां पर यात्री बहुधा आया जाया करते हैं और कुंभ का मेला बारह वर्ष में एक बार भरता है. इस तीर्थ को करके यात्री लोग बढवाल मे बद्रीना

थकेदारनाथके दर्शनको जाते हैं

३ मुजफरनगर क्षेत्रफल १६४७ वर्गमील. कालीनदीकी शाखा के बाएँ तट पर है.

४ मेरठ क्षेत्रफल २३६२ वर्गमील हैं मेरठ कालीनदीके तट पर है जहासन् १८५७ इ.में बलगा जिसे मुसलमान गजर कहते हैं. मचा यहा जनरल अकटरलोनीका देहांत हुवा था.

५ बुलंदशहर क्षेत्रफल १९०८ वर्गमील. कालीनदीके तट पर हैं बरनी इतिहासबेताका जन्म यही हुवा था.

६ अलीगढ क्षेत्रफल १८५९ वर्गमील इसीके निकट कोल हैं.

अंग्रेजी राज्य कमाऊं परगना कलकत्ता हाता.

क्षेत्रफल ११००० वर्गमील मनुष्यसंख्या ६३५००० है इस भागको सरकारने सन् १८१५ इसवीमे जीतकर अपने अधिकारमे कर लि याथा. यह संपूर्ण देश पहाडी हैं यहांपर चहाकी खेती होती है.

१ कमाऊं क्षेत्रफल ६००० वर्गमील है. मुख्यनगर अलमोडा को शल्यापर हैं. नैनीताल एक आरोग्यस्थान है.

२ गढवाल क्षेत्रफल ६००० वर्गमील हैं मुख्यश्रीनगर अलकनंदा के बाएँ तट पर है.

अंग्रेजी राज्य रुहेलखंड परगना कलकत्ता हाता.

यह भाग गंगा अवध और कमाऊंसे घिरा हुआ है और रामगंगा कौशिला गंगा और घाघरा नदीया इसमे बहती है. इस परगनाका मनुष्यसंख्या ५१७०००० हैं. कटिहार इसका प्राचीन नाम है और रामपुरके नबाबका राज्य भी मिला है.

१ बिजनौर १८८२ क्षेत्रफल वर्गमील. मुख्यनगर बिजनौर जो शकुंतला नाटकका रमणीय रंगभूमी मालिनी नदी पर स्थित है.

२ मुरादाबाद क्षेत्रफल २४६१ वर्गमील.

३ बदाऊं क्षेत्रफल १८७३ बदाऊनी इतिहासलेखककी जन्म भूमी है. अकबरके समयमें अगले समयमें यहापर अनेक संतोके रहनेको कारण था. इसे संतोकी पुरी कहते थे. और यहापर पश्चिमोत्तर देशके लेफटेनेंट गव्हर्नर साहिब बहादूर गर्मीके दिनामें रहते हैं.

४ बरेली क्षेत्रफल २३७३ वर्गमील है मुख्य नगर बरेली रामगंगाकी सहायक नदी जुआर पर है. इसे बासके कारण बास बरेली भी कहते हैं. क्योंकि अवधमें एक बरेली राय बरेली करके है. यहापर अंग्रेजी एक बड़ा कालेज है. इसीके निकट फतहगंज जहा करने लचै पियन साहिबने रुहेलोक जिनके सेनापति हाफिज रहमतका थे. सन् १७७४ में पराजय किया था. पिली भीत ईशानमें धानके कारण प्रसिद्ध है.

५ शहाजहांपूर क्षेत्रफल २३२९ वर्गमील है. मुख्य नगर शहाजहांपूर प्राचीन नाम कांत. जिसे शहाजहान बसाया था.

६ तराईके परगने ७३४ वर्गमील यहां दलदली जंगली धरती पहाडीके तले २ कोरसी बांधती हुई चली गई है.

अंग्रेजी राज्य आगरा परगना कलकत्ता हाता.

मनुष्यसंख्या ४६८६००० हैं. यह भाग मरहटोसे सन् १८०३ में मिलाया था.

१ मथुरा क्षेत्रफल १६१२ ३ वर्गमील है मुख्य नगर मथुरा और बृदाबन जमुना नदीके दहीने तीर पर है. और हिंदुओंके पुराणेशास्त्रोंमें मथुरा बृदाबन और गोवर्धन और गोकुलको प्रसिद्ध तीर्थ स्थान माना है क्योंकि यंही पर श्रीकृष्णजीने अपनी लीला लोगो को दिखलाकर अपनी महिना विस्तारी थी और इनमें प्रसिद्ध-

भारी मंदीर ऊर्छेके बुंदेलाराजाबीरसिंहका बनाया था और औरंग-जेबने मथुराके कई मंदिरनष्ट किये और यहाब्राम्हणजमुनापुत्रचौ बाजातलडवा खानेको नामजादी हैं. और बृदाबनमें एक श्रीरंगजी को मंदिरनामजादी हैं. यहां श्रीरामानुज संप्रदायक प्रसिद्ध हैं और श्रीकृष्णजी बलदेवजीने करी अनंक लीलायहा प्रसिद्ध हैं.

२ आगरा क्षेत्रफळ १८७३ वर्गमील मुख्यनगर आगरा मनुष्य संख्या १५० ६७७ है. जमुना नदीके दहिने किनारे पर आगले समय में केवल एक ग्राममात्रथा जिसे सिकंदरलोदीने अपनी राजधानी नियत किया था जो शहाजहांके समयतक बनी रही. वर्तमानगढ अकबर बादशहाका बनाया हुवा है. मुगलोके रहनेका महल और मोतीमहल जगत विख्यात हैं. आगरेमें एक अंग्रेजी बंटा कालेज है मुताज महल कारौंजे जिसे ताजबिविकारौंजा भी कहते है नगर के बाहर बना हुवा है. आगरेके नैर्ऋत्यमे फतहपू सीकरी यहा अकबर बादशहाके रहनेका स्थान था. जहापर बाबरने रानासंगाकासन १५२७ मे लडाई किया था और फिरोजबाद यहा कन्नोजके राजा जयचंद्रको शहाबुद्दीनगोरीने सन ११९४ मे जीता था.

३ फरुकाबाद क्षेत्रफळ १६९४ वर्गमील मुख्यनगर फरुखाबाद गंगानदीके दहिने किनारे है आगले समयमे यहा टंकसाळथी पटियाली गंगा नदीपर महाकवी अमीर खुसरोकी जन्मभूमी है.

४ मैनपुरी क्षेत्रफळ १६६६ वर्गमील. गंगाकी नहरकी बोझा-खा यहांपर वहती है. मुख्यनगर मैनपुरी जहां जैन लोगोका एक मंदिर है.

५ इटावा क्षेत्रफळ १६३१ वर्गमील है. मुख्यनगर इटावा जमुना नदीके बाए किनारेपर घाटीपर बसा हुवा है.

६ ईटा क्षेत्रफल १४०५ वर्गमील है. मुख्यनगर ईटा.

अंग्रेजीराज्य ५ परगना ज्जासी कलकत्ता.

यह भाग आगरेके दक्षिणको बुंदेलखंड अथवा बुंदेला राजपु-
तोके देशमें हैं. और सन १८५४ इसवीमें कंपनीके आधीन होगया-
था. इसमें मनुष्यसंख्या १०१२००० हैं.

१ जालौन क्षेत्रफल १५४६ वर्गमील हैं. मुख्यनगर जालौन य-
हापर रुईकी मंडी हैं. काल्पी जमुनाके दहिने तटपर है. यह मुस-
लमानोके राज्यमें प्रसिद्धनगर था.

२ ज्जांसी क्षेत्रफल १६०८ वर्गमील है मुख्यनगर ज्जासी.

३ ललतपुर क्षेत्रफल १९४७ वर्गमील है. सागरजीलेकी सीमा
से लगा हुआ हैं.

अंग्रेजीराज्य ६ परगना इलाहाबाद कलकत्ताहाता.

इसकी मनुष्यसंख्या ४५०५००० है.

१ जिला कानपूर क्षेत्रफल २३६६ वर्गमील है. मुख्यनगर कान-
पूर गंगा नदीके दहिने तटपर है यहा चमड़ेके अच्छे काम बनते हैं.
यहापर नाना साहिबने सन् १८५७ इसवीमें अंग्रेजोंकी स्त्रियों और
बच्चोंका संहार किया था.

२ फतहपूर क्षेत्रफल १५८० वर्गमील हैं.

३ बांदा क्षेत्रफल ३०३० वर्गमील है मुख्यनगर बांदाके नदी
के दहिने तटपर यहा रुईकी मंडी है. कालिंजर जहापर प्रसिद्ध प-
हाड़ी गढ़ विंध्याचल श्रेणीमें हैं. सन १५४५ इसवीमें शेरशहाइ-
सगढ़को घेरते समय मरगया. गजनवी महमूदने इसे १०२३ ई०में
घेरा था और १८१२ में अंग्रेजोंने.

४ इलाहाबाद क्षेत्रफल २७६५ वर्गमील है. मुख्यनगर इलाहा

बाद. जमुना और गंगा के संगम पर पश्चिमोत्तर देश की राजधानी है. और यहा पर हाईकोर्ट और एक अंग्रेजी बड़ा कलेज है. इसका प्राचीन नाम प्रयाग है. यंही गंगा और जमुना का संगम है. और अकबर बादशहाने सन १५७२ में एक गढ़ बनवाया था जिसमें एक मंदिर है जो अब तक धरती के तले स्थित है. अक्षयवट वृक्ष इसी मंदिर में है. इलाहाबाद के निकट जमुना का पुल है जिस पर से रेलगाड़ी आया जाया करता है. कर्ण गंगानदी के दहिने तट पर मुसलमानों के राज्य में प्रसिद्ध नगर था. यहा अल्लाउद्दीन ने अपने चचा जलालुद्दीन खिलजी को सन १२१६ में मार संगम पर है.

५ हमीरपूर क्षेत्रफल २२०९ वर्ग मील मुख्य नगर हमीरपूर जमुना और बेतवा के संगम पर है.

अंग्रेजी राज्य ७ परगना गोरखपूर कुल कत्ता हाता.

इस भाग के उत्तर में नेपाल पूर्व में गंडक, दक्षिण में घाघरा, और पश्चिम में अवध. इसमें ३५ लाख मनुष्यों की वस्ती है. धान यहा पर प्रधान बाणिज्य द्रव्य है. गोरखपूर राप्ती नदी के बाए तट पर है. यहा पर एक इमामवाड़ा अवध के अधिकारी शुजाउद्दौला का बनाया हुआ है. इसी के निकट गोरखनाथ का स्थान है. जिंहे जैन मत वाले पूजते हैं वस्ती गोरखपूर के पश्चिम में अगले समय में इसे मंडवा कहते थे. रतनपूर कबीर जो सिकंदर लोदी के समय में हिंदु धर्म के शोधक होगये हैं यंही पर मरे थे इनके चेले का जिन्हे कबीर पंथी कहते हैं इसका बनारस में एक मठ है.

अंग्रेजी राज्य परगना ८ बनारस कुल कत्ता हाता.

इस परगना में मनुष्य संख्या ५६००००० है.

१ आजमगढ़ क्षेत्रफल २५४५ वर्ग मील है. मुख्य नगर आज

मगढ उत्तरी दोस नदीके तटपर है और कहते है की यहा पर सरस्वती नदी जो सरहिंदकी रेत में अलोप होगई है. धरतीके नीचे से फूट कर इन दो धाराओ में अर्थात् गंगा और जमुना में मिलती है. इस कारण इस तीनोंको संगमको त्रिवेणी अथवा त्रिधारा कहते है और जसे शहा जहाके सेनापति आजम खाने जो सन् १६४९ जौनपूर मे मराउने बसाया था.

२ जौनपूर क्षेत्रफल १५५२ वर्ग मील है मुख्य नगर जौनपूर गोमती नदी के बाएँ तीर पर है. कहते है की इस नगरको फिरोज तघल खाने सन् १३७० में बसाया था यह सन् १३९० से लेकर सन् १४७६ तक जौनपूर के राजा का राज्य स्थान रहा. गोमती नदीके प्रसिद्ध पुलको अकबर के सेनापति सुनीम खान खाने सन् १५७३ में बनवाया था.

३ मिरजापूर क्षेत्रफल ५२०० वर्ग मील है यह पहाडी विंध्याचल त्रेणी जिला है यहां पर दोरोके चरनेके लिये अच्छे घास चारा है मुख्य नगर मिर्जापूर गंगा नदीके दहिने किनारे पर है दरी और रुईके लिये प्रसिद्ध है. और इसके आसपास बहुत से जजरने है. चनार एक नामी पहाडी गंद है. जहा बली कासीम सुलेमानी का मकबरा बना है. यहां रेतीले पत्थरों की अनेक खदानें हैं.

४ बनारस काशी क्षेत्रफल ९९५ वर्ग मील है मुख्य नगर बनारस काशी गंगा नदीके बाएँ तट पर हिंदुओं का बड़ा तीर्थ स्थान है यह पुरी अनेक बातोंके कारण प्रसिद्ध है अर्थात् गंगाके तीरके मनोहर घाट, हिंदुओंके मंदिर, और जयपूरके राजा जयसिंह जीकी नक्षत्रादि देखने का घर, और यहां सरस्वती बीदरा भंडार हैं. मोटे मोटे पंडित शास्त्रीके रहने का स्थान है संस्कृत विद्या का बहोत्सा भास है और कबी तुलसीदास हिंदी रामायण का ग्रंथकर्ता इसी काशी पुरी में सन्

१६२४ में परलोकको सिधारे और यहाँ मणिकर्णिका घाट पर एक भारी मंदिर विश्वनाथ महादेव का मूर्ति चमत्कारी हैं और एक काल भैरव का मंदिर मूर्ति चमत्कारी हैं और हिंदु लोग का यहाँ मृत्यु होता है जे मोक्ष होता है.

५ गाजीपूर क्षेत्रफल २२२२ वर्ग मील हैं मुख्य नगर गाजीपूर इस नगर को फिरोज तुघलक के समय में मलिक सय्यद मसाउद गाजी ने सन १३३० में बसाया था. यह जिला इसके लिये प्रसिद्ध है यहाँ पर लार्ड कार्नवालिस साहिब बहादुर का सन् १८०५ में देहांत हुवा था.

अंग्रेजी राज्य परगना ९ अजमेर कलकत्ता हाला.

जयपूर टोंक और रजवाड़े इस भाग को पश्चिमोत्तर देश से अलग कहते हैं. क्षेत्रफल २६७२ वर्ग मील मनुष्य संख्या ४२६००० हैं अरवली श्रेणी के अनेक पहाड़ इस जिले के पश्चिम में हैं. इनमें सी सालोहा उपजता है नैर्ऋत्य के भाग को मेरवाड़ा कहते हैं. नदीया लूनी इस की सहायक नदी सरस्वती कोरी जो बनारस में बाई आकर मिली हैं.

मुख्य नगर अजमेर गढबंद पहाड़ी के तले है यहाँ रेल घर का स्टेशन जंक्शन है. और यहाँ अगली समय में क्षत्री जाति राजपूत चव्वाणवंश का राज्य होना. इसमें पृथ्वीराज पराक्रमी नाम जादी था. और यहाँ पर हिंदु स्थान के सबसे पहिले मुसलमानी वली का मकबरा बना है जिसका नाम मुइनुद्दीन चिस्ती था. यह सिजिस्थान कारहनेवाला था. इसकी कबर पर अकबर और उसके पीछे जितने बादशाह हुए सब जियारत को बहुधा जाया करते थे. और एक सहरपना के पास कुंड है कर्नल दक्षिण साहिब ने किया था. और इसी के निकट आनासागर ज्जील है जहाँ से लूनी नदी निकलती है. और इसी के निकट हिंदु लोग का मोहातीर्थ पुष्कर क्षेत्र नाम है. लं

धामील ३ हैं यहा जगत्पिता ब्रम्हाका यज्ञस्थान है. जहा जात्री बहु-
धा आया जाया करते हैं. और देवरा अजमेरके दक्षिणमें हैं यहा पर-
औरंगजेबने दाराशिको हको सन १६५९ में परास्त किया था.

अंग्रेजी राज्य अयोध्या प्रदेश. चीफ कमिशनर.

इसका लंबाई चौड़ाई परगना अवध जो अयोध्या ८० और ८३ अं-
श देशांश और १५ अंश ३० कला और २८ अंश ३० कला अक्षांशके मध्य
में हैं. सीमा उत्तरमें नैपाल, पूर्व दक्षिण और पश्चिममें पश्चिमोत्तर देश
हैं. क्षेत्रफल २३९९२ वर्ग मील है. मनुष्य संख्या ११२००००० हैं जि-
नमेंसे १२००००० सुखलमान हैं प्रत्येक वर्ग मील पीछे ४७४ मनुष्यो
की मध्य संख्या पड़ती हैं अवध देशमें वस्ती घनी है और आमदनी स-
न १८७० में १३१३०९७० रुपये थी. देश प्राप्ति मुगलोके राज्यके अंग-
भंग होने पर वजीर शुजाउद्दौला स १७६० इसवी में अवधका सूबेदार
बन बैठा. सन १८१९ में गाजीयुद्दीन हैदरने जो शुजाके पंश्चात् पांच-
वा राजा हुवा पादशाही पदवी ली. सन् १८५६ में अप्रबंध होनेके का-
रण इसे कंपनीने ले लिया. वाजिद अल्ली जो अवधके राज्य पदवीसे
पदच्युत किया गया था कलकत्तेके निकट गार्डन रिचबा माठिया बुर्जमें
रहता है. पहाड और जंगल उत्तरमें नैपालकी सीमाके निकट हैं. न-
दिया- इस प्रदेशकी नदीया आग्नेयको बहती हैं और गंगाकी बाई
औरकी सहायक नदीया हैं.

नदीया	नगर जिला	नदिया	नगर जिला.
गंगा	दालमउ माणिकपूर कटनाब		जिले खेरी सीतापूर
रामगंगा	धर्मपूर	सईब	मोहनरायबरेली प्रताब
धाराब	पाली सांडी.	घाघरा	बैरामघाट फैजाबाद
गोमती	लखनौ सुलतानपूर	चौकावा सारदाद

नदी	नगरजिला	नदी	नगरजिला.
कौडियाला	जिलाखेरी.	पश्चिमीसरजूद
मोहननदीद	पूर्वीसरजूब	बराईच.

प्रदेश अवधमे चार भाग है. और इनमे १२ जिले है जो १७१ पर-
गनोमें विभाजित हैं.

अंग्रेजीराज्य परगना १ लखनऊ कलकत्ता हाता.

लखनौ जिला मनुष्यसंख्या ९७०६०० हैं मुख्यनगर लखनौ गोम-
ती नदीपर है. कहते हैं की रामने अपने भाई लक्ष्मणके आदर हेतू इ-
स नगरका नाम लखनऊ रख्या था इसमें २८५००० मनुष्योकी व-
स्ती है यहांपर अयोध्याके अगले समयके राजा ओके अनेक महल हैं
अर्थात् मछी भवन इमामवाडा अंग्रेजी महाविद्यालय क्या निंज काले
ज और अनेक सरकारी कोठीया हैं. यहां सन १८५७ के बलवेमें सर-
हेनरी लारेन्स और बहुतसे अंग्रेजोने रेसिडेन्सी बासस्थानमें आ-
श्रय लेकर अपनेको बच्चा लिया था. यहांपर लारेन्स साहेब मारे गये
थे. यह नगर कलाबत्तू और सुजनीके कामेको कारण प्रसिद्ध हैं.
यहांपर एक नहर है जो गंगाको कन्नौजके सामनेसे बहकर लखनऊ
मे गोमती नदीसे मिलती हैं.

१ जिला बारहबंकी लखनौके पूर्वमें मनुष्यसंख्या ८७६०००
हैं मुख्यनगर बारहबंकी नबाबगंज दरिवा दरदौली.

२ जिला उन्नाम लखनौके पश्चिममे मनुष्यसंख्या ७२५०००
हैं मुख्यनगर उन्नाम बागर मऊ.

अंग्रेजीराज्य परगना २ रायबरेली कलकत्ता हाता.

१ जिला रायबरेली मनुष्यसंख्या ७८०००० हैं मुख्यनगर राय-
बरेली साई नदीके बाए तटपर यहां एक गढ़ है और दालमऊ गंगानदी

के बाए किनारे पर है.

२ सुलतानपुर मनुष्यसंख्या १३०००० है मुख्यनगर सुलतानपुर गोमती नदीके दहिने तट पर है.

३ जिला प्रतापगढ अवधका अत्यंत दक्षिणीय भाग मनुष्यसंख्या १३६००० मुख्यनगर प्रतापगढ याबेलाघाटसाईनदीके दहिने तीर पर है माणिकपुर गंगानदीके बाए किनारे मुसलमानोंके राज्यमे यही प्रसिद्ध नगर था.

अंग्रेजीराज्य पूर्वी अवध परगना ३ फैजाबाद. कलकत्ता.

१ जिला फैजाबाद मनुष्यसंख्या १४३७००० मुख्यनगर फैजाबाद वा बंगला घाघरा नदीके दहिने किनारे पर इसे नबाब सफदरजंगने बसाया था और कपड़े बुन्ने और धातूकी वस्तुओंके बनानेके कारण प्रसिद्ध है हा सीके निकट प्रसिद्ध अयोध्या अवधपुरी है जहां श्रीराम चंद्रजीके रामायणके प्रसिद्ध पात्रने जन्म लिया था. तुलसीदासजी

२ जिला गोंडा मनुष्यसंख्या ७७५००० हैं. मुख्य गोंडा.

३ जिला बहराइच मनुष्यसंख्या ११६८००० हैं मुख्यनगर सरयू नदीके बाए किनारे पर है.

अंग्रेजीराज्य पश्चिमोत्तर अवध परगना ४ सीतापूर. कलकत्ता.

१ जिला सीतापूर मनुष्यसंख्या १३३००० है. मुख्यनगर सीतापूर. खैराबाद मुसलमानोंका प्राचीन नगर है.

२ हर्दोई मनुष्यसंख्या ९३१००० है. मुख्यनगर हर्दोई. और संदीला शहाबाद बिलग्राम. बिलग्राममें अच्छे २ विद्वान और कवी होगए हैं और संदीलामें प्रसिद्ध सूरदासजी हिंदुकवी बाद शहा अकबरके राज्यमें होगए हैं.

३ जिला खैरी अवधके वायव्यमें मनुष्यसंख्या ७३८००० हैं.

मुख्यनगर स्वैरी उत्तरमें नैपालकी सीमाके निकट प्राचीन खेरागढ है.

मध्यप्रदेश.

अंग्रेजी राज्य कलकत्ताहाता.

इसकालंबाईचोडाई यहप्रदेश १७ अंश ३० कला और २४ अंश ३० कला अक्षांश, और ७६ अंश और ८५ अंश ३० कला देशांशके मध्यमें है. अगले समयमें इसका बहुतसा भाग गोंडबानावागढा कटंगा कहलाता था मुसलमानोंके राज्यमें इसका पश्चिमी भाग मालवेके राजाके अधिकारमें था. अकबरके राज्यमें अहमद मजीद आसफखाने गोंडवानेको जीत लिया था. सीमा- यह देश चारो दिशा और रजवाडोसे घिरा हुआ है. उत्तरमें रिवाबुंदेलखंड और पश्चिमोत्तरदेश, वायव्यमें भोपाल ग्वालियर और इंदौरकाराज्य, पश्चिममें इंदौर खानदेरा और बरार, नैऋत्यमें निजामकाराज्य, दक्षिणमें कुछ निजामकाराज्य और मद्रास हाता. आग्नेयमें जयपुर एजन्सि, पूर्वमें कटक, और ईशानमें छोटानागपुर.

क्षेत्रफल और मनुष्यसंख्या- इस देशमें अंग्रेजी खास मुल्क का क्षेत्रफल ८२८७१ वर्गमील है जिसमें ८० लाख मनुष्य रहते हैं. और रजवाडोका क्षेत्रफल २६२६१ वर्गमील है. जहाँपर ११००००० मनुष्योंकी बसनी है. देशप्राप्ती सागर और नर्मदा जिले मरहटोने अंग्रेज सरकारको सन १८१८ में सौंप दिये थे और जब सन् १८५३ में नागपुरके सबसे पिछले राजारघूजीका देहांत हुआ इस समय इनके कोई संतान न होनेके कारण यह राज्य सरकारमें आ गया और यह संपूर्ण मध्यप्रदेश एक चीफ कमिशनरके अधिकारमें खरचा गया. जिनको गवर्नर जनरल साहिब बहादूरने नियत किया तबसे कुछ-और २ भी प्रदेश इसीमें आ गये हैं. और आमदनी इस देशकी एक-

करोड रुपया है. और पहाड उत्तरमे विंध्याश्रेणी सागर दमोहके जिल-
ओमे फैली हुई है यहांके जलका बहाव गंगामे पड़ता है और दक्षिणमें
सातपुडा श्रेणीका जल नर्मदा मे पड़ता है और सातपुडा श्रेणीका अने
क भागोके जुदा नाम है जैसे महादेव पहाड और पचमढी पहाड हो
शंगाबाद जिलामे मेकल बिलासपूरमे और साले टेकडीके पहाड अ
मरकंटककी उच्च समभूमिके नैऋत्यको भंडारा जिलामे इनमे अत्यं
त उंची शिखरा ये है. धूपगढ ४४५४ फूट उंची पचमढी ३४८९ फूट दो
नो हो शंगाबाद जिलामें और स्वमला ३७०० फूट उंची बैतूलमे है और
रउआमेयको उडीसा और मद्रास हातेकी और नवागढ कालाहंडी
और संबलपूरके पहाड है. इनके माटी पत्थर बहोत सुंदर है. सा
तपुडा श्रेणीमें पत्थरके कोयलेकी भारी र खाने है विशेषकर के चां
दा और छिंदवाडेके निकट प्राणहिता और नर्मदाके मध्य और पू-
र्वकी और बिलासपूर जिलामें भी इसके खाने है. नदीया महानदी
नर्मदा ताप्ती गोदावरी वर्धा और वैनगंगा ये प्रधान नदिया हैं और
महानदी रायपूरके दक्षिणसे मील २५ हैं जो मध्य प्रदेशका जंग
लीस्थान पर निकलकर बंगालकी खाड़ीमें गिरती हैं. नर्मदा नदी अ
मरकंटकसे निकलकर खंबातकी खाड़ीमे गिरती है सदासे मनुष्यो
ने इसे हिंदुस्तान और दक्षिणकी मध्यसीमा मान रक्खा है. और ता
प्ती नदी बैतूल जिलामें मुलताईके निकटसे निकलकर खंबातकी
खाड़ीमे गिरता है. और वर्धा नदी बैतूलसे निकलती है. वैनगंगाका
निकास सिवनी जिलेमें है इन दो नदीयोसे मिलकर जोधराबनी
है उसको प्राणहिता कहते है. गोदावरी नदी बंबई हातेमे नासि
कके निकट निकलती है और सिरोंचाके निकट प्राणहिताको लेती
हुई बंगालके आखातमें गिरती है.

नदियां.	ग्रामतटस्थः.
महानदी	जिला रायपूर संबलपूर सोनपूर मांडाव.
तेल द.	सोनपूर.
नर्मदानदी.	मंडला होशंगाबाद हंडिया.
बंजर.	जिला मंडला.
तवा.	जिला हुशंगाबाद.
ताप्तीनदी.	जिला बैतूल
गोदावरी.	जिला अपर गोदावरी.
प्राणहिता.	वैनगंगा. भंडारा
	वर्धा. जिला वर्धा.

आबोहवा अनेक पहाडोंके होनेके कारण इस देशकी आबो हवा और गर्मी सर्दी लेके बराबर हैं. और वर्षा ३० इंचसे ६० इंच तक होती है. और उपज दाल गेहूं धान अलसी तिल रुई सादा मसाले रेशम लारवरंग सागोन और साल पत्थरका कोयला लोहा सोना और अनेक किसमके पत्थर कपास अनाज और देशी कपडा यहांसे अन्य देशोंको भेजा जाता हैं और नमक खांड और अंग्रेजी माल अन्य देशोंसे यहांपर आते हैं. रुई हिंगनघाटसे अन्य देशोंको जाती हैं. जबलपूर और नागपूरकी रेल चलनेके कारण यहां औपारकी बड़ी उन्नति हुई है. और निवासी भाषा यहांपर मनुष्य जिनकी संख्या ५० लाख हैं. उत्तरखंडकी हिंदी भाषा बोलनेवाली जातो मेंसे हैं. मरहटे १५ लाख और उड़ीये ५ लाख इनके सिवाय २० लाख आदि जातो केलोग हैं. इनमें १५ लाख द्राविड जातिके गोंड हैं जो चांदी बैतूल छिंदवाडा सिवनी मंडलामे बहुत पाये जाते हैं. विंध्याश्रेणीके पश्चिमी भाग कोलारी भीलोंका रहनेका मुख्य स्थान हैं. कुरअथ-

बोकोलारी जाति महादेवके पहाडोमें रहते हैं मुसलमान प्रायः २५
०००० हैं.

अंग्रेजी राज्य परगना ४ राजकीय विभाग कलकत्ता.
मध्यप्रदेशमें ४ परगना और १८ जिले हैं.

१ नागपूर परगना नागपूर ३७३४ वर्ग मील. भंडारा
३९२२ वर्ग मील. चांदो ११९२६ वर्ग मील २३७९ बालाघा
ट २६०८.

२ जबलपूर परगना १ जबलपूर ४२६१. २ सागर ४००५. ३ दमोह
२४५७. ४ सिवनी ३६०८. ५ मंडला ४७१९.

३ नर्मदा परगना १ होशंगाबाद ४३०२. २ नरसिंहपूर १९१६. ३
बैतूल ४११८. ४ छिंदवाडा ३८५२ ५ नेमाड २७००

४ छतिसगढ परगना १ रायपूर ११०४३. २ विलासपूर ७१३०. ३ संब
लपूर ४२००.

इस देशमें १५ रजवाडे हैं. अर्थात् बस्तार कंरोंद रायगढ सा
रंगढ बरगढ पटना सोनपूर रैराखोल बामूरा सकृती कंबरे धा कोंद
का छुइरवदान कांकेर रैरागढ नांदगाव और मकडाई. इन रज
वाडोंमें कहीं २ राजाके अयोग्य होनेके कारण सरकारकी औरसे बं
दोबस्त हैं.

अंग्रेजी राज्य १ नागपूर परगना कलकत्ता हाता.

१ जिला नागपूर मनुष्यसंख्या ६४०००० हैं. मुख्यनगर ना
गपूर ये शहरकी मनुष्यसंख्या ८६००० हैं. नागनदीके बाएँ तीरपर
है. सिताबर्डीमें साहिब लोगोकी छावणी है. और यह नगर कपडो
के कारण प्रसिद्ध हैं. और यहांसे ४ मील कामटीकी छावणी हैं य-
ह मनुष्यसंख्या ५१००० हैं. चैनगंगाकी सहायक नदी कन्हानके

दहिने किनारे पर हैं.

२ जिला भंडारा मनुष्यसंख्या ६०८००० हैं. मुख्यनगर भंडारा वैनगंगा पर हैं.

३ जिला चांदा मनुष्यसंख्या ८६२००० हैं. मुख्यनगर चांदा ये वाणिज्यस्थान हैं. अगले समय में यह शास्त्र अध्ययन करने का स्थान था. और सिरोंचा प्राणहिता के बाए तट पर हैं. यहां एक असिस्टेंट कमिशनर रहता है.

४ जिला वर्धा मनुष्यसंख्या ३४४००० हैं मुख्यनगर हिंगणघाट. रुईकी प्रसिद्ध मंडी हैं. वर्धानगर जो थोड़े दिनों से बसा है. सदर मुकाम है.

५ जिला बालाघाट मनुष्यसंख्या १७१००० हैं.

अंग्रेजी राज्य २ जबलपूर परगना कलकता हाता.

१ जिला जबलपूर मनुष्यसंख्या ६२५००० हैं. मुख्यनगर जबलपूर प्राचीन नाम जावली पाटन. मनुष्यसंख्या ५६००० हैं. वाणिज्यबोपार यहां पर बहुत होता है. इसी के निकट प्राचीन गढ़ है जहां किसी समय गढ़ मंडला के गोंड राजाओं की राजधानी थी.

२ जिला सागर मनुष्यसंख्या ५००००० हैं. मुख्यनगर सागर. जहा ४४००० मनुष्यों की वसती है ये शहर एक सुंदर तलाब के किनारे बसा है. यहां पर एक हाईस्कूल था. जो अब जबलपूर में है और एक भारी किला भी है.

३ जिला दमोह २६३००० मनुष्यों की वस्ती है मुख्यनगर दमोह

४ जिला सिवनी ४२२००० मनुष्यों की वस्ती है मुख्यनगर सिवनी

५ जिला मंडला मनुष्यसंख्या २०३००० हैं. मुख्यनगर मंडला जिसके तीन ओर नर्मदा बहती है. यंही पर अकबर के सेनापती

अहुलमजीद आसफखाने रानी दुर्गावतीको परास्त किया था.

अंग्रेजी राज्य ३ परगना होशंगाबाद कलकत्ता.

१ जिला होशंगाबाद मनुष्यसंख्या ४४१००० मुख्यनगर होशंगाबाद नर्मदानदीके बाएतटपर हैं. इसे मालवेके राजा होशंगने सन १४०५ में बसाया था. हंडिया नर्मदानदीके बाए किनारेपर हैं ये मुसलमानोका प्राचीन नगर हैं.

२ जिलानरसिंहपूर मनुष्यसंख्या ३३७००० हैं. मुख्यनगर नरसिंहपूर सिगरी नदीपर हैं.

३ जिला बैतूल मनुष्यसंख्या २५९००० हैं मुख्यनगर बैतूल. और बैदनूर जो सदरतहसीलका मुख्यस्थान हैं इसके निकटसे रत्ना जहां अगले समयमें गोंड राजा रहा करते थे.

४ जिला छिंदवाडा मनुष्यसंख्या २९७००० हैं मुख्यनगर छिंदवाडा.

५ जिलानेमाड मनुष्यसंख्या १९१००० हैं. मुख्यनगर बुर्हा नपूर. जहां २९००० मनुष्यसंख्या हैं. ताप्ती नदीके दहिने किनारेपर हैं. इसे खानेदेशके नसीरखाने बसाया था. और दौलताबादके नामी शेख बुर्हानुद्दीनके नामसे कहलाया. यह दक्षिणके सूबेके मुगल हुकीमोकी राजधानी थी इसके निकट अशीरगढ़ हैं जिसे अकबरने परास्त किया था. खंडवा यह साहिब लोगोके रहनेकी छावणी और घेत इंडियन पेनिनशुलारेलवेकी जंक्शन हैं अगले समयमें जैन लोगोका प्रसिद्ध पूज्यस्थान था. और नर्मदानदीके तटपर उतरे मां धाता जे ओंकारेश्वर महादेव नाम प्रसिद्ध स्थान है जहांपर हिंदुजात्री बहुधा आते जाते हैं ये प्राचीन मंदिर हैं.

अंग्रेजीराज्य ४ था छतिसगढ परगना कलकत्ता.

१ जिलारायपूर मनुष्यसंख्या १३२३००० हैं मुख्यनगर रायपूर
यहांपर बड़ा व्योपार होता है.

२ जिला बिलासपूर ७०१००० मनुष्योंकी बसती हैं. मुख्यनग
र बिलासपूर अर्पानदीपर है यहां बहोतसे मंदिर हैं. यहां प्राचीन स
मयमें है हय राजाओंकी राजधानी थी.

३ जिला संबलपूर मनुष्यसंख्या ८१२००० हैं. महानदीके बा
ए किनारपर अतिलुहावना लगता है. यह जीला हीरोंकी उपजके
कारण प्रसिद्ध है.

वरार अथवा हैदराबादके परगने जो अंग्रेजोंको
दे दिये गये हैं.

यह राज्य बिषयक जे देश वरार जीला जो निजामने सन १८५३
और १८६१ इसवीके संधी पत्रके अनुसार सरकारके अपणे ऋणके
बदले सौंप दिये थे. मुगलोके राजमें वरारका और लंबाई चौड़ाई बरा
र देश ७६ अंश और अंश ७९ अंश १३ कला देशांश, और अंश १९
कला ३० और अंश २१ कला ३० अक्षांशके मध्यमें हैं. पूर्वसे पश्चि-
मतक १५० मील लंबा और उत्तरसे दक्षिण तक १४४ मील चौड़ा है.
और सीमा पूर्वमें वर्धनदी और मध्य प्रदेश, दक्षिणमें वैनगंगा औ
र निजामकाराज्य, और पश्चिममें निजामकाराज्य और खानदे-
श बंबई हाता, और उत्तरमें मध्य प्रदेशके जिले निमाड होशंगाबा
द और बैतूल हैं. क्षेत्रफल और मनुष्यसंख्या— संपूर्ण क्षेत्रफल—
१७००० वर्ग मील हैं और सन १८६१ की मनुष्यसंख्याके अनुसार
२२३०००० मनुष्योंकी बसती हैं आमदनी सन् १८६९ थी १८७०
में ७०४१०९१ रुपये थी. पर्वत पहाड— उत्तरमें गाविलगढ श्रेणी

यह सातपुडा पहाडका भाग हैं. दक्षिणमें बालाघाटके पर्वत नि
जामके राज्यमें औरंगाबादसे लेकर धैनगंगाके उत्तरी किनारे २ चले
गये हैं इन दो नु श्रेणीयोके मध्य पूर्णबादीवा पैनघाट हैं जहां की-
उपजाऊ काली धरती रेगठक हलाती हैं. नदिया- मुख्य ये हैं वर्धा
और पैनगंगा पूर्व और दक्षिणमें पूर्णानदी पैनगंगा बरारके नैऋत्यमें-
देवलघाटके निकटसे निकलती हैं इसकी सहायक नदी बार्ड और
आरन हैं. आबोहवा पैनघाट वादी की आबोहवा गरमी में दक्खिनसे
भी कुछ बढ़कर गरम रहती हैं परंतु उत्तर और दक्षिण की पहाडीयो
में अधिक समतार रहती हैं बादियोंमें २७ इंच और पहाडीयोपर ३७
इंच तक जल बरस जाता है. उपजरुई इसका बड़ा व्योषार होता है.
और अमरावती अकोट और खामगाव इसके बिकने की प्रधान मंडी
हैं और अनाज घी और रेशम यहा होते हैं. निवासी और भाषा—
२२३००००० निवासियोंमें केवल १५५००० मुसलमान हैं. अनुमान
५००००० अष्ट जातिके लोक और आदि निवासी है. और शेष हिंदू
हैं. मरहटी इस देश की साधारण भाषा है आग्नेयमें यही भाषा तै-
लंगीसे मिली हुई है. मुसलमान एक प्रकार की बिगड़ी उर्दू बोलने
हैं परंतु वहाके सब लोगो की समझमें आ जाती है. भाग पूर्वीय ब
रार और पश्चिमी बराब ये दोनों एक २ कमिशनरके आधीन हैं औ
र प्रत्येक में तीन जिले हैं.

१ इलिचपूर ३१६० वर्ग मील २ अमरावती-
प्रथम भाग पूर्वीय बरार २५६६. ३ ऊनवाबून ३९५७.

दूसरा भाग पश्चिमी बरार १ अकोला २६९८. २ बुलदाणा ६८०८
३ वासिम २४५१.

अंग्रेजी राज्य प्रथम भाग पूर्विय बरार परगना कलकत्ता हाता.

१ जिला इलिचपूर मनुष्यसंख्या २१६००० हैं. मुख्यनगर इलिचपूर. मुसलमानोंके राज्यमें पहिले प्रसिद्ध नगर था और मेलघाट विभागमें गाविलगढ और नरनालके प्रसिद्ध दुर्गबने हैं. और चिकल्दा अंग्रेजोंके रहनेकी छावनी ३७७७ फूट उंची हैं.

२ जिला अमरावती मनुष्यसंख्या ५३६००० हैं. मुख्यनगर अमरावती बरारमें सबसे धनाढ्यनगर हैं यहांपर रुईका बड़ा ब्यौपार होता है. इनके सिवाय गाम बडनरा और मुर्तीजापूर.

३ जिला ऊन मनुष्यसंख्या ३४३००० हैं.

दूसरा भाग पश्चिमी बरार.

१ जिला अकोला मनुष्यसंख्या ४८८००० हैं. मुख्यनगर अकोला. यहां रुई और शतरंजीका बड़ा ब्यौपार होता है. खामगांव बरार देशमें रुईकी सबसे बड़ी मंडी हैं. बाळापूर और आरगांव जहाँ वैल्सलीनें मरहटोंका सन १८०३ में पराजित किया था.

२ जिला बुल्दाना मनुष्यसंख्या ४००००० हैं. मुख्यनगर बुल्दाना और देवलगाव इस जिलेके अमेयमें लुनार ज्जील हैं. इसके किनारे २ चारों तरफ ५०० फूटसे भी उंची पहाडीया हैं. इसमें नमक और स्वार उपजता हैं.

३ जिला वासिम मनुष्यसंख्या २७२००० हैं.

अंग्रेजी राज्य मद्रास हाता.

मद्रास हाता रासकुमारी वा ८ अंश ४ कला उत्तरीय अक्षांश से लेकर उडीसाकी सीमा परगंजम जिले वा २० अंश १८ कला अक्षांश तक और ७४ अंश १ कलासे ८५ अंश १५ कला देशांतर तक

फैला हैं. इसकी अधिकसे अधिक लंबाई अनुमान १५० मील हैं. और अधिकसे अधिक चौड़ाई ४५० मील हैं. पश्चिमी किनारे यह हाताकानडामें कुंड पूर तक चला गया हैं. अद्यपि बंगाल अथवा बंबई की अपेक्षा यह देश समुद्र के तट बहुत लंबा चला गया हैं. परंतु यहां पर भारी जहां जो के लिये कोई अच्छा बंदर स्थान नहीं हैं और सीमा उत्तरमें बंबई हाता है दराबाद मध्य प्रदेश और उड़ीसा, पूर्वमें बंगाल का अखात और पाक मुहाना, दक्षिणमें हिंद का महासागर, और पश्चिममें अरब समुद्र हैं. और क्षेत्रफल और मनुष्य संख्या - क्षेत्रफल १८४००० वर्ग मील जिसमें से अनुमान १२६००० वर्ग मील में अंग्रेजी राज्य हैं सन १८७२ की गणती प्रमाण मुख्य नगर मद्रास इसमें ४५०००० मनुष्य रहते हैं और मद्रास हाते की ३०४६१९५० मनुष्य संख्या थी १५५०००० मुसलमान हैं और ४१५००० क्रिस्ती हैं. और शेष हिंदू और आदिजात हैं. आमदनी सन १८७० में ७०५९०१७० रुपये की थी और देश प्राप्ती अगले समयमें किसी राजाने थोड़ी सी धरती अंग्रेजों को दे दी थी. इसी पर इन्होंने सन १६३९ में एक किल्ला सेंट जार्ज नाम का बनाया. यही मद्रास नाम बड़े नगर के बनने का आरंभ हुआ. क्लार्क ने जो उत्तरीय सरकार अर्थात् गंजम विजगा पट्टण गोदावरी और कृष्णा के जिले फरासि सीयों से ले लिये. तदनंतर दिल्ली के बादशाह ने इन्हें अंग्रेजों ही को दे डाला अर्काट के नबाब ने सन १८०१ में नेलूर सौंप दिया. त्रिचनापल्ली और कर्नाटक भी उसी साल में अंग्रेजों के अधिकार में आये. सन १८५९ तंजौर सरकार में मिला लिया गया. कडपा बल्लारी और कर्नूल का कुछ भाग निजाम ने दे दिये हैं. इसी कारण इन तीनों को अर्पित जिले कहते हैं. और कर्नूल का पश्चिमीय अर्द्ध भाग सरकार ने अपने अधिकार में कर लिया. इसका कारण यह था की नबा-

बने भी अफगानोकी लडाईके समय बलवा भचानेकी तय्यारी करी थी दिपु सुलतानने सन १७९२ में अंग्रेजोको सुलूरव सौप दिया. और भी सन १७९९ में कोमतूर सरकारको मिला. और मलेवार पहिले हैदरसे छीन लिया गया था. परंतु पश्चात् १७९२ में सौप दिया था. और कुर्ग में- राज्यका बंधेज बिगडा और सर्वत्र कलह मचने लगा उस समय अर्थात् सन १८३४ में इसे सरकारने अपने अधिकारमें कर लिया.

आबोहवायहांकी प्रायः अधिक उष्ण हैं. परंतु कर्नाटकनेलूर अर्काट मद्रास त्रिचनापल्ली तंजौर तिनेवल्ली और वालाघाट अथवा अर्पित जिलेमें और भी अधिक गर्मी पडती हैं पश्चिमी किनारे पर सामयिक वायु अधिक वहता हैं. और नदीचाई शानमें ऋषिकू लिये बंगालकी आखातमें गंजमके निकट गिरती हैं. बंगसधारा भी इसी आखातमें कलिंगापटमके निकट गिरती हैं. इसीके पास नगुल नदी भी उडीसासे वहकर आती हैं. इससे आगे बढ़कर दक्षिणमें गोदावरी और कृष्णाके अनेक डेल्टाओंसे बड़े २ जिलोंको जल मिलता हैं. कर्नाटकमें गुंडलकामा पूर्वी घाटसे निकलती हैं. पनार पलार और दक्षिणी पनार म्हेसूरके पूर्वसे निकलकर बंगालके आखातमें गिरती हैं. भवानी नोयल और अमरावती इसकी सहायक नदिया हैं. कावेरी नदी पश्चिमी घाटसे निकलकर आग्नेयको वहती हैं त्रिचनापल्लीके पास इसकी अनेक शाखा फूटी हैं जिनमें कोलरु न मुख्य हैं विग ताम्रपर्णी उससे छोटी हैं. कोलरु न पश्चिमी घाटसे निकली हैं. और विग और ताम्रपर्णी त्रिवंद्रमकी सीमासे निकलकर एकपाक मुहानेमें और दूसरी मनारकी खाडीमें गिरती हैं. और पर्वत नगरी पहाड उतरी अर्काटमें, बरागिरी अथवा पलनी पहाड मडुरामें, और कडपा पहाड कडपा और नेलूरके मध्यमें हैं और

निलगिरि शिवालय और तिनवल्ली जिले के पश्चिमी घाट आरोग्यस्थान गिने जाते हैं. और बंदरस्थान पूर्वीय किनारे पर प्रधान बंदरस्थान-ये हैं. गंजम मन्सूर कोटा गोपालपूर कलिंगापटम बिमलीपटम विजगापटम कोकिनाडा मच्छलीपटम मद्रास कडलूर त्रांक्षिबार निगापटम और नागोर तुतिकोरिन् और पश्चिमी किनारे पर कोचीन कलीकट और बेपूर तिलीचेरी कनानूर और मंगलूर हैं. उपज धान सर्वत्र उपजता है. परंतु गोदावरी और कृष्णा नदीयों के डेल्टों में और तंजौर मलबार और कानडामें इसकी विशेष उपज होती है और ज्वार बाजरा निलतमाकू विशेषकर त्रिचिनापल्ली और कोकिनाडा में और सांठा भी सब जगह होता है नारियल आदी ऐसे वृक्ष समुद्र के किनारे और रेतीले जिलों में बहुत उगते हैं. कडपा कर्नूल बल्लारी और तिनवल्ली में कपास की बड़ी उपज होती है नील कडपा और नेलूर में बहुत होता है और काफी की उपज पलनी शिवालय नीलगिरि और कुर्ग के पहाड़ों पर विशेष होती है. जहां चहा और सिंकोना के वृक्ष भी बहुत उपजते हैं. गोल मिरच और बड़ी इलायची पश्चिमी किनारे पर विशेष फलती हैं. इस प्रदेश के संपूर्ण पर्वत जंगलों से ढके हुए हैं जिनमें नाना भांतिकी औषधी रंग गोंद और अनेक प्रकार की लकड़ी होती है जैसे सागोन साल सीसम खैर और चंदन फल सर्वत्र बहुत होते हैं और कच्चा लोहा कई स्थानों में मिलता है परंतु दक्षिणी अकटि और मलबार में बहुत मिलता है. और लोहे के कारखाने बैपूर में हैं मंगनीज मैसूर और निलगिरी में बहुत मिलता है. और कच्चा तांबा नेलूर और पूर्वी घाट में, मंगनिशिया सेलम में, सुर्मासीसा और कच्ची चांदी मैसूर में, हीरे और याकूत गोदावरी और कृष्णा जिलों में कभी कभी मिलते हैं. और नमक विशेषकर समुद्र और खारी जिलों का पा

नी उबालनेसे और सुरवालनेसे बनता हैं.

और निवासी ब्राम्हण इसहातेमें बहुत हैं विशेषकर तंजौरमें इतने होंगे जितनेकी भरतरबंद और किसीभी भागमें न मिलेंगे. मल बार और त्रावनकोर ब्राम्हण जिसकू नंबूरी कहलाते हैं और परदेसी ब्राम्हणोंसे जातिमें श्रेष्ठ समझे जाते हैं. नैर लोग शूद्र हैं और अपने को ऐसा समजते हैं की हम जन्महीसे सिपाही होते हैं. विवाह काज इनमें नहीं होते और बड़े लंपट होते हैं. ये लोग किसी समय इस देश के राज्यकर्ता थे. और मलबार और दक्षिणीय कानडा कुर्ग और त्रावनकोरमें बहुत बसते हैं. मलबारके तियर लोग खेती वाडी कर ते हैं और नैदी भ्रमणकारी कुजाती हैं इन लोगोंमें कुजाति अथ वाजातीसे निकाले हुओंको पैरिया कहते हैं. और जैनमतवाले दक्षिणी कानडा बहुत हैं और मुसलमानोंमें कहीं २ पठान हैं. जैसे कर्नूलमें और कहीं २ मोपला अथवा मापिला जो मलेबार और दक्षिणी-कानडामें रहते हैं. मोपलावर्गके मुसलमान सुन्नी होते हैं और कहते हैं की ये लोग अरबके परदेशियो और नैरकी स्त्रियोंकी संयोगसे उत्पन्न हुए हैं. ये लोग उद्योगी परंतू अति हिंसक और स्वधर्म उन्मत्त होते हैं और कारोमंडल किनारेके लुब्धजातिके मनुष्योंसे मिलते हैं और सिरीयाके क्रस्तान लोग मलबारमें हैं इनको यहां रहते हुए अनुमान १५०० वर्ष हुए हैं. पुर्तगालवालोंने इनमेंसे बहुत रोक जो बरीसे रूमीयमत धारण कराया और सिरीयाके क्रस्तान और रूमीयमतवाले क्रस्तान मलेबार कोचीन त्रावनकोरमें ३००००० रहते हैं. और आदिजातोमें खोंड उडीसाकी सीमापर गुमसूरमें रहती हैं. यनदी नेलूरके तटस्थ जंगलोंमें बसते हैं और बड़े इमानदार होते हैं. पोलियार मदुरामे ये कोर विरजातिके दास हैं. और इलाखा

और जानार तामील मेताडी बनानेवालोंको कहते हैं. तिनेवल्ली और दक्षिणी त्रावनकोरमें रहते हैं भूतादिकी पूजा इनके धर्मका मार्ग है और रावणको अपना ईश्वर तुल्य राजा मानते हैं. इनमेके बहुतसे ऋस्ता होगये हैं. और निलगिरी पहाड़ोंके पश्चिम भागमें अपूर्वजाति बसते हैं जैसे इरुल्लर कुरुंबर कोहतर बदकर और तुडाजातिके लोग उंचे और सुंदर और कोहतर जातिके उद्योगी और परिश्रमी-होते हैं बंदकर हिंदु हैं और कानडी भाषाबोलते हैं.

देशभाषा- तिलंगी भाषा उत्तरमें गंजम जिलासे लेकर दक्षिणमे पल्लीकाट और पश्चिममें बल्लारीके जिलेतक बोली जाती है. तामिल भाषा उत्तरी अर्काटके दक्षिण भागमे बोली जाती है और मद्रास और दक्षिणी अर्काट त्रिचनापल्ली तंजौर मदुरा तिनेवल्ली सेलम कोयंबतूर और दक्षिणीय त्रावनकोरके जिलामें इसी भाषाको सर्वत्र लोग बोलते हैं. और कानडी भाषा बल्लारी में सूर कुर्ग और कानडामें बोली जाती है. और मले भाषा मलबार और उत्तरीय त्रावनकोरमें बोली जाती है. हिंदुस्तानी और अंग्रेजी सर्वत्र बोली जाती है.

मद्रास हातेके अंग्रेजी जिले.

अंग्रेजी राज्य अंग्रेजी परगनाके नाम मद्रास हाता.

मद्रास हातेके भाग परगना १९ मद्रासके गवर्नर साहिब बहादूर और उसकी सभाके आधीन हैं. देशी और राज्य प्रबंधके अनुसार जोरजवाड़े इससे संबंध रखते हैं ये हैं- कोचीन त्रावनकोर पुदुकोटा और जयपूर एजन्सिके राज्य.

अंग्रेजी १९ परगना.

१ मद्रास

२ गंजम

३ विजिगापटम

४ गोदावरी

५ कृष्णा

६ नेलूर

७ उत्तरी अर्काट	११ मदुरा	१५ बल्लारी
८ दक्षिणी अर्काट	१२ तिनेवेल्ली	१६ सेलम
९ त्रिचनापल्ली	१३ कडपा	१७ कोयंबतूर
१० तंजौर	१४ कन्नूल	१८ मलबार
१९ दक्षिणी कानडा.		

गंजम विजिगापटम गोदावरी और कृष्णा इन सब जिले को मिलकर एक नाम सरकार हैं. नीचे के आठ जिले अर्थात् नेल्लूर मद्रास उत्तरीय और दक्षिणीय अर्काट त्रिचनापल्ली तंजौर मदुरा ये कर्नाटक के नाम से प्रसिद्ध हैं और कडपा कन्नूल और बल्लारी अर्पित जिले कहे जाते हैं.

१ मद्रास परगना.

क्षेत्रफल ३१०० वर्ग मील मनुष्यसंख्या मद्रास नगर को छोड़कर ६७५००० हैं मुख्य नगर मद्रास क्षेत्रफल ३० वर्ग मील हैं और मनुष्यसंख्या ४५०००० है. यहां गवर्नर साहिब के बहादूर के रहने का स्थान है. यहां पर एक सरकारी कोठी के ई गिर्जाधर एक टंक साब-दीपक गृह अजायब घर नक्षत्रादि देरवने का स्तंभ और एक सरकारी रमणा एक मोटा कालेज जिसका प्रेसिडेन्सी नाम है. और अनेक मदरास विद्यालय हैं और मद्रास वाणिज्य ब्यौपार के लिये उपयुक्त स्थान में नहीं वरना हैं क्योंकि प्रथमतो जहाज समुद्र के किनारे तक नहीं पहुंच सकते हैं और दुसरे लहरो के कारण किनारे पर मालका उतरना बहुत कठिन पड़ता है. परंतु यहां का ब्यौपार युरोप ब्रम्हाभो रेशस और सुहाने की बस्तियों से बहुत हुआ करते हैं इस नगर के जिस भाग में मद्रासी रहते हैं उस सबका नाम ब्लैक टौन वा कालीपुरी हैं. पहले के पहिले अंग्रेज लोग आर्मेगन में ठहरे थे परं-

सन् १६३९ में थोड़ीसी धरती मिलनेपर इन्होंने सेंटजार्जका किला बनाया और वही जाबसे मद्रासी लोग इसे चेन्नापटनम् कहते हैं और आर्मेगन अथवा दुर्गरज पटनम् मद्राससे ३६ मील उत्तरमें पल्लीकाट ज्जील पर बसता है और इस किनारे पर यही प्रथम स्थान है जहां अंग्रेज लोग सन् १६२५ में आये वैसे थे और मद्रास जिसमें मद्रासके गवर्नर साहिब बहादुर दरबार करते हैं और सड़क बजार है जहां मारवाडी सेरीया व्यापारकर्ता हैं और बी इस जिलामें मुख्य नगर ये हैं चिंगलपट यहां पर एकरमणीय ताल है. काचीपुर पलार नदीके बाएतट पर बसता है जो किसी समय कोलाके हिंदुराजा ओकी राजधानी थी और मद्रास पल्लीकाट जो पहिले डच लोगेके अधिका रमें थे सन् १८१९ में अंग्रेजोंके आधीन हुए मद्रासके निकट महाबली पूर यहां मंदिर हैं. इसके निकट त्रिपलूरका भारी पगोडा मंदिर बना है. पलवर यहां छावनी है. एन्नूर मद्रासके ६ मील उत्तरमें है. यहां पर लूननमक बनता है

अंग्रेजी राज्य गंजम २ परगना मद्रास हाता.

क्षेत्रफल ७७५७ वर्ग मील मनुष्य संख्या ११३७००० हैं. मुख्य नगर चिकाकोल नगुला नदीके बाए तीर पर यहां मलमल बनानेके कारखाने हैं. इसी नदी पर आगे बढ़कर अस्का बसता है जो खांडके कारण प्रसिद्ध है. और गंजम ऋषिकूलिया नदीके बाए तट पर है और मन्सूर कोटा कलिना पटम वंगस धारा नदीकी दहिनी तट पर है और समुद्र तटस्थ ग्राम ये हैं गुमसूर उत्तरमें यहां लठ्ठोका बड़ा व्यापार होता है. रस्सल कोंडा पहाडको कहते हैं यहां छावनी है. बर्हामपूर सेनाका स्थान है और रेशमके कारण प्रसिद्ध है.

अंग्रेजीराज्य विजगापट्टण ३ परगना. मद्रासहाता.

क्षेत्रफल ९९५५ वर्गमील मनुष्यसंख्या १४१५००० हैं इस जिलेमें भारी २ जमिदारियां हैं. मुख्यनगर विजगापट्टम यंहानकंशी और कलावतूका कामेके लिये प्रसिद्ध हैं. बिलीपतन एक बंदरस्थान हैं विजगापट्टमके ईशानमें विजयानगरमें एक किल्ला हैं.

अंग्रेजीराज्य गोदावरी ४ परगना मद्रासहाता.

क्षेत्रफल ७५३४ वर्गमील मनुष्यसंख्या १३६७००० हैं. गोदावरीका डेल्टाकी धरती बड़ी उर्वरा हैं. खेतोंके सिंचनेके लिये दोलेस्वर के नदीका जल रोक रखनेके हेतू एक बंध बांध दिया हैं निर्मलजलकी कोलूर ज्जीलका कुछ भाग तो इस जिलामें और कुछ दूसरे जिलामें हैं. गोदावरी नदीपरके द्वीपमें विशेषकर तमाकू उपजती हैं और इनको लंका कहते हैं. मुख्यनगर राजमहेंद्री गोदावरी नदीके बाए किनारेपर यहां सूती और रेशमी कपडोंकी बड़ी विक्री होता है. कोरिंगा वाणिज्यस्थान हैं. इस संपूर्ण किनारेपर प्रचंड वायू बहाकरती हैं. कोरिंगासे ६ मील यानान इसमें फरासिंसियोकी बसती हैं मदापोलममें सूती कपडे बहुत बनते हैं. कोलूर ज्जीलके निकट एलूरमें गालिचे बनते हैं यूनानी लोग गोदावरीको मयसोलसकहते थे इस नदीको गौतमी गंगा भी कहते हैं

अंग्रेजीराज्य कृष्णा ५ परगना मद्रासहाता.

क्षेत्रफल ८३५३ वर्गमील मनुष्यसंख्या ११९५००० हैं मुख्यनगर मच्छली पट्टम वा मच्छली बंदर कृष्णा नदीकी शाखाके बाए तटपर यहां छीट और नास हुलासका बड़ा व्यापार होता हैं बैजवारा कृष्णानदीके बाए किनारेपर प्रसिद्ध पर्वस्थान हैं यहां

एक भारी बांध भी हैं. गंतूर मनुष्यसंख्या २०००० हैं. कोंडापिल्ली औ बिनुकोंडा दोनी पहाड़ी गढ हैं. एलूस्के पश्चिम कोलूर ज्जील हैं और - कृष्णानदीके मध्यरेतमें हीरे पाये जाते हैं यूनानी लोग कृष्णाको ति ना कहते थे.

अंग्रेजीराज्य नेल्लूर ६ परगना मद्रास हाता.

क्षेत्रफल ८३४१ वर्गमील मनुष्यसंख्या १०००००० हैं यह जिला आधेसे भी अधिक उजड और जंगली हैं. मुख्यनगर नेल्लूर मनुष्यसंख्या २४००० हैं. उत्तरीय पनारके दहिने किनारे पर नुंगोला हैं.

अंग्रेजीराज्य उत्तरीय अर्काट ७ परगना मद्रास हा.

क्षेत्रफल ७५२६ वर्गमील मनुष्यसंख्या १६५५००० हैं. मुख्यनगर अर्काट पलारनदीके दहिने तट पर किसी समय वहां पर कर्नाटकेन बाबकी राजधानी थी सन् १७५१ में क्लार्डने ५०० मनुष्योंकी सहायतासे इस गढ को लिया था जो खंडेरा पडा हैं. तदनंतर चंदासाहिबके आक्रमणसे साहसपूर्वक इसको बचाय अर्काटके दक्षिणमें अरनीस्थान पर उसे पराजित किया. आर्काटरुपया अर्काटके नाम से कहलाता हैं नेल्लूर मनुष्यसंख्या ५१००० हैं. पलारनदीके दहिने तट पर बसता हैं यहां पर एक गढ राज्य संबंधी हैं यहां कारागार और श्रीकृष्णजीका सुंदर मंदिर हैं सन् १८०६ में हिंदुस्थानी सेनाने यहां पर बलवा मचाया था और अंग्रेजोंका ११३ संहार किया चितूर मद्रासके पश्चिममें पलारकी सहायक नदी पोइनी पर बसता हैं यहां पर एक गढ हैं त्रिपेती इस जिलाके उत्तरमें हैं यहां पर श्रीविष्णुका प्रसिद्ध मंदिर हैं जहां यात्री बहुधा आया जाया करते हैं वांदेवारा जिसका कर्नाटककी लडाइयोंमें बहुधा वर्णन किया जाता हैं पलारनदीके पर अर्काटके निकट बालाजाह नगर यहां पर सूतीक पडो बहुत

बनाये जाते हैं।

अंग्रेजीराज्य दक्षिणीय अर्काट ८ परगना मद्रास.

क्षेत्रफल ४७६५ वर्गमील मनुष्यसंख्या १२२९००० हैं मुख्य नगर कडालूर समुद्रके किनारे पर बसता है। इसके समीप किला जि नको सरकार सन १६९१ में मोल ले लिया था यहां पर किसी समय- कारो मांडल किनारेके अंग्रेजी अधिकारियोंकी राजधानी थी और- जिज्जी कडालूरके वायव्यमें पहाड़ी गढ हैं जिसके लिये कर्नाटकमें अनेक लडाईया हुई थी इस जिलामें पांडिचरी फरासिसीयोकी ब स्ती हैं। कडालूरके दक्षिणमें पोर्टो नोवो समुद्रके किनारे पर बसता- हैं इसे सन १७८० में हैदर अली ने जला दिया था। इसीके निकट चल मवरम हैं जहां पर भरतखंडमें सबसे पुराने और सुंदर कुछ मंदिर हैं

अंग्रेजीराज्य त्रिचिनापल्ली ९ परगना मद्रास हाता.

क्षेत्रफल ३०८७ वर्गमील मनुष्यसंख्या ९४०००० हैं मुख्यन- गर त्रिचिनापल्ली कावेरी नदीके दहिने तट पर बसता है यहां एक गढ हैं और जवाहरतकाठी चुट्टा और धातू निर्मित वस्तुओंका बड़ा ब्यौ पार होता है। इसके निकट श्रीरंगम सरिधमका द्वीपका कावेरी से बना है यहां पर प्रसिद्ध मंदिर हैं जहां श्रीरामानुजसंप्रदायका कुल का जन्म भूमिका है यहां श्री बैष्णवलोगयात्री बहुधा आया जाता क रते हैं। कहते हैं की श्रीरामचंद्रजी लंकाको जाते समय यहां पर वह रथे जीसे मोटा तीर्थस्थान कहते हैं।

अंग्रेजीराज्य तंजौर १० परगना मद्रास हाता.

क्षेत्रफल ३७३६ वर्गमील मनुष्यसंख्या १६५३००० हैं मुख्य नगर तंजौर मनुष्यसंख्या ९०००० कावेरी नदीकी शारवाके निकट हैं यहां पर रेशम मलमल और सूती कपड़ोंका बड़ा ब्यौपार होता है।

प्राचीन समयमें हिंदुशास्त्रके अध्ययनका स्थान था. कहते हैं की यहां एक बड़ा मंदिर २०० फूट ऊंचा है जो हिंदुओं की कारागिरिका अत्युत्तम नमूना है पाद्री स्वार्लस साहिब यहारहते थे कुंभकोनम तंजौरको ईशानमें प्राचीन नगर है यहां साधु संत बहुधा दर्शनों को आते हैं और त्रांक्विवार मनुष्य संख्या २५००० समुद्रके किनारे परके नगर है और इनमें रुई धान का व्यापार हुआ करता है त्रांक्विवार सन १८४५ में डेन लोगोसे मोल लिया गया था इसके दक्षिणमें फ्रांसिसीयो की बस्ती करीकल है मयवरम त्रांक्विवारके वायव्यमें तीर्थस्थान है.

अंग्रेजी राज्य मदुरा ११ परगना मद्रास हाता.

क्षेत्रफल ८७९० वर्गमील मनुष्य संख्या १८५७००० हैं मुख्य-नगर मदुरा विगनदीके दहिने किनारे पर मदुराके प्राचीन राज्यकी राजधानी है और दक्षिणी भरतखंडमें विद्याभ्यासका मुख्यस्थान है कपडे और पीतलके पात्रोंको कारण प्रसिद्ध है इसके वायव्यमें और पलनी पहाड़ोंके निकट दिंदिगल बसता है यहां की आबौहवा बहुत अच्छी है रामनद विगनदीके मुखके समीप है यहां में टोसुती कपड़ों का व्यापार होता है. इसके पूर्वमें रामेश्वरका द्वीप और नगर है यहा एक उत्कृष्ट मंदिर है जहां यात्री बहुधा आया जाया करते हैं पांवेननाली रामनद और रामेश्वरके बीचमें है इस नालीमें बड़े बड़े जहाजोंके चलने योग्य मार्ग बनाने का काम सरकारने अपने हाथमें लिया है सेतुबंध रामेश्वर मरेत और चटानो की सकरी में ड रामेश्वरम द्वीपके पूर्वानोकसे मनारके द्वीप तक पुलसा है यह लंकाके आधीन है जिला मदुरामें पुदुकोटाका सजवाडा एक राजाके आधीन है जिसे तो दिमान कहते हैं.

अंग्रेजी राज्य तिनेवली १२ परगना मद्रास हाता.

क्षेत्रफल ५१४४ वर्गमील मनुष्य संख्या १६७०००० हैं यह जिला भरतरवंडकी अत्यंत पश्चिमी कलकटरी हैं ताम्रपरनी मुख्य नदी हैं मुख्य नगर तिनेवली मनुष्य संख्या २५००० है ताम्रपरनी नदी के बाएतटके निकट हैं इसके समीप पालियम कोटा से नाका स्थान हैं और पश्चिमी पहाड़ों में कुट्टालम यहां सुंदर और बड़े रज्जुरने हैं जहां आरोग्यस्थान समज्जुकर लोगोका बहुधा आवागमन रहता है इससे थोड़ी सी दूर पर तेनकाशी अर्थात् दक्षिणी काशी अथवा बनारस तीर्थस्थान हैं. तुतिकोरिन समुद्र के किनारे पर अगले समय में डच लोगो की वस्ती थी यहां पर मोती निकलते हैं. और रुई शंख का व्योपा रहता है. त्रिचेदूर तुतुकुरी के दक्षिण में हैं यहां एक बड़ा मंदिर है.

अंग्रेजों को जिले जो दे दिये गये हैं.

नीचे लिखे तीन जिले जो अंग्रेजो को मिले हैं नेल्लूर जिला के पश्चिम में हैं और कृष्णा और इसकी दहिनी शारवा तुंग भद्रा इसकी सीमा पर हैं और उत्तर की और हैदराबाद से और पश्चिम की और वं बई हाते से इन जिलो को अलंग करती हैं मुख्य नदी या हुगिदी तुंग भद्रा की दहिनी और की सहायक नदी हैं और उत्तरी पनार कडपा में दान पर बसता है यहां के रेवतो की धरती काली हैं जिसको मोटा की धरती बोलते हैं परंतु कन्नूल और बल्लारी पहाड़ी जिले हैं.

अंग्रेजी राज्य कडपा १३ परगना मद्रास हाता.

क्षेत्रफल ९१७७ वर्गमील मनुष्य संख्या १०५१००० हैं मुख्य नगर कडपा पनार की दहिनी सहायक नदी वागवंका के किनारे पर बसता है.

अंग्रेजी राज्य कर्नूल १४ परगना मद्रास हाता.

क्षेत्रफल ७४७० वर्गमील मनुष्यसंख्या ७२६००० हैं मुख्यनगर कर्नूल मनुष्यसंख्या २०००० हैं तुंगभद्रानदीके दहिने तट पर हैं. इसकी सहायक नदी हान्द्री भी यही मिली हैं अगले समयमें कर्नूलके नबाबोंका यही राज्यस्थान था.

अंग्रेजी राज्य बल्लारी १५ परगना मद्रास हाता.

क्षेत्रफल ११४९६ वर्गमील मनुष्यसंख्या १२३५००० मुख्यनगर बल्लारी मनुष्यसंख्या ३५००० यहा चटान पर एक गढ़ बना हैं बल्लारीके पूर्वमें गूटी दृढ पहाड़ो पर स्थित हैं संपूर्ण जिलेमें बड़े पथरकी अनगणित और अति विशाल वृक्षहीन चटाने हैं जो कहीं २ एका एकी धरतीके नीचेसे निकलकर उपरको बढती हुई चली गई हैं.

अंग्रेजी राज्य सेलम १६ परगना मद्रास हाता.

यह जिला दक्षिणी अर्काट और त्रिचनापल्लीके पश्चिममें हैं क्षेत्रफल ७६१७ वर्गमील मनुष्यसंख्या १५००००० हैं मुख्यनगर सेलम कावेरीकी बाई और की सहायक नदी तिरोमनीके तट शिचारय पहाड़के करार पर १०७० फूट ऊंचा बसता हैं यहा पर सूती और रेशमी कपडे बनते हैं काफी चहा बिलायती मेवे तमाकू इत्यादि पहाड़ो पर उगती हैं ये रकद प्रधान पहाड़ी बसती ४५०० फूट उंची बसती हैं.

अंग्रेजी राज्य कोयंबतूर १७ परगना मद्रास हाता.

क्षेत्रफल ८४१७ वर्गमील मनुष्यसंख्या १२१६००० हैं मुख्यनगर कोयंबतूर रेलके समीप नीलगीरी पर्वतके तले नोयलनदीके निकट बसता हैं इसके दो मील नैर्ऋत्यको पत्तुरामें प्रसिद्ध प्राचीन मंदिर हैं जिसे मेलचिंतंन्र कहते हैं दारापूर अमरावती नदीके बाएँ तटके निकट और भवानी कदल और कावेरीके संगम पर यहां भी दो बड़े मंदिर हैं.

इस जिलेके पश्चिममें निलगिरि पर्वत हैं अत्यंत उंची चोटी हैं समुद्र के जलसे ८६०० फूट उंची हैं उटक मंड मनुष्य संख्या ५७००० हैं मनोहर स्थान ७३०० फूट उंचा हैं यहां पर अंग्रेजोंका आवागमन रहा करता हैं इसीके निकट कन्नूर कोटर घेरी और वेल्लिंगटन और २ नगर हैं इरोद कावेरी नदीके दहिने किनारे पर हैं हैदर अल्लीने सन १७६९ में धोरवा देकर ले लिया था रेलके संगम होनेने प्रसिद्ध स्थान गिना जाता हैं।

अंग्रेजी राज्य मलबार १८ परगना मद्रास हाता.

मलबार और दक्षिणीय कानडाके जिले भरतखंडके पश्चिमी-किनारे पर वसता हैं पश्चिमी घाट पूर्वकी ओर मैदानोंमें से बंडे बेगसे निकलकर ५००० और ६००० फूट उंचे उठ गये हैं इन पर सुशोभित वृक्षके जंगल डटे हुए हैं इस परकी घाटिया बड़ी ढालू और अति सुंदर है घाटके उपर जो मलबारका भाग हैं उसे बैनाद कहते हैं और इसमें चंदनकी लकड़ी उतम बड़ी इलायची और काफी उपजती हैं कानडा गीक घाटका नीचे २ बसा हैं मलबार अथवा मलीवार कहते हैं और मलबार में ये जाते रहती हैं ब्राम्हण नैर तियर मापिल्ला इसाई यहूदी युरोपीय और विदेशी एशियाई ये सब ब्यौपार और किसानीका काम करते हैं

क्षेत्रफल ६२५९ वर्ग मील मनुष्य संख्या १७१०००० मुख्य नगर कनानूर बंदर स्थान जहांगरम मसाले अनाज और नारियल का ब्यौपार होता हैं लक्ष द्वीप कनानूर के राजाके अधिकारमें हैं जो जातिकामा पिल्ला हैं इन द्वीपोंमें नारियल बहुत होते हैं इसके दक्षिणमें तिल्ली चेरी मनुष्य संख्या २०००० हैं समुद्रके किनारे अति शोभायमान बसा हैं माही फरासिसियो की छोटी सी बसती हैं कल्ली कोटमें मनुष्य संख्या १५००० हैं पुर्तगाल वाले और मापिल्ला जातिके लोग बहुत बसते हैं सन १४९८ में जब वास्को डी गामा यहां पर आया था

उससमय कल्लीकोट किसीराज्यकाराज्यस्थानथा. जिसेजमुनि
न अथवाजैमोरिनकहतेथेसन १५१३ में पुर्तगालवालोंनेयहाएक
गढबनाया औरसन १६१६ मेंअंग्रेजोंनेएक कोठीखाडीकी बेपूरकल्ली
कोटके दक्षिणमें हैं यहासेएकरेल निकलकर ४०५ मीललंबी मद्रासतक
चलीगई हैं यहांपरकच्चालोहा शोधाजाताहैं इसके दक्षिणमेंपौनानी
पनियानीनदी मुहानेपरहैं यहांतंगल मापिल्लोंका मुख्यपुजारीरह-
ताहैं इसके पूर्वमें पालघाटचेरी पनीयानीकी सहायक नदीपालपरहैं
जो प्रसिद्ध पालघाट फाकमें बसताहैं यहांपर एकगढ हैं वैनादकीउ-
च्चसमभूमी १००० वर्गमील इसके दक्षिणमें निलगिरी पर्वतहैं पूर्वमें
महेंसूर पश्चिममें घाट औरउत्तरमें कुर्गहैं यहांकाफीकी खेती बहुत
होतीहैं और चंदनके वृक्ष दालचिनी बडीइलायची और जायफल
भी बहुतायतसे उपजतेहैं. मुख्यनगर मनंतवदी सुंदरस्थानपरबसा
हैं और यहांपर चहा काफीकी खेती करनेवाले साहिबलोग बहुधा आ-
या जाया करतेहैं एकछोटीसी खाडी मलबारके दक्षिणमें आरंभहोकर
पश्चिमी किनारे सीधमें त्रावनकोरतक अनुमान २०० मीलताईच-
लीगई हैं.

अंग्रेजीराज्य दक्षिणीकानड १९ परगनाम- द्रासहाता.

क्षेत्रफल ४२०५ वर्गमील मनुष्यसंख्या ७९०००० हैं यहजिलाम
लबारके उत्तरमें है परंतु यहाएकभी अच्छाबंदरस्थान नहींहैं मुख्य
नगर मंगलोर मनुष्यसंख्या २०००० हैं बोलरनदीके मुहानेकी दहि-
नीहैं इसके और समुद्रके बीचमें एक उंची रेती लीटीहैं हैदर और
टिपूके समयकी लडाईयोंमें इसनगरपर कईबार चढाईया हुई नि-
दान सन १७९७ में यहनगर अंग्रेजोंके हाथमें आया इसीके समी-

पस्थकादिरीपहाडपर जैनमतका एक मंदिर शेरव फंरीदकी दरगा ह और कनफट्टे बैरागियोके महतके रहनेका स्थान हैं कुंडपूर उत्तर- में हैं यहांसे चंदनकी लकड़ी अन्यदेशोंको भेजी जाते हैं

अंग्रेजीराज्य मैसूर और कुर्ग परगना मद्रास हाता.

लंबाई और चौड़ाई मैसूर और कुर्ग जो मैसूरके नैऋत्यमें हैं ७४ अंश ५० कला और ७८ अंश ४० कला देशांश और ११ अंश ४५ कला और १५ अंश अक्षांशके मध्यमें हैं वायव्यदिशाकी ओर मैसूर से मुद्रसे १५ मील दूर हैं मैसूर यह २५७ मील लंबा और २३८ मील चौड़ा हैं. सीसा मैसूर और कुर्गके उत्तरमें मंबोर्ड हाता और मद्रास हातेके अर्पित जिले, पूर्वमें अर्पित जिले और अर्काट, दक्षिणमें सेलम और कोयंबतूर, और पश्चिममें मलबार और दक्षिणी और उत्तरी कानडा हैं क्षेत्रफल और मनुष्यसंख्या मैसूरका क्षेत्रफल अनुमान २७००० वर्गमील हैं और कुर्गका ३०००७ वर्गमील और मैसूरकी मनुष्यसंख्या ४० लाख सौकुच्छउपर और कुर्गकी मनुष्यसंख्या १२५००० हैं. आमदनी - मैसूरकी आमदनी अनुमान एक करोड़ रुपये की हैं और देशप्राप्ती सन १७९९ में टिपूके मरनेपर मैसूरके राज्यको उसकी वर्तमान सीमाके अनुसार पृथक् करके प्राचीन हिंदुवंशके किसी राजाके आधीन किया था परंतु सन १८३२ में जब यहांका प्रबंध ऐसा बिगड़ा की चारों तरफ बलवा मचने लगे उस समय सरकारको वहांका बंदोबस्त अपने हाथमें कर लेना पड़ा और राजाका वंधान ११४०००० रुपयाका नियत कर दिया सन १८२३ में कुर्गका राजा अपनी प्रजाको सताने लगा और अपने कुलवो लोको मार डालने पर तत्पर हुआ इसकी-बहिन और बहिनोई मैसूरके प्रेसिडेंट वास भाध्यक्षके पास भाग गये इसपर राजाने लडाईकी तय्यारी की इतनेमें अर्थात् सन् १८३४ में

में एक अंग्रेजी फौज उस पर चढ़ आई और उसकी राजधानी पकड़ा-
 और इतर गठलूट लिये राजा भी उनके वशीभूत हुआ गद्दी से उतार दिया
 गया और भारी पेनशन नियत करके बंदीगृह में रखवा गया. मैसूर का
 राज्य एक चीफ कमिशनर के अधिकार में है और कुर्ग में एक अधिकारी दे
 स्वाभाली करने वाला रहता है जो मैसूर के कमिशनर के आधीन है. मै
 सूर देश एक उच्च समभूमि पर वसा है जो १००० फूट तक उंचा है इसके
 तीनों तरफ पर्वतों की श्रेणी है परंतु उत्तर दिशा की ओर खुला है प्रधान
 श्रेणी ये हैं. शिवगंगा श्रेणी बंगलूर से २५ मील बायव्य को ४६०० फूट औ
 र बाबाबुद्दीन श्रेणी बेदनूर के निकट ६००० फूट उंची है पृथक् पहाडि-
 या उपर दुर्ग अर्थात् गढ़ अनुमान दो मील के घेर में बहुधा गोलाकार है रेती
 ली चटानों के अनुसार इस उच्च समभूमि के उपर को उठती हुई देश को
 अद्भुत शोभा देती है इनमें से बहुतों पर गढ़ बने हुए हैं जिनका नाम
 दुर्ग पड़ गया है और कुर्ग देश की भूमि बिषम और पहाडी है और इस
 का संपूर्ण भाग समुद्र के पृष्ठ से ३००० फूट से भी उंचा है और नदिया-
 मुख्य ये हैं. कावेरी और इसकी सहायक नदिया तुंग भद्रा इन दो शेष
 नदीयों का संगम हलूर पर हुआ है वही से तुंग भद्रा कहलाती हुई.
 आगे को चली गई है हुग्री तुंग भद्रा की एक सहायक नदी है और प-
 नार और पलार भी बड़ी नदीयों में हैं. उपज मैसूर की उपजाऊ ध
 धरती और उसके वादियों की चिकनी मिट्टी में धान रागी ज्वार चना
 और गेहूं खांड पान अफीम और काफी की उपज होती है यहां बैलों
 के कारण प्रसिद्ध है और कुर्ग में बड़ी इलायची काफी चहा सिंकोना
 और कपास सब चीजे उपजती हैं. मैसूर की खास दस्तकारी की
 चीजों में मोटे सूती कपड़े ऊनी गालिचे और दुशाले प्रसिद्ध हैं आ-
 बोहवा मैसूर की मध्य ग्रीष्म ७६ है इसके मध्यस्थ बंगलूर की-

आबोहवा अति उत्तम हैं. निवासी-मैसूर में हिंदु और मुसलमान बसते हैं परंतु हिंदु अधिक हैं. कुर्ग में विशेषकर नैर लोग रहते हैं और इन मैदानों के और २ निवासीयों की अपेक्षा बल और पराक्रम में बढ़कर होता है

भाग-मैसूर में तीन भाग और ८ जिले हैं कुर्ग एक ही जिला है

१ नंदीदुर्ग जिले बंगलूर कोलूर तंलूर

मैसूर

२ अस्तग्राम जिले मैसूर हसन

३ नगर जिले शिमगा चितलदुर्ग कुदूर

मुख्यनगर मैसूर मनुष्यसंख्या ५६००० हैं २४५० फूट उंचा-दक्षिण में बसता है यहां पर एक गढ़ है जिसमें राजा के रहने का महल बना है और पूर्व की ओर इस नगर की सीमा पर शिवसमुद्रम है जहां कावेरी के द्वीकें उपर प्राचीन नगर के खंडेरे पड़े हुए हैं यहाँ नदी की अनेक प्रसिद्ध धारा बड़े वेग से नीचे को गिरती हैं.

सिरिंगपटम अथवा श्रीरंगपटन मैसूर के उत्तर में कावेरी नदी के एक द्वीप की पश्चिमी नोक पर बसता है. इसकी चहार दिवारी दृढ़ नहीं है अंग्रेजों ने इस नगर को सन १७९९ में अचांचक ले लिया था और टिपू को मार डाला था. बंगलूर पलटन और कमिशनर साहिब के रहने की जगह है और अंग्रेजों की बगीचों और शतरंजी और रेशमी कपड़ों बनाने के कारण प्रसिद्ध है. इसके उत्तर में नंदीदुर्ग है जिसे सरकार ने सन १७९९ में ले लिया था. यह नगर पनार और पलार के उत्पत्ति स्थान के निकट ४८५६ फूट उंचा बसा है इसके दक्षिण में देवनहल्ली है. जहां सन १७५३ में टिपू उत्पन्न हुआ था. चित्रदुर्ग अथवा चितलदुर्ग ईशान में है यहां एक दृढ़ गढ़ बना है. बैदनूर अथवा नगरवाय-व्य में है. यहां से हैदर सन १७६३ में बारह करोड़ रुपये का असबाब

छूट ले गया था. कुर्क के मुख्यनगर ये हैं मरकारा मध्यमें समुद्र के जलसे ३७०० फूट ऊंचा बसता है इसके दक्षिणमें विराजेन्द्रपेठ हैं. इन दोनों नगरोंमें विशेषकर युरोपीय लोग उनके दह लुए और अस्तानलौंग बसते हैं.

अंग्रेजीराज्य मंबोई हाता.

लंबाई और चौड़ाई - यह देश भरतरखंड के पश्चिमी किनारे से लगा हुआ लंबा और सकरा चला गया है और इसकी चौड़ाई भी सर्वत्र एक सी नहीं है परंतु न्यूनाधिक विस्तृत है. इसमें सिंधका सूबा भी है जो सिंधु नदी के दक्षिणी भाग की दोनों ओर बस है इस प्रकार यह हाता पंजाब के दक्षिण से लेकर म्हेसूर की सीमा तक फैला हुआ है. सीमा - इस हाते के पश्चिम में बलोचिस्तान और अरबका समुद्र, दक्षिण में म्हेसूर, पूर्व में मद्रास हाता हैदराबाद बरार मध्य प्रदेश भरतरखंड की मध्य एजंटी के रजवाड़े और राजपूताना और उत्तर में भावलपूर पंजाब और बलोचिस्तान हैं. क्षेत्रफल और मनुष्यसंख्या - इस हाते के अंग्रेजी भाग का क्षेत्रफल १३४१३५ वर्ग मील और मनुष्यसंख्या है रजवाड़े का क्षेत्रफल जो इस प्रदेश से राज्य संबंध के अनुसार संबंध रखते हैं ७१३२० वर्ग मील मनुष्यसंख्या ६००००० हैं. आमदनी सन १८७० में ९५२९३८०० रुपये थी. देश प्राप्ती सन १५३२ इस वी में पुर्तगाल वालों ने मंबोई को अपने अधिकार में कर लिया था और सन १६६१ में अर्थात् जब इन फैंटो क्यथेराईन का विवाह चार्ल्स दूसरे से हुआ था उस समय उसके दहज में इन्होंने बंबई इंडिस्तान को सौंप दिया था खान देश और महाराष्ट्र सन १८१८ में जीत लिये गये और सन १८४४ में सिंध देश हाथ लगा. पर्वत पहाड़ मुख्य पर्वत ये हैं. पश्चिमी घाट सातपुडा और विंध्याश्रेणी कच्छ के पहाड़ और सिंध के पहाड़ जिनका वर्णन आगे

होचुकाहैं और अर्चली श्रेणी गुजरातके ईशानमें और काठीयावाडके पहा
 डहैं. नदिया- मुख्यनदियायेहैं सिंधू-लूनी-बनास-साबरमती जो देशमे
 वाडके पहाडोसे निकलीहैं वात्रुक वा बालुक साबरमतीकी सहायक नदीहैं
 माही नर्मदाताप्ती इसकी सहायक गिरना और अनेक छोटी नदियाहैं. जो
 घाटसे निकलकर अरब समुद्रमें गिरतीहैं घाटके पूर्वमें मुख्य नदिया येहैं
 १ कृष्णा पूनाके नैऋत्यमें महाबलेश्वर पर्वतके समीपसे निकलकर बाई
 और भीमा और उसकी सहायक नदिया सीना और सुभा मुष्ठा और दहि
 नी और घटप्रभा मलप्रभा और तुंगभद्राको लेती हुई बहती गईहैं २ गो
 दावरी नासिकके समीपसे निकलतीहैं. आबोहवा इस प्रदेशकी भिन्न
 भिन्न भागोमें भिन्न २ भांतीकी आबोहवाहैं समुद्र तटस्थ जिलोमेथ-
 द्यपि गरमी अधिक रहतीहैं परंतू वर्षाभी भारी होतीहै मंबोईमें ८० इंच
 वजल बरसता है रतनागिरीमें १०० इंच और महाबलेश्वरमें २५० इंच
 जल मापा गयाहैं पूना कलकटरीमें केवल २० ही इंचहैं और गरमी अ-
 धिक पडतीहैं गुजरातमें और इसके आगे बढ़कर वायव्यमे भी गरमी
 अधिक होतीहैं सिंधके मध्य और उत्तरी भागोमें गरमी इतनी अधिक
 होतीहै की लोगोको बड़ी तकलीफ होतीहैं सिंधमें वर्षा बहुत ही थोड़ी
 होतीहैं यहां तक की किसी २ वर्षमें एक बिंदुभी नहीं गिरलाहैं इसदे
 शको बहुधा लघु मिसर कहतेहैं दक्षिणी सिंधके लंबे और चौड़े किच-
 डीले मैदानोमें जो ज्जावदार वृक्षो और उंची कटीली ज्जाडियोसे ढके हु
 एहैं समुद्रकी मंद २ वायू का संचार है परंतू सिंधू नदीके पूर और सू
 र्यकी गर्मीके कारण वहांकी आबोहवा बिगड जातीहैं. कराचीकी आ
 बोहवा ठंडीहै. महाबलेश्वर जो ४७०० फूट उंचाहैं और माथेरान पहा
 ड ये प्रधान आरोग्यस्थान हैं. उपज- प्रधान उपज येहैं कपास-
 धान बाजरी ज्वार चणा अफीम मांठा गेहूं गुजरातमें नील खानदेश

में गरम मसाला लमाकू नील नारियल इतर फलदार वृक्ष और गोवा-
 के आम प्रसिद्ध हैं और मंबोई में हापूसी अथवा आम पायरी नाम जा-
 दी हैं. पहाड़ों में लकड़ी गोंद जड़ी बूटी और रंग उपजते हैं और समुद्र
 की खाड़ी में सर्वत्र निमक होता है और कलाकौशल्य में मुख्य ये हैं सू-
 ती कपड़ा सर्वजाती होता है और लोहा अथवा पीतल का काम बहवार-
 होता है और बहोत्सा जात की कारागिरी काम होता है उद्योग मुख्य शि-
 ल्पनिर्मित द्रव्य ये हैं. खांड नील और रेशम इनके सिवाय वस्त्र अनेक
 स्थानों में बने जाते हैं जुवाहरात का काम खंभात में बनता है सोने के
 बूटे निकालने और चांदी की जरी बनने का उद्योग हैदराबाद में होता
 है तलवार और बंदूके आदि सिंध में बनती हैं परंतु लोग बहुधा कि-
 सानी करते हैं. व्यौपार- इस देश में व्यौपार अधिक होता है और-
 अनेक वस्तु यहां से अन्य देशों को भेजी जाती हैं और यहां से यहां
 भी आती हैं रुई और अफीम यहां से बहुत जाती है मुख्य बंदर-
 स्थान ये हैं- मंबोई धोलार खंभात घोघा भडोच सुरत रत्नागिरी
 वेंगुर्ला और कारवार और सिंध में कराची. निवासी और भाषा
 धर्म के अनुसार यहां के निवासी ये हैं. हिंदु मुसलमान जैनी पार-
 सी इसाई और याहुदी. हिंदुओं में प्रधान जाति विभाग ये हैं.
 मरहटे राजपूत और जाट सिंध राजपुतों में कच्छ देश के जैरेया प्रसि-
 द्ध हैं काटी जाते और पश्चिमी गुजरात में वाघर जाते इतर हिंदु हैं.
 रामूसी एक लुटेरी जाति के लोग सतारे के पश्चिम में हैं सिंधी वा सिंध
 के मुसलमान लोग बलोची जाट और अरब वालों से उत्पन्न हुए हैं पश्चि-
 मी धाट के किनारे २ के अनेक मुसलमान मोरावा बोहरा और हबशी क
 हलाते हैं और जैन मत वाले यहां पर बहुत हैं. पारसी सर्वत्र हैं परंतु मं-
 बोई और सुरत नौसारी में विशेष करके हैं इसाईयों में प्रोटेस्टेंट स्मी-

मतधारी पुर्तगालवाले और आर्मिनियावाले भरे हैं आदिजात में खान देश और गुजरात की भील जाति और ईशान्य गुजरात की कुली और गरा सिया जाते प्रसिद्ध हैं कानडी और मरहट्टी भाषा दक्षिण में, गुजराती उत्तर में और कच्छी कच्छ में बोली जाती हैं. इनके सिवाय अंग्रेजी उर्दू फारसी और साधारण अरबी भी बोली जाती हैं सिंध में सिंधी बलोची जाटकी और मुलतानी बोली जाती हैं. इतीहास और भूगोल के अनुसार इस हाते में ६ अंग्रेजी सूबे और अनेक रजवाड़े हैं अंग्रेजी सूबे ये हैं १ कोकन जिसमें मंबोई थाना रत्नागिरी विजयदुर्ग और वेङ्गुली हैं ये सब पश्चिम किनारे पर वसते हैं २ महाराष्ट्र अथवा मरहट्टोका देश जिसमें पूना अहमदनगर नासिक सातारा सोलापूर विजापूर बेळगाव ये हैं. ये सब घाटके पूर्व दिशा को हैं ३ उत्तरीय कानडा इसमें कारवार कुमठा और होनावर हैं ये सब कोकन के दक्षिण में हैं जो पुर्तगालवाले के राज्य गोवा के बीच में आजाना के कारण उस सब से अलग हो गया है ४ खानदेशावर के पश्चिम में मालेगाव और धूले नभी इसी न में हैं ५ गुजरात जिसमें अहमदाबाद भडोच और सूरत हैं ६ सिंध हात्ता पर्वत और राजपुताने की मरुभूमी के मध्य इसमें हैदराबाद कराची ठगु उमरकोट और शिकारपूर हैं. मुख्य रजवाड़े ये हैं खैरपूर (सिंध में) कच्छ का ठियावाड गायकवाड का राज्य और गुजरात के रजवाड़े जैसे महीकाठा (इसमें इडर और अनेक राज्य हैं) रेवाकाठा कोलापूर (घाटके उपरको) सावंतवाडी (वेङ्गुली के पूर्वको) और मरहट्टी जहागिरी जिनमें मिरज सांगली मुधोळ सावनूर इत्यादि हैं. एडन जो अरब के किनारे पर बसता है राज्य प्रबंध के अनुसार मंबोई से संबंधित है. इस हाते का राज्याधिकार मंबोई के गवर्नर साहिब बहादुर कौंसिल के अधीन है और सिंध एक चीफ कमिशनर के अधिकार में है जो मंबोई के

गव्हर्नर साहिबके और सभाके आधीन हैं. इस हातेके अंग्रेजी देश इस प्रकार विभक्त हैं अर्थात् उत्तरी और दक्षिणी भाग जिसमें कलकटरी जे परगना प्रेसिडेन्सी अर्थात् प्रधान स्थानिक भाग जिसमें मं बोर्ड हैं. और सिंध यह मध्य प्रदेशके समान अव्यवस्थित देश हैं. की कमिशनरी जिसमें चार जिले शामिल हैं.

प्रथम प्रेसिडेन्सी भाग

१ मंबोर्ड.

दुसरा उत्तरी भाग

१ अमदाबाद २ खैरा ३ भरुच ४ सुरत ५ खानदेश ६ ठाणा ७ कुलाबा.

तिसरा दक्षिणी भाग

१ पूना २ शोलापूर ३ अहमदनगर ४ नाशिक ५ रत्नागिरी.

तिसरा दक्षिणी भाग

१ सतारा २ बेळगाव ३ धारवाड ४ विजापूर ५ कानडा.

चौथा सिंध.

१ कराची २ हैदराबाद ३ शिकारपूर ४ थर और पारकर.

अंग्रेजी राज्य मंबोर्ड शहर मंबोर्ड हाता.

मनुष्य संख्या ८०००००० हैं परंतु वर्तमान समयमें ९ लाख थी १० लाख आसरे अनुमान हैं मुख्यनगर मंबोर्ड एक छोटे द्वीपपर समुद्र के तटसे कुछ दूर बसता है सुंदर बंदरस्थान होनेके कारण पुर्तगालवालोंने जिनके अधिकारमें यह सन १५३२ में आगया था. इसका नाम बुआनवहिया अर्थात् सुंदर बंदरस्थान रक्खा था इसका पश्चात् इसीका से क्षेप बांबे हुआ देशी नाम इसका मंबोर्ड है सन १६६१ में जब इनफैंटा क्याथेराइनका विवाह चार्ल्स दूसरेसे हुआ था उस समय यह स्थान इसकन्याके दहेजमें इंगलिस्तानको मिला था यहां पर अगनवोट वाजहाज बनानेके भारी स्थान है जीसे गोदी कह

और व्योपार विशेषकर रुई और अफीमका बहुत होता है और ब्री-
लायतकामूनीकपडा अथवा चीनदेशका रेशमी कपडा बहोत सा-
चीकता है और मंबोईमें कपडे बनवानेके संचारे शमका कपडा ब्रह्-
वार बनवानेके संचा है और कलाकौशल्य व होत्सा है और यहां ए
क पूर्व देशांमें नवीन गोदी बनी है यहां अगनबोट वाजहाज आया
जाया करता है और सरकारी ह्पिस ये है सकरतारी कलेक्टर हा
पीस हाईकोर्ट मंबोई बैंक और टंकसाळ महाविद्यालय और पाठ
शाळा और इंजनेरहापीस और पोलीसहापीस और महाराणीजी का
बाग सुंदर है यहां अनेक जनस देखनेको बंगला में रखी है और
सिंह अदबेरा रीछ सर्व जाति जंतु है और गव्हर्नर साहिब बहादू
रके रहनेका बंगला बहोत सुंदर है. तीन कालेज जे विद्यापरिक्षा
और यहां व्योपारी का बैंकहापीस; अंग्रेजी बजार बहोत सुंदर है औ
र बंगला बागवगीचा शोभावान है और हिंदु धर्मका देवस्थान ये है
मंबादेवी भुलेश्वर (महादेव) चालकेश्वर (महादेव) महालक्ष्मी मा-
नकेश्वर महादेव और बावलनाथ यह मोटा स्थान है विष्णु धर्मिका ब
होत्सा मंदिर है. और मुसलमानाकी जमाज करिया मसजिद सुं
दर है और अंग्रेज सरकारका एक मोटा देवल है और पोर्तुगीज लोगा
को मोटा देवल है और यहां हिंदु लोग कर्ता मुसलमान अधिक है और
पारसी व्योपारी है और सर्व देश जातीका मनुष्य है यहां के बंदर स्था
नमें एलीफंटा नामका एक छोटा द्वीप है जहा चटानोमें खुदे हुए अने-
क हिंदु धर्मके मंदिर बने है और यूरोपकी डांक बहरनेका मंबोई
मुख्यस्थान है और हिंदुस्थान भरमें ऐसे सुंदर शहर कोइ भी नहीं है

अंग्रेजी राज्य अमदाबाद २ परगना मंबोई हाता.

क्षेत्रफल ४४०० वर्ग मील मनुष्य संख्या ७००००० है. मुख्य नग

र अमदाबाद साबरमती नदीके बाए तट पर इसे गुजरातके राजा अहमदशाहा पहलेने सन् १४१२ में बसाया था इसकी मनुष्यसंख्या — १३०००० हैं यहां पर अनेक कारागिरीके मकानात अब तक बाकी हैं जिनमेंसें जाम अमस जिद जिसे अहमदशाहानें सन् १४२४ में बनवाया था प्रसिद्ध हैं यहां दक्षिण दिशामें एक तलाव सुंदर हैं जहा एक मध्यमें बंगला शोभावान हैं. और यहां बडोदारेलवेका मोठा स्टेशन नगर जंक्शन हैं और शहरकोट पना सुंदर है और यहां नदीतट पर एक देवीका स्थान चमत्कारी हैं. इसके निकट बादशाही ३ दरवाजे उभे हैं और येजरी कलाबतू और कपडाके कारण प्रसिद्ध हैं.

अंग्रेजीराज्य खैरापरगना ३ रामबोर्ड हाता.

क्षेत्रफल २००० वर्गमील मनुष्यसंख्या ५००००० हैं. मुख्यनगर खैरा इसके चारोतीरफ कोटबना है इस कलकटरीकी पूर्वी और दक्षिणी सीमामाही नदी हैं.

अंग्रेजीराज्य भडोच ४ परगना मंबोर्ड हाता.

क्षेत्रफल १३०० वर्गमील मनुष्यसंख्या ३००००० हैं मुख्यनगर भडोच मनुष्यसंख्या ३०००० हैं नर्मदा नदीके दहिने किनारे पर हैं इसीने भृगु क्षेत्रभी कहते हैं और यहारुई अन्यदेशोंको भेजी जाती हैं. और यहारेलवे स्टेशन हैं और नर्मदाका पूल मोठा लोखाबंधा हैं और यहां कपास लोडनेका चकी हैं

अंग्रेजीराज्य सुरत ५ परगना मंबोर्ड हाता.

क्षेत्रफल १६०० वर्गमील मनुष्यसंख्या ५००००० हैं मुख्यनगर सुरत मनुष्यसंख्या १३०००० ताप्ती नदीके बाए तट पर हैं अगले समयमें सुरत मंबोर्ड कहते थे यहां बडा व्योपार होता था. यहां पारसी और बोहरा मुसलमानोंका मुख्यस्थान हैं यह शहर बहोत सुंदर हैं.

और रेलवे स्टेशन हैं यहांकी बरफी नामजादी हैं और जुमामसजि द है. और हिंदु धर्मका देव मंदिर बी प्रसिद्ध हैं.

अंग्रेजी राज्य खानदेश ६ परगना मंबोई हाता.

क्षेत्रफल १३०० वर्ग मील मनुष्य संख्या ८००००० हैं यह जिला सातपुडा श्रेणी के दक्षिण में हैं और ताप्ती और बाई और की सहायक गिराना नदी संपूर्ण जिले में बहती हैं. मरहटे और भील यहां के मुख्य निवासी हैं मुख्य नगर मालेगाव गिर्ना नदी पर बसता है यहां एक छावनी में पलटन रहती है और धूलीया यह खानदेश जिले का सदर कोर्ट है साहिब लोगो के रहने की जगह है और यहारुई अक्सी का मोटा ब्योपार होता है और अकबर ने सन १५९९ में खानदेश को अपने राज्य में मिला लिया था और अपने बेटे दानियल शाहा का नाम रहने के हेतु उसका नाम दानेश रक्खा था. खानदेश के प्राचीन फरुखी राजा बुर्हानपूर जो मध्य प्रदेश में हैं और थालनीर में रहा करते थे ये नगर ताप्ती नदी के दहिने तट के निकट बसते हैं और खानदेश में एक देवी माहीजी नाम है यहां मिति पोष शुक्ल १५ थी मास ३ यात्रा रहती है. यहां बहुत यात्री लोग आया जाया करते हैं.

अंग्रेजी राज्य ठाणा उत्तरी कोकण ७ परगना मंबोई हाता.

ठाणा और रत्नागिरी की दोनों कलकटरियों को उत्तरी और दक्षिणी कोकण कहते हैं यह देश लंबा है पर चौड़ा कम है लंबाई इसकी अनुमान ३३० मील है और चौड़ाई किसी स्थान में भी ५० मील से अधिक नहीं है क्षेत्रफल ९००० वर्ग मील और मनुष्य संख्या १५००००० मुख्य नगर ठाणा मंबोई के ईशान में सालसिट अथवा साष्टी के द्वीप पर बसता है इसी के समीप कन्हारी में बौद्ध मत की अनेक धर्मशाला और-

मंदिर चटानोके काटकर बनाये गये हैं बसाईवा बसीन थानाके वायव्य में हैं अगले समयमें यह मरहट्टे और पुर्तगालवालोंके अधिकारमें था जिन्होंने सन १७८० में अंग्रेजोंने ले लिया कल्यान थानाके इशानमें उलसन दीपर प्राचीन नगर हैं. माथेरान पहाड २३०० फूट मंबोईके पूर्वमें हैं गर्मीके दिनोमें अंग्रेजोंका हबारवानेका मनोहर स्थान हैं.

अंग्रेजी राज्य कुलाबा ८ परगना मंबोई हाता.

क्षेत्रफल १४०० वर्गमील मनुष्यसंख्या ३८०००० मुख्यनगर अल्लीबाग ये बंदर स्थान हैं. पहले अंग्रेसरकारकी राजधानी थी. ये परगनामे चावल बहुत उपजता हैं.

अंग्रेजी राज्य सोलापूर ९ परगना मंबोई हाता.

क्षेत्रफल ५००० वर्गमील मनुष्यसंख्या ७००००० हैं इस जिलामें कपास बहुत उपजता हैं मुख्यनगर सोलापूर यहां पर एक किला हैं और सूतकपडे बनवाका कारखाना हैं. बार्ली मोटा गाम हैं. पंढरपूर इसमें विष्णु अवतार विठोबानाम हैं इसका मंदिर हैं और यात्री बहुत आयाजाया करते हैं.

अंग्रेजी राज्य अहमदनगर १० परगना मंबोई.

क्षेत्रफल ५००० वर्गमील मनुष्यसंख्या ५००००० हैं मुख्यनगर अहमदनगर सीना नदीपर अगले समयमें निजामशाही राज्यकी मलिक अंबरके समयमें राजधानी थी सन १८०३ में इसे बेल्सलीने लिया

अंग्रेजी राज्य नासिक ११ परगना मंबोई हाता.

क्षेत्रफल ५००० वर्गमील मनुष्यसंख्या ५००००० हैं मुख्यनगर नासिक मनुष्यसंख्या २५००० हैं यहां श्रीगोदावरीके निकासके निकट हैं यहां श्रीरामचंद्रजी लक्ष्मणजी सीताजी सहित गोदावरीके उत्तरतटपर तपोधनवनमें ध्यानकरकरते थे कसीसमय दुष्टरावण श्रीजानकीजी

का हरण कर ले गया होता यहां एक श्रीरामचंद्रजीको मोटे मंदिर हैं और यहांसे मील २० उपर त्र्यंबके श्वर महादेव हैं यहाँ ब्राम्हण सेवा करते हैं ऐसे कहते हैं की ब्राम्हण सीवाय मंदिरमें और वर्णको जाने का होक मन ही हैं यहांसे श्रीगोदावरी पर्वतसे निकली हैं और यहां पर यात्री बहुधा आया जाया करते हैं. इसीके निकट गुंफाओंमें बौद्धमतके मंदिर बने हुए हैं और श्रीगोदावरी की यात्रा सिंहस्थ वर्ष १२ में आते हैं मास १३ रहती हैं बहोत यात्री आते हैं. रेलवे स्टेशन मील ३ आसरे हैं यहां निवासी ब्राम्हण अधिक हैं और मुसलमान भी हैं.

अंग्रेजी राज्य रत्नागिरी १२ परगना मुंबोर्ड हाता.

मुख्य नगर रत्नागिरी और वेंगुर्ला ये दोनों बंदर स्थान हैं. वेंगुर्ला में समुंदरी चोर सदा उपद्रव मचाया करते थे परंतु जब सन १८१२ में यह नगर सरकारको सौंप दिया गया उस समय से शांत पड़ गये हैं.

अंग्रेजी राज्य पूना १३ परगना मुंबोर्ड हाता.

क्षेत्रफल ५३०० वर्ग मील मनुष्य संख्या ७५०००० हैं मुख्य नगर पूना मनुष्य संख्या ८०००० हैं नदी मूठा और मूळा के संगम के समीप २००० फूट उंचे मैदान पर बसा है सन १७५० से लेकर सन १८१८ तक जब की सातवा पेशवा बाजीराव राज्य करता था. मरहटो की राजधानी यही पर थी. पार्वती पर्वत इसीके निकट हैं. जिसपर शिव आदि देवताओंके मंदिर बने हुए हैं खिरकी अर्थात् पथरीली जगह हैं जहां कर्नल बरसाहिब ने सन १८१७ में पेशवा की सेनाको हराया था सिंहगढ़ पूनाके नैर्ऋत्यको ११ मील पर हैं यहां एक प्रसिद्ध पहाड़ी गढ़ ४१६० फूट उंचा है इसीके निकट किल्ला पुरंदर जिसका वर्णन बहुधा इतिहासमें किया जाता है आजकाल आरोग्य स्थान हैं और यहां मुंबोर्ड का गवर्नर साहिब का रहने का ठिकाना है यहां सरकारी बंगला

हैं और पूना शहर मोटा प्राचीन हैं. यहां मेवाशाग भाजीबहु होता है
अंग्रेजीराज्य सतारा १४ परगना मंबोई हाता.

क्षेत्रफल १०२०० वर्गमील मनुष्यसंख्या १०००००० हैं यह पहाड़ी जिला है और इसके पश्चिमी भागमें अनेक नदिया हैं. पश्चिमी पहाड़ों में रामूसी लोग रहते हैं. मुख्यनगर सतारा इसके निकट एक दृढ किला बना है यहां पर मरहटोंने सन १६९८ में अपनी राजधानी नियत की थी. यहां श्रीरामचंद्रजीकी शाखाका क्षत्रीराज्य सूर्यवंशी महाराजाकाराज्य था जिसमें शाहूराजा दयालु किर्तीमान था पुनाका पेशवाना राज्य सी रक्ष होनेसे दे दिया था और ये महाराजाकी शाखा देशमेवाड उदेपूर महारानाजी हैं और नेपालमें सतारामें कोलापूरमें हैं और ची हिंदुस्थान में बहोत्साजगा हैं ये क्षत्रीकुल शुद्ध हैं

अंग्रेजीराज्य बेळगाव १५ परगना मंबोई हाता.

इस जिलेमें कृष्णा और मलप्रभानदिया बहती हैं मुख्यनगर बेळगाव समुद्रकी पृष्ठसे २५०० फूट उंच बसता है

अंग्रेजीराज्य धारवाड १६ परगना मंबोई हाता.

मुख्यनगर धारवाड रुईके कारण प्रसिद्ध हैं. हुबली और बंकापूर यहां रुईकी मुख्य मंडी हैं.

अंग्रेजीराज्य विजापूर १७ परगना मंबोई हाता.

क्षेत्रफल ५००० वर्गमील मनुष्यसंख्या ६३०००० हैं मुख्यनगर विजापूर इसमें बड़े मसजिद हैं ये शहर अगले समयमें आदिलशाही राजवंशकी राजधानी थी यहां अनेक खंडेरे हैं.

अंग्रेजीराज्य उत्तरीकानडा १८ परगना मंबोई हाता.

क्षेत्रफल ३८०० वर्गमील गोवाराज्यके दक्षिणमें हैं. इस जिलेकी बसती बिरी हैं. मुख्यनगर हुनावर मनुष्यसंख्या १२००० एक लवण

ज्जीलके किनारे बसता है इसके सिरे पर गिरसप्पाके चार प्रसिद्ध ज्जुरने हैं और शोरावती वा कुरियल नदी में ज्जुरते हैं इसमें से एक ८९० फुट उंचे से गिरता है. कारवार अथवा सदा शिवगढ उत्तर में एक बंदरस्था नहीं जहां से रुई लदकर और २ देशों को जाती हैं.

अंग्रेजी राज्य सिंधदेश मंबोईहाता.

इसमें मोठा सिंधु नदका पाणी मार्च महिना में चढती हैं और सप्त बर में उतरता हैं. इस देशका क्षेत्रफल ५२००० वर्ग मील से ऊपर हैं परंतु इंग्लिस्तानके क्षेत्रफल से कम हैं और पश्चिमोत्तरकी मरुभूमि जो शिकार पुर में हैं पतकहलाति हैं और जो पूर्व और ईशान में हैं उसे थर बोलते हैं प्राचीन कालके सिंधके तीन भाग हैं अर्थात् दक्षिणी-सिंध अथवा लार मध्यसिंध अथवा विन्नालो और उत्तरीसिंध अथवा सिरो. अगल समयमें सिंधु नद जहां से होकर बहती थी. आजकल वहां से बहुत हटकर बहने लगी हैं

अंग्रेजी राज्य करांची परगना १ मंबोईहाता.

मुख्यनगर कराची एक भारी बंदरस्थान हैं और दिन पर दिन बढता जाता हैं इसके पश्चिममें राजमुंज हैं. सहवान वा सिबिस्तान उत्तरमें सिंधु नदीके दहिने तटके निकट और मंचरज्जीलके पूर्वमें बसता हैं यहां पर लाल शहाबाजकी दर्गा हैं इस जिल्लेका वर्णन भरतखंडके इतिहासमें बहुधा किया जाता हैं टट्ट वा ठट्टा कराचीके पूर्वमें सिंधु नदीके डेल्टा पर प्राचीन नगर हैं. सिंधदेशकी पुरानी राजधानी और मुगल हाकिमोंके रहनेका स्थान यही था. यहां पर एक बड़ी जामअम-सजीद बनी हैं धिजरी पित्ती कूदी पित्यानी और केदीवारी ये सिंधु नदके प्रधान मुहाने हैं.

अंग्रेजी राज्य हैदराबाद सिंध परगना २ मंबोर्डहा.

मुख्यनगर हैदराबाद मनुष्यसंख्या २५००० आजकल सिंधकी राजधानी है. सिंधु नदीकी बाईं ओर ४ मीलके अंतरपर बसता है. सोने के बूटे निकालने और चांदीकी जरी बनाने और लुकदारसंदूकोंके कारण प्रसिद्ध है इसके ६ मील उत्तरको मियानी गांव बसता है जहां सर चार्ल्स नेपियरने सन १८४३ में सिंधके अमीरोंको पराजित किया था अमरकोट हैदराबादके पूर्वमें है यहां सन १५४२ की १५ वीं अक्टोबरको अकबर बादशहाका जन्म हुआ था.

हैदराबाद सेलगा हुआ थर और पारकर परग.

क्षेत्रफल ६१०० वर्गमील मनुष्यसंख्या ५०००० से उपर है ये दो जिले हैदराबादका दक्षिणी भाग हैं और रन कच्छके किनारे २ बसा है मुख्यनगर दीपलू इसलामकोट बीरावन और नगर पारकर हैं.

अंग्रेजी राज्य शिकारपूर ३ परगना मंबोर्डहा.

क्षेत्रफल ११००० वर्गमील इस कलकटरीमें ये जिले हैं रोहरी जकोबाबाद शिकारपूर लारखाना और मेहेर मुख्यनगर शिकारपूर मनुष्यसंख्या ३०००० हैं यहां का व्योपार अफगानिस्तानसे होता है इसके वायव्यमें जकोबाबाद जनरल जान जेकब साहिबके नामसे कहलता है कुस्मार पंजाबकी सीमाके समीप सिंधु नदीके दहिने तटपर है और रइनके सामने रोहरी इसी नदीके बाए तटपर बसता है ये सब मुसलमानोंके राज्य हैं प्रसिद्ध नगर थे. सक्करके दक्षिणमें और थर और पारकरकी और ज्जुकता हुआ खेरपूर का देश वा अली मुरादका राज्य है.

अंग्रेजी राज्य पंजाब हाता लेफटेनेंट गवर्नर

पंजाब शब्द दो फारसी शब्दोंसे मिलकर बना है. अर्थात् पंच-

पांच और आबजल अर्थात् पांच नदियों का देश वे पांचो ये हैं सतलज बियाह वाव्यास रावी चनाव और ज्जेलम वा बहात. लंबाई और चौड़ाई—पंजाब देश वर्तमान हद्द बंदी के अनुसार २० और ३५ अंश अक्षांश और ७० और ७८ अंश देशांश के मध्य में हैं इसरी दूरी पेशावर वा दी से लेकर पश्चिमोत्तर देश के जिला मथुरा तक ६५० मील हैं और कस्मूर के निकट सिंध के किनारे से लेकर लाहौर में बरलाच घाटी तक ८०० मील हैं अगले समय में केवल सिंधु और सतलज नदियों के मध्यस्थ संपूर्ण देश को पंजाब कहते थे. सीमा पंजाब के उत्तर में काबूल और सवाद कश्मीर तिब्बत, पूर्व में तिब्बत जमना और पश्चिमोत्तर देश, दक्षिण में पश्चिमोत्तर देश बिकानेर और जैसलमेर और सिंध, पश्चिम में सुलेमानी श्रेणी और आफगानिस्तान हैं. क्षेत्रफल और मनुष्य संख्या—पंजाब में अंग्रेजी राज्य क्षेत्रफल १०२००० वर्ग मील हैं जिसमें एक तिहाई से भी कम धरती जोती बोई जाती है इसमें १८००००० मनुष्य बसते हैं जिनमें से १२००००० सीख हैं ६०००००० हिंदु हैं ९४००००० मुसलमान हैं और १०००००० अन्य जाते हैं. पंजाब के राज्य नीति संबंधी पलेख के अनुसार यहां के हिंदु स्थानीय राजवाड़ों का क्षेत्रफल २००००० वर्ग मील हैं जिसमें पचास लाख मनुष्य रहते हैं दक्षिणी दो आब की धरती उजड़ और जंगली हैं जहां वृक्ष छोटे होते हैं और ढेर चरने को छोड़ दिये जाते हैं इस देश के लोग ऐसी धरती को बार कहते हैं और रेत ली को थल देश प्रार्थी हिंदु स्थानीय राजवाड़ों को छोड़ पंजाब की सरकार की अधिकार में ये राज्य हैं अर्थात् १ सतलज नदी के इस पार और उस पार के प्रदेश जो सीखों के प्रथम संग्राम के हो जाने पर एक चीफ कमिशनर के अधिकार में रखे गये थे. २ रेवास पंजाब देश जो सन १८४९ में सीखों की दूसरी लड़ाई समाप्त होने पर सरकार के अधिकार में आ गया था और-

३ देहलीकाराज्य जो सन १८५८ अर्थात् बलवाके मिटजानेपर पंजाब में लगा दिया गया था ये संपूर्णराज्य सन १८५८ में एकलेफटेनें दगव्हर नर अर्थात् छोटे लाटसाहिबके अधिकारमें रक्खे गये. आमदनी सन् १८६९ में यहांके अंग्रेजी राज्यकी आमदनी ३२३१६५६२ रुपये थी. पर्वत— १ पश्चिमी हिमालय और इसीसे लगा हुआ सिवालिक समूह. २ लवणश्रेणी ज्जेलम और सिंधूनदीके मध्य और कालाबाग शेरबुद्धी-न और बलूत पहाड इनतीनोंके मिदी पत्थर आदि एकसे हैं ३ सुलेमान श्रेणी ४ सफेदकोह पेशावरमें और ५ देहली और गुर्गांवके जिलेके पहाड जो अरबली श्रेणीकी शारवा हैं. नदिया इनका वर्णन हो चुका हैं और छोटी नदीया ये हैं—काबूल और सवाद पेशावरवादीमें, कुर्रम उत्तरी-य देशमें, मारकंडा और घाघरा अंबाला जिलमें, और सोहान रावल-पिंडीके निकट हैं. नहरे प्रधान ये हैं— बारी दोआब नहर ब्यास और रावीके मध्य और सतलज नदीकी बाढकी अनेक नहरे पश्चिमजमना देहली नहर देराजातकी नहरें जो सिंधु नदीमें मिली हैं. पानीपत नयहांकी आबोहवा हर भोंतिकी हैं अर्थात् मैदानांमें अत्यंत गर्मी पडती हैं और पहाडोपर अत्यंत ठंड हैं. मध्यग्रीष्मा ७५ अंश और बार्षिक वर्षा ३२ इंच हैं. कसावली सपाट और सिमला अंबालाके उत्तरमें और मरीकश्मीरकी सीमापर रावल पिंडीके उत्तरमें प्रधान आरोग्यस्थान हैं. उपज और दस्तकारीकी चीजे— मुख्य उपज हैं. गेहूं मुंग मटर आदि तिलक पास खांड चहा कांगडा जिलेमें पाटसन आदिलोहा तांबासु रमासीसा सोना नमक लवणश्रेणीसे खोदा जाता हैं. शोरा नौसागर-और सुहागा पत्थर का कोयला कालाबागकी खदानोंसे निकलता हैं संगमरवर देहलीके नैऋत्यमें हैं. लाहौर सुलतानदास पुर शाहपूर पेशावर और हिंदुस्थानी रजवाडोंमेंसे भावलपूर और पतियाला ये बहोत दि

नोसेरेशमके कारण प्रसिद्ध हैं सूती वस्त्र इस देशमें प्रायः सर्वत्र बनते हैं. परंतु जलंधर दोआबके अत्युत्तम होते हैं. उनी वस्त्र विशेषकर कंबल रोहत और सिर्सा देहली राज्य और लेयामें बने जाते हैं दुशाले और पश्चिमी नेकाकाम अमृतसर लुधियाना नूरपूर दिनानगर लाहोर गुजरात और जलालपोर में तय्यार होता है परंतु इनमेंसे एक नगर भी कश्मीरके कामको नहीं पाता है. निवासी और भाषा धर्मके अनुसार यहांके निवासी तिन भागोंमें विभाजित हैं. अर्थात् मुसलमान हिंदू और सीख. और देशके विचारसे ऐसे हैं हिंदुस्थानी पंजाबी अफगानी बल्लोची और पश्चिमी और पूर्वी हिमालयकी जाते. हिंदुस्थानीयों में मुख्य ये हैं. ब्राम्हण राजपूत खत्री पंजाबी जाट गुजर अहीर मुसलमान उंचे और उजले रंगके परंतु आळसी और सुखाभिलाषी होते हैं. सीख पश्चिमी हिमालयके रहने वाले हैं इनके चिहरे मोहरे यहूदियोंके सदृश वर्ण उज्ज्वल नेत्र बहुधा कम काले होते हैं और लोण-धीर और दृढ बदन पंजाबी मुसलमानोंसे श्रेष्ठ हैं अफगानोंके चिहरे मोहरे भी यहूदियोंकेसे होते हैं इनके शरीरकारंग उज्ज्वल और सावला होता है और आकार और चालचलनमें युरोपकी जातोंसे बहोत कुछ मिलते हैं ये लोग महाक्रोधी और खर्चीले होते हैं. गक्कूर रावल पिंडी जिलामें रहते हैं इनको भरतरखंडके इतिहासमें बहुधा फसादी जाती लिखा है. पूर्वा हिमालयकी जातोंके चिहरे निःसंदेह तातारी मालूम होता है. पंजाबमें ये भाषा बोली जाती है— पंजाबी हिंदुस्थानी अथवा उर्दू मुलतानी पस्तो और बल्लोची निरी उर्दू करनाल और देहली जिलामें बोली जाती है. भूगोल संबंधी भाग नदीयोंके कारण पंजाबके आठ भाग होगये हैं.

१ सतलज नदीके इस पारके देश जमना और सतलजके मध्य

स्थ हैं. देहली और अंबाला इनके मुख्यनगर हैं.

२ सतलज नदीके उसपारके देश सतलज व्यास नदियोंके मध्यमें हैं. जलंधर दोआब वामियन दोआब वा सिसत जलंधर भी कहते हैं मुख्यनगर जलंधर यहाकी धरती बड़ी उर्वरा हैं.

३ बारी दोआब व्यास दक्षिणीय सतलज अर्थात् सतलज नदीका वह भाग जो समुद्रके निकट हैं और रावीके मध्यस्थ हैं मुख्यनगर लाहौर और मुलतान.

४ रचना दोआब रावी और चिनाबके बीचमें हैं मुख्यनगर सियालकोट और ज्जुंग.

५ जच दोआब जिसे चज भी कहते हैं और अगले समयमें जिसका नाम चनहत दोआब था. चनाब और ज्जेलम वा बहातके मध्यमें हैं मुख्यनगर गुजरात और शाहपूर.

६ सिंधुसागर दोआब सिंधु और ज्जेलम चनाब और त्रिमावके मध्यमें हैं. मुख्यनगर रावलपिंडी पिंडरादनखा और लैया.

७ भावलपूर दक्षिणी सतलज त्रिमाव और सिंधु नदीके पूर्वमें हैं मुख्यनगर भावलपूर स्वतंत्रराज्य हैं.

८ सिंधु नदीके उसपारके प्रदेश मुख्यनगर पेशावर कोहाट डेराइ स्माइलखा और डरा गाजीखा.

यहांपर लक्ष्मकरनेकी बात हैं की पंजाब दोआबके सकल देशोंके नाम उन नदीयोसे मिलकर बने हैं जो उनकी सीमापर हैं अर्थात् राजकीय विभाग पंजाबमें अंग्रेजीराज्यके देश दस भाग वा दस परगना विभाजित हैं जिनमें ३२ जिला और १३२ तहसिले हैं.

१ देहली.

१ देहली १२७३ वर्ग मील हैं. २ गुडगाव १९३१.

३ कर्नाल २३५३.

- २ हिसार १ हिसार ३५४०. २ रोहतक १८१२. ३ सिसा-
३११० वर्गमील.
- ३ अंबाला १ अंबाला २६२८. २ लुधियाना १३५८. ३ सिम्ला
१८ वर्गमील.
- ४ जलंधर १ जलंधर १३३२ वर्गमील २ हुशियारपूर २०८६
३ कांगडा ७९९०
- ५ अमृतसर १ अमृतसर २०३६. २ सियालकोट १९५५. ३ गुरु
दासपूर १३४२.
- ६ लाहौर १ लाहौर ३६४७. २ गुजरानवाला २५६२. ३ फि-
रोजपूर २६८६.
- ७ रावलपिंडी १ रावलपिंडी ६२१२. २ ज्जेलम ३९१०. ३ गुजरात
१९४४. ४ शहापूर ४६९८.
- ८ मुलतान. १ मुलतान ५८०२. २ ज्जुंग ५७०४. ३ मांटगामे
री ५५७७. ४ मुझफरगढ ३०२२.
- ९ देराजात १ डेरा इस्माइलखां ७०९६. २ डेरा गाजीखां -
२३१९. ३ चम्बू ३१५०
- १० पेशावर १ पेशावर १९२०. कोहाट २८३८. ३ हजारा ३००

और रजवाडे ३४ हैं. ये तीन रजवाडे अंग्रेजी अफिसरों के अ-
धिकारमें हैं. अर्थात् भावलपूर चंबा सतलज के उस पार और पटावदी
देहली प्रदेश. शेष ३१ जिनमें अंग्रेजी राज्य प्रबंध नहीं हैं - ये हैं जंबू
और कश्मीर पटियाला भींद नाभा कलसिया मलेर कोटला फरीदकोट.
सतलज नदी के इस पार के प्रदेशमें दोजाना और लुहास्त. देहली प्रदे-
शमें कपुरथला मंडी और सुकेत. सतलज नदी के उस पार के देशोंमें
और सिम्ला राज्य के १९ रजवाडे ये हैं. अर्थात् सिरमूर नाहन कहलूर

विलासपूर हिंदूर नालागढ बुसाहीर क्युंथल कुहारसीन और छोटे २२ जवाडे हैं.

अंग्रेजीराज्य १ला भाग देहली परगना पंजाबहा०

जिला देहली मनुष्यसंख्या ६२१७००० हैं. मुख्यनगर देहली अथवा दिल्ली जमुना नदीकी दहिनी शाखापर वर्तमान देहली जिसमें मनुष्य संख्या १५५००० हैं. शहाजहान बादशाहकी बसाई हुई हैं और इसी कारण इसे शहाजहानाबाद कहते हैं. प्रधान इमारते ये हैं जामअमसजिद और राजमहल जो सन १८५७ इसवी के बलवेमें बहुतनष्ट होगया हैं जहा एक सभामंडप और एक नामी बीजक हैं जिसमें यह लिखा हैं की यदी इस पृथ्वीपर वैकुंठ हैं चांदनी चौक भरतरबंदके अत्युत्तम वाजारोमेसे है जहां की दुकानेक पडे रेशमदुशाले और जवाहरातसे भर रीरहती हैं सन १८५७ में देहली बलवाइयोके हाथमें थी परंतु सप्तंबर मासके एक ही हफ्तेमें लेली गई यहांपर एक अंग्रेजी बडा कालेज हैं. वर्तमान नगरके निकट आग्नेय कोणको इंद्रप्रस्थ अथवा इंद्रपद हैं जिसे लोग युधिष्ठिरका बसाया हुआ कहते हैं देहलीके दक्षिणमें हूमायूनकी कबर हैं जहां दाराशिकोह फरुखसीयर और अलमगीर सानीकी कबरे बनी हुई हैं. यहां निजामुद्दीन औलियाकी दरगाह भी हैं इसीके निकट अकबरका खानखाना अहुलरहीम और महमदशहा भी दफन किये गये हैं कुतुबमिनार अथवा लाट २६२ फूट उंची हैं इसमें मुसलमानोंके राज्यमें आदि संवत्तकके अनेक बीजक चपके हुए हैं इसके पूर्व तुंगलका बाद हैं जिसे गियासुद्दीन तुंगलकने बसाया था. और इन दोनोंके मध्य नासिरुद्दीन देहलीका दीपककी दरगाह बनाई हैं. कुतुबुद्दीन ऐबक ने सन ११९१ ई. में देहलीको जीता और सन ११९२ में शहाबुद्दीन मुहमद गोरीने अजमेर और देहलीके राजा पृथ्वीराजको हराया. अल्लाउ-

दीनके अधिकारमें मुगलोंने इसनगरको घेरा था और सन १३९१ में बाबरके पुरखातै मूरने इसे लूटा था. देहलीके संमुख जमुना नदीकी बाई ओर मेरठमें लार्ड लेफ्टकी रणभूमी हैं सोनपत पानपत देहलीसे वायव्यकोण में और फरीदाबाद आग्नेयकोणमें शैख फरीद बुखारीके नामसे आबाद-हुवा था जिसने जहांगीरको राजगादी दिलवाई और स्वसरोको पराजय किया था जिला गुडगाव देहलीके पश्चिममें मनुष्यसंख्या ६९०३०० हैं. मुख्यनगर रेवाड़ी पलवल और फर्रुखनगर कनलि पानिपत और कैथल. पानिपत मनुष्यसंख्या २५३०० हैं मैदानमें बाबरने सन १५२६ इ० इब्राहिमलोदीको हराया और उसे जीवरहित भी किया सन १५५६ में अकबरके सेनापती खानजमानने हैमूको हराया और सन १७६१ में अहमदशाह दुरानीने मरहटोंका पराजय किया. कैथलमें राजिया बेगम मारी गई थी. देहलीमाक्षत्री धर्मपालक पांडवराजा होगये हैं बहोत्सालोग इसीने हस्तनापूर अथवा इंद्रप्रस्थभी कहते हैं इसी राज्य हुवा पीछेसे चम्हाण राजपुत राजा हुवा पीछेसे मुसलमानी बादशाही होती और आज दीन अंग्रेज सरकारकी बादशाही राज्य कैसरी हिंद हैं.

अंग्रेजीराज्य २रा भाग हिसार परगना पंजाबहा.

यह भाग देहलीके पश्चिममें हैं.

१ जिला हिसार मुख्यनगर हिसार इसनगरको फिरोजशाहाने बसाया था. और हांसी अग्रोहा दो प्राचीन नगर इसजार्जटामसनामसा हसीजनने लिया था. -

२ जिला रोहतक हिसार और देहलीके मध्यमें हैं मनुष्यसंख्या ५३२००० हैं.

३ जिला सिसा मनुष्यसंख्या २११००० हैं मुख्यनगर सिसा अथवा भटिया घाघर नदीपर यह नगर महामरु भूमीके उत्तरीय किनारे पर

प्रायः उजड़ पड़ा हैं.

अंग्रेजीराज्य ३ रा भाग अंबाला परगना पंजाबहा.

१ जिला अंबाला मनुष्यसंख्या १०४०००० हैं मुख्यनगर अंबाला इसके दक्षिणमें प्राचीन थानेश्वर सरस्वती नदीके बाएँ तटपर हैं जिसे सन १०११ में महमूद गजनवीने लूटा था इसनगरके समीप कुरुक्षेत्र की रणभूमि हैं जहाँ महाभारतका संग्राम हुआ था. थानेश्वरके आगे यको तलाबड़ी गाँव बसता हैं जहाँ सन ११९१ में राजा पृथ्वीराजने महमूद गौरीको हराया था.

२ जिला लुधियाना मनुष्यसंख्या ६००००० हैं मुख्यनगर लुधियाना मनुष्यसंख्या ४०००० हैं सतलुजके प्राचीननालेपर जिसे बुधानाला कहते हैं मोटे सूतीकपड़े और दुशाले बनानेके कारण प्रसिद्ध हैं इसनगरको जो मरहोता नामक ग्राम था उसे सिकंदरलोदीके किसीसे नापतीने बसाया था. इसके पश्चिममें अलीवालकी रणभूमि हैं २८ जून १८४६ में इंदरलडाई हुई और पूर्वमें माछीवाड़ा जो अबकेवल एक छोटा सा स्थान बुधानालाके निकट रह गया हैं जहाँ बैरामखानने सन १५५५ इसवीमें अफगानोको पराजित किया था. लुधियानेके आगे यमें प्राचीन सरहिंद बसता हैं सीखलोकोने इसको अर्पित स्थान जानें हैं. जहाँ गुरुगोविंदके दोबेटे मारे गये थे सन १७६३ लूटा और नष्ट कर डाला था.

३ जिला सिम्ला अंबालाके ईशानमें मनुष्यसंख्या ३४००० सिम्ला जहाँ गर्मीकी ऋतु भर बड़े लाट साहिब बहादूर रहते हैं समुद्रको पृष्ठ अर्थात् ७१०० फूट उंचा बसता हैं.

अंग्रेजीराज्य ३ जलंधर परगना पंजाबहाता.

१ जिला जलंधर मनुष्यसंख्या ७८०००० हैं मुख्यनगर जलंधर

मनुष्यसंख्या ४६००० हैं.

२ जिला होशियारपूर मनुष्यसंख्या ७५०००० हैं.

३ जिला कांगडा मनुष्यसंख्या ७५०००० मुख्यनगरनूरपूर जिस का प्राचीननाम घमेरी था. नुरुद्दीन जहांगीरकानामरहनेके हेतू यह नामरक्खा गया जो मऊ और पठानकोटके प्राचीनराजपूतोंके जो अब मुसलमान होगये हैं घरानेका राज्यस्थान था. इसके आग्नेयके कांगडा हैं जिसे अगले समयमें नगरकोट और भीमनगर भी कहते थे यहां प्रसिद्ध पहाड़ी दुर्ग हैं जिसे पहिले जहांगिरने विजय किया था.

अंग्रेजीराज्य ५ भाग अमृतसर परगना पंजाबहा०

१ जिला अमृतसर मनुष्यसंख्या १०८४००० हैं मुख्यनगर अमृतसर मनुष्यसंख्या १३६००० हैं और बटाला ईशान्यकोणमें हैं. अमृतसर सीखलोकोंकी पवित्र राजधानी हैं नाम इसका अमृतसारसतालसे रक्खा गया हैं जिसे सीखोंके चौथे गुरु रामदासने सन १५८१ में खुद वायाथा. इसके निकट गोविंदगढ़का दुर्ग हैं जिसे रंजित सिंहने सीख यात्रियोंको भय दिखलानेके लिये बनवाया था अमृतसर सूती और रेशमी कपड़े गलीचे और कश्मीरी दुशालोंके बनानेके कारण प्रसिद्ध हैं कश्मीरी दुशालोंके बनानेकी चाल काश्मीरीयोंने यहां आकर डाली थी. जो सन १८३३ में अकाल पडनेसे अपना देश छोड़ भाग आये थे अमृतसरके आग्नेयमें भैरोबाल हैं जहा शेख फरीदने जहांगीरके बेटे खुसरोको हराया था.

२ जिला सियालकोट मनुष्यसंख्या १०५०००० हैं सियालकोटमें एक गढ़ हैं. परस्वर और जफरवाल शहाबुद्दीन महमदगोरीने सन ११९४ ई.में बसाया था.

३ जिला गुरुदासपूर अमृतसरके ईशान्यमें मनुष्यसंख्या—

६५५००० हैं. मुख्यनगर दीनानगर वा कलानूर जहां सन १५५६ ई० में अकबर बादशहा गादीपर बैठा था.

अंग्रेजी राज्य ६ भाग लाहौर परगना पंजाब हाता.

१ जिला लाहौर मनुष्य संख्या ७९०००० हैं मुख्यनगर लाहौर. मि आनमीर और लाहौर के दक्षिण में कसूर हैं. लाहौर मनुष्य संख्या — ९९००० रावी के बाएतट पर बसता हैं यहां पर लेफ्टेनेंट गवर्नर साहिब बहादूर की कोठी और एक बड़ा कालेज हैं यह नगर गलीचों के कारण प्रसिद्ध हैं अनेक बरसों तक यहां अकबर की राजधानी थी इसके निकट रावी नदी के पार जहां गीर बादशहा का मकबरा नूर जहां का बनाया हुआ हैं और उसकी भी कबर इसी के निकट बनी हैं और रणजित सिंह ने शहाजहां के बनवाये हुये शालहमार बगीचा हैं और मुसलमानों की और २ अनेक इमारतें नाम मात्र को भी न रहने दी. अगले समय में लाहौर को लुहर अथवा लुहावर कहते थे जब महमूद गजनवी की लड़ाई या अनंगपाल और जयपाल से हुई थी उस समय अर्थात् सन १०२३ में उसने इसे गजनी के राज्य में मिला लिया था इसके पश्चात् गजनी के राजा खुसरो ने सन ११५८ में यहां पर राजधानी नियत की महमूद ने इसका नाम महमूद पुर रखवा था मिआन मिर यहा छावनी हैं इसका नाम किसी मुसलमान बली के नाम से रखवा गया था. कसूर लाहौर के दक्षिण में यह खेड़ा गियों के कुलीन घराने के रहने का स्थान था और यही प्राचीन कसावर हैं जिसे ऐसा लिखा है की-रामचंद्र के बेटे कुश ने बसाया था ऐसे ही लाहौर को उसके भ्राता लौ (लव) ने बसाया था.

२ जिला गुजरानवाला लाहौर के उत्तर में मनुष्य संख्या ५५०००० हैं. मुख्यनगर गुजरानवाला जहां रणजित सिंह के माता पिता की कब

रेंबनी हैं. इसके उत्तर में वजीराबाद और इसीके निकट सीद्राह जिसे भरतखंड के इतिहास में बहुधा लिखते हैं की चनाब नदी के उस पार जाने का रस्ता था. वाघबूचा नदी इस जिलामें होकर वही हैं यह रावी नदी में दहिनी और गिरती हैं.

३ जिला फिरोजपुर सतलज के दक्षिण में मनुष्य संख्या ५५०००० हैं. फरीदकोट फिरोजपुर सतलज नदी के बाएतट पर फिरोजशाहा तुगलक का बसाया हुआ है. भटिंडा फरीदकोट के दक्षिण में अगले समय में प्रसिद्ध नगर था. महमूद गजनवी ने सन १००१ ई० में इसे लूटा था फिरोजपुर के आग्नेय को फिरोजशाहा और मुदकी दो नगर बसते हैं ये दोनों १८ वी और २१ वी दिसंबर सन १८४५ की लडाइयों के कारण प्रसिद्ध हैं इसीके ईशान्य में सतलज नदी के निकट सोबान हैं जहां गफ साहिब ने सन १८४६ इसवी की १० फेब्रुवारी को सीखों का पराजय किया था.

अंग्रेजी राज्य भाग ७ रावलपिंडी परगना पंजाब.

यह भाग सिंधु और चनाब के मध्यस्थ हैं और ज्जेलम नदी इन दोनों के बीच में से वही हैं. संपूर्ण भाग पहाड़ी हैं यह प्राचीन तक्षिला जिला के स्थान पर बसा है जिसकी राजधानी इसी नाम से हसन अब्दाल के आग्नेय को थी.

१ जिला रावलपिंडी मनुष्य संख्या ७११००० सिंधू की सहायक नदी हारो अटक के दक्षिण में बाई और से जाकर उसमें गिरती हैं रावलपिंडी अर्थात् ग्राम हैं और अटक रावलपिंडी के उत्तर में पंजाब का आरोग्य स्थान है अटक का किला गढ़ अकबर ने सन १५०३ में बनाया था परंतु यह नगर इसके भी समय से आगे का बसा है अटक यह नाम कहते हैं की हिंदुओं को सिंधू नदी के उस पार जाने की

आज्ञा नहीं हैं परंतु अगले समयमें तो काबूल में हिंदुराज्य थे और युद्धयात्राके समयमें भी हिंदुओं ने कभी नदी पार जानेके लिये आज्ञा नहीं की. ईशान्यकोणके भाग गङ्गार लोगोंके अधिकारमें थे.

२ जिला ज्जेलम मनुष्यसंख्या ५०१००० हैं. मुख्यनगर ज्जेलम ज्जेलम नदीके दहिने तटपर और पिंडदादनखालवणथेणीमें ज्जेलमके वायव्यमें प्रसिद्ध रोहतासगढ़ हैं जिसे शेरशाहा और इसलामशाहाने गङ्गारोंके रोकने और उनसे बचनेके हेतु बनवाया था. ज्जेलम और पिंडदादनखांके मध्य बुकेफल जलालपूर व गिरजके निकट सिकंदर का बसाया हुआ नगर हैं. इसके उत्तरमें प्रसिद्ध बालनाथका मंदिर हैं जहां पहिले सूर्यनारायण स्थापित थे. परंतु आजकाल उसमें शिवके अवतार गोरखनाथकी पूजा होती है यह मंदिर पहाड़ संमेत - ३२४२ फूट उंचा है.

३ जिला गुजरात चनाब और ज्जेलमके मध्य मनुष्यसंख्या - ६१६००० हैं मुख्यनगर गुजरात. यहां गुजरजातीसे नाम पडा. चनाबके निकट जलालपूर इसके ईशानमें हैं. गुजरातके पूर्व ज्जेलम नदीके निकट प्राचीन नगर मुंगबसता हैं जहां सिकंदर बादशाहाने सन ३२७ में राजा पुरूको पराजित किया था और कुछ पूर्व को चिलियनवाला बसता है. जहां लार्ड गफ साहिबका और सीखोंका सन - १८४९ की तीसरी जानेवारीमें घोर संग्राम हुआ था.

४ जिला शाहपूर चनाब और ज्जेलमके मध्यमें मनुष्यसंख्या - ३६९००० हैं मुख्यनगर भीरा खुशाब और साहीवाल ये सब ज्जेलमके निकट बसते हैं भीरा प्राचीन नगर है खुशाब जे जलके निकट शाहपूर बसता है इसी नगरके नामसे यह जिला प्रसिद्ध है.

अंग्रेजीराज्यभाग८मुलतानपरगनापंजाबहा०

१ जिला मुलतान सतलज चनाब और रावीके मध्यमें हैं मनुष्य संख्या ४७२००० हैं मुख्यनगर मुलतान मनुष्यसंख्या ५७००० हैं चनाब नदीके बाएतटके निकट इस जिलामें होकर ब्यासनदीकी पुरानी धारा निकली हैं जिसका जल आजकल सूख गया हैं यह नगर पहिले रावीनदीके किनारे पर था जो अब तीस मीलसे भी अधिक दूरी पर बसती हैं. सिकंदरके समयमें इस जिलाके अधिकारी माली थे मुहमदका सीमने इसे जीत लिया था फिर यह हिंदुओंके हाथ लगा मुहमद गोरीने फिर इसे अपने अधिकारमें कर लिया और सन १४४३ तक देहलीके कराधीन बनारहा. इसके पीछे शेख यूसुफने इसराज्यको स्वतंत्र कर लिया था. जब हुमायूनराजा हुआ इसके फिर इसे अपने राज्यका सूबा बना लिया इसके पश्चात् अफगानोंने इसे अपने राज्यमें लगा लिया उनसे सन १८१८ में रंजित सिंहने ले लिया था परंतु इसराजधानीके घेरलेनेमें उसके १९००० मनुष्य मारे गये थे. मुलतान सूतरेशम दुशाळे गलीचे कोफतकारीके कामोंके कारण प्रसिद्ध हैं.

वहा उलहकजरिया और शाह शमसुद्दीन मुलतानमें बड़े दो मुसलमान औलिया होगये हैं शाह शमसुद्दीनकी दरगाह इस नगरके पूर्वको बनी हैं तुलंबाजो प्राचीननगर हैं अगले समयमें रावीनदीके बाए किनारे पर बसता हैं तै मूरनें इसे लूटकर जला दिया था.

२ जिला जुंग मुलतानके उत्तरमें मनुष्यसंख्या ३४८००० मुख्य नगर मधियाना जुंग और चनियट ये सब चनाब नदीके निकट बसते हैं चनियट शहाजहांके दो सेनापती वजीरबा और सादुलारा जन्मभूमी हैं.

३ जिला मांटगामेरी मुलतानके ईशानमें सतलजसे लेकर रावीन दीके उस पार तक फैला हैं। मनुष्य संख्या ३६०००० हैं मुलतानके सदृश इस जिलामेसे ब्यास नदीकी प्राचीन धारा चली गई हैं। मुख्यनगर कोटक मालिया रावीके पश्चिममें पाकपटन दीपालपूर गोर्गैरा रावीनदी के बाएतटपर दीपालपूर मुसलमान हाकिमोका प्राचीन राज्यस्थान था। पाकपटन अर्थात् स्वच्छ घाट फरीदशकर गंज फरीदशकर नामीवलीकी जो १२६६ में मरा पवित्र दरगाहके कारण कहलाता हैं। अजोधन इस नगरका प्राचीन नाम हैं अगले समयमें सतलज नदीपर बसता था। सर एच मांटगामेरीके नामसे जो पंजाबके लेफटेनेंट गवर्नर थे। इस जिलाको मांटगामेरी कहते हैं।

४ जिला मुजफरगढ़ त्रिमाब दक्षिणीय चनाब और सिंधूनदी के मध्यमें और मुलतानके पश्चिम और नैऋत्यकोणमें हैं मनुष्य संख्या ३००००० हैं। मुख्यनगर मुजफरगढ़ त्रिमाबके परे मुलतानके नैऋत्यकोणमें बसता हैं और कोट अदू मुलतानके वायव्य सिंधूनदी की और ज्जुकताहू आवसा हैं।

अंग्रेजी राज्य भाग ९ देराजात परगना पंजाब हा०

इस भागमें सिंधु नदीके उस पारके देश और जिला मुजफरगढ़के उत्तरकी और सिंधसागर दोआब हैं।

१ जिला देरागाजीखा मुजफरगढ़के पश्चिममें मनुष्य संख्या- ३०९००० हैं मुख्यनगर देरागाजीखा सिंधु नदीपर हैं।

२ जिला देराइस्माईलखा देरागाजीखाके उत्तरमें मनुष्य संख्या- ३०९००० हैं मुख्यनगर देराइस्माईलखा मनुष्य संख्या २५००० हैं उत्तरमें सिंधु नदीके दहिने तटके निकट लैया सिंधु नदीके पूर्व देराइस्माईलखा और देरागाजीखासे बराबर अंतरपर हैं।

३ जिला बंनू देराइस्माइलखाके उत्तरमें मनुष्यसंख्या ३००००० हैं। मुख्यनगर इसाखेल सिंधु नदीके दहिने तटके निकट, कालाबाग सिंधु नदीके दहिने किनारे पर इसके पश्चिममें नमख खदानें हैं। और बंनू पश्चिममें हैं।

अंग्रेजी राज्य १० भाग पेशावर परगना पंजाब हा०

१ जिला पेशावर सिंधु नदीके परे मनुष्यसंख्या ५२३००० हैं इस जिलामें काबूल नदी स्यात नदी को आधी दूरसे लेती हुई बहती हैं और अटक की उपरी और सिंधु नदीसे जामिली हैं मुख्यनगर पेशावर मनुष्यसंख्या ५९००० हैं इसी की निकट प्रसिद्ध खैबर घाट हैं यूसुफ जै खदक दाउद जै खलील और महमद पेशावर जिला की अफगान जाते हैं

२ जिला कोहत मनुष्यसंख्या १४५४०० हैं मुख्यनगर कोहात। पेशावरसे कालाबाग को जो सड़क गई हैं उसपर बसा हैं यह जिला अगले समयके उत्तरी औदक्षिणी बंगलासे संबंध रखता हैं।

३ जिला हजारा सिंधु नदीके बाए तट पर हैं रावल पिंजी के उत्तरमें हैं। मुख्यनगर हरीपूर और एबटाबाद। यह जिला अंग्रेजी भरतखंड का अत्यंत उत्तरी भाग हैं जो सिंधु और ज्जेलम के बीच में बसता हैं और कश्मीर के पश्चिमोत्तर सिवाने के किनारे २ इसका एक खंड लंबा परंतु सकरा होता हुआ चला गया हैं। इसी को काधान न कहते हैं यहां ज्जेलम के दहिने तट की सहायक नदी नैनसुख बहती हैं। नवाशहर वा एबटाबाद मेजर जेम्स एबट साहिब के नाम से कहलाया। जो सन १८५१ में यहां के जिला साहिब थे।

भरतखंड हिंदुस्थान के रजवाड़े

सन १८६८ इसवी के पार्लियमेंट के नकशों के अनुसार संपूर्ण रजवाड़े का क्षेत्रफल ५८६७९० वर्ग मील हैं अर्थात् भरतखंड के-

संपूर्ण क्षेत्रफलके एक तिहाईके लगभग हैं और इनमें ४८०००००० मनुष्योंकी बसती हैं. यहांके रजवाडेमे १ वे जिनको सनातनसे अपने राज्य प्रबंध करनेका अधिकार चला आता हैं और जो सनदके अनुसार लडका गादी लेसक्ता हैं. २ बडे जमीदान जिनको राज्य प्रबंध करनेका अधिकार नहीं हैं और ३ वे जिन्हे सरकारसे पिनूशन अर्थात् वार्षिक वेतन मिलता हैं. सिवाय इनके थोडेसे रजवाडे और है जैसे नेपाल भूतान जो सरकारके संधिमित्र हैं परंतू वे यथार्थमें स्वतंत्र विदेशी राज्य लेखे जाते हैं.

हैदराबाद निजामकाराज्यकलकत्ताहा.

निजाम मुसलमान वावी जात हैं. निजाम साहेब श्री मेवबुवदो ला निजाम. राज प्रमाण लंबाई चौडाई मैल ८०००० मनुष्य संख्या १ एक करोड हैं. आमदानी १६५ लाख हैं मुख्य नगर हैदराबाद मनुष्य संख्या २०००००० हैं और निजामका राज्य हिंदुस्थानमें सब रजवाडेसे बडा हैं. इसकू हैदराबाद दक्षिण कहते हैं क्योंकि एक हैदराबाद सिंधमें भी हैं. एक बडी उच्च समभूमी पर बसा हैं जो समुद्रके पृष्ठसे ८०० फूट उंची हैं. इसके उत्तरमें बरार मध्य प्रदेश पूर्व, और दक्षिणमें मद्रास हाता, और पश्चिममें मंबोई हाता हैं. इसके उत्तर और पूर्व दिशामे पैनगंगा और गोदावरी नदीया बहती हैं और दक्षिण में तुंगभद्रा और कृष्णा बहुतक बहकर इसकी सीमामे आई हैं एक नदीसे हेरमे है जिसके उपर मुशाफर निजामकी राजधानी हैं और यहां साहेब रेसिदेंटके रहनेके लिये एक सुंदर मैल बना हैं और इसका नाम भागानगर बोलते हैं और चंदुलालकी हैदराबाद बोलते हैं दक्षिण हैदराबाद बोलते हैं और इसके वायव्यमें गोलकुंडा हैं यहांपर एक दृढ़ मोटा किला हैं यहां नबाबकी कबरा बनी हैं और राजमैल सोभा हैं.

हाती घोडा नगारा नीसान भाड़वेटे बहोत हैं. मोटे मोटे अमराव हैं बागबगीचा बहोत हैं और मारवाडी सेठीयाव्यौपारी सराफी हुंडी सोना चांदी हीरामाणक मोती देणे लेणे का तथा धान का गला कपडा के व्यौपारी हैं और पेदास जर्मन उपर गेहू चणा ज्वारी सादा तमाखु रुई और कपडो जरी-काकसीरा को काम गलीचा को काम बहोत नामजा दी हैं यहा की सी समय हीरे की खाने थी और सीकंदराबाद मनुष्य संख्या ४०००० हैदराबाद के उत्तर में अंग्रेजी पलटने के रहने का स्थान हैं इसी के निकट पास हुसैन सागर ताल है और बोलारम ५ मील उत्तर को निजाम की पलटन रहने का स्थान हैं और समुद्र के तल से १९०० फुट ऊंचा वसता हैं.

कमेत मुनीयर के पूर्व में एक भारी कराधीन जमींदारी का मुख्य स्थान हैं. वरंगोळ ईशान्य में किसी समय में तैलिंगाना के हिंदुराज्य की राजधानी था जिसे अल्लाउद्दीन खिलजी ने जीता था औरंगाबाद मनुष्य संख्या — ५०००० वायव्य में दूधना नदी पर हैं जब औरंगजेब दक्खन का सूबेदार था उसी समय से यह नगर उसी के नाम से प्रसिद्ध हुवा औरंगाबाद में रेशम तथा जरी तारकस का काम रुई धान चणा गेहूं और बागवगीचे सोभाला यख हैं और दौलताबाद औरंगाबाद से ९ मील पश्चिम को वसता हैं यहां पर एक प्रसिद्ध गढ़ हैं. धारा गढ़ तथा देवगीर गढ़ इसके दो प्राचीन नाम हैं. एलूरगामध्ये जैनमत और ब्राम्हणी मत का अनेक मंदिर हैं. जालना मनुष्य संख्या १७००० नदी हैं इस नदी उपर एक पलटन रहती हैं.

राजपूताना प्रांत.

सानसाह श्रीदलीपत बादशहा मलिका मा आझमा विकटोरिया ग्रेंट ब्रिटन आणि अयर्लंड ये संयुक्त राज्य की महाराणी धर्मकोरक्षणार के सर इहिंदगव्हर्नमेंट राज्य में भरतखंड हिंदुस्थान का राज्यकर्ता.

गव्हर्नर जनरल लाठसाहिब बहादूर कलकताका आश्रयभूत महाराजा इसीकाराज्यवर्णन हैं.

राजपुतानामें १८ रजवाडे हैं. इन सबका क्षेत्रफळ १२०००० वर्ग मील हैं और इन सर्वमें ९० लाख मनुष्य बसते हैं. आमदनी २ करोड ३४ लाख के लगभग हैं इन रजवाडोंमें ११२५० घोड़ेस्वार और ६०८०० पैदल हैं परंतू अधिक हैं. इन १८ रजवाडोंमें केवल टोककानबाब मुसलमान हैं और शेष राजपूत हैं और इनके कामकाजकी देरवा भालीके लिये ७ पो ली टिकल एजेंट नियत हैं यहांकी उपजे विशेषकर ये हैं. गेहूं मकाई ज्वारी कपास बाजरा अफीम तील जव चणा और नमक लून धीरत.

रजवाडोंके इंग्रेज सरकारका मान तोफा ऐसे हैं.

१ चितोडगढ उदयपूर महाराज तोफ	१९	१० किसनगढ राजा तोफ	१५
२ जयपूर महाराजा -	१९	११ जैसलमेर रावल	१५
३ जोधपूर महाराजा	१७	१२ डोंगरपूर रावल	१५
४ कोटा महारावराजा	१७	१३ सिरौही राव	१५
५ बिकानेर महाराजा	१७	१४ भरतपूर राजा	१७
६ बुंदी महारावराजा	१७	१५ धौलपूर राजा	१५
७ करोली महाराजा	१७	१६ बासवाडारावल	११
८ परस्ताबगढ रावल	१५	१७ जालरापाटण जालरा	१५
९ अलवररावराजा	१५	१८ टोंक नवाब	११.

चितोडगढ उदयपूर देश मेवाड.

क्षत्री राजपूत सूर्यवंशी सीसोदिया जात हैं ये महाराजा उच्च कुलीन श्रीरघुकुलवंशसारखे हैं श्रीमन् महाराजाधिराज सर्वराजानके राजाधिपती हिंदुपद पादशहाजी श्रीमहाराणाजी श्रीफतेसिंहजी महाराजाका देश में वाडकाराज्य का लंबाई चौड़ाई चौरस क्षेत्रफळ -

११६१४ वर्गमील मनुष्यसंख्या १२००००० हैं यहांके महारानाजीकी -
 आमदनी २७ लाख अनुमानहैं परंतू अधिक हैं और राजपूतलोगोमें य-
 हांका रानाजी सबसे अधीक कुलीन और मान्य समजा जाता हैं और निवा-
 सी विशेषकर राजपुत भाई बेटे सरदार हैं और भीलमीना हैं. मुख्यनगर
 उदयपूर समुद्रके तलसे ३००० फूट उंचा बसता हैं यहां राजमहल बहोत
 सुंदर हैं और एक पीछो लानामताल हैं जहां जगमंदीर जंगनीवाश और
 राजमहल सुंदर हैं यहां बागबगीचा बहोत्सा हैं और एक किल्ला सजनग
 ठके ढुंगर उपर हैं यहांका आने जानेका एक रस्ता हैं और तोपमान १९
 स्वदेश २१ हैं और राजसोभा हाती घोडा नगारा निशान छत्र छडंगी
 सूर्यकरणी हैं और १६ राजा और ३२ अमराव राजा हैं यहांका दरबार हो-
 ता हैं जदी सो भावान हैं और भाई बैठा सरदार अष्टकोशल हैं इसीमें भा-
 ई चुंडावत शगतावत मुख्यकर्ता हैं चैत्रसुदी ३ की असवारी गरगौरकी
 अच्छी होती हैं और इससे ६ मील उत्तरको एक लिंग महादेवका मंदिर हैं
 और यहांसे मील २४ उपर श्री नाथ दुवारा अथवा काकडोलीमें राय समुद्र
 ताल मोटा हैं श्रीरूपचन्द्र भुजजी और केससानाथजी ये तीर्थस्थान हैं यहां
 यात्री बहुधा आया जाया करते हैं और यहांसे मील ७० पूर्वको तितौडका
 प्रसिद्ध गढ हैं जिमपर दोय भारी जयस्तंभ खंडा हैं इसजयस्तंभको
 रानाजी कुंभाजी अपनी गुजरात और मालवेकी विजयोंके प्रसिद्ध करने
 के निमित्त सन १४४० में बनवाया था और कालकादेवी और अन्नपूर्णा दे-
 वी नीलकंठ महादेव प्रसिद्ध हैं और किल्लालंबाई ६ मील हैं चौडाई २ मी-
 ल हैं मील १ उच्चा हैं और यहां मनुष्योकी वस्ती बी हैं और अगली समयमें
 अल्लाउद्दीन और अकबरने भी संग्राम किया था परंतू रानाजी कुंभाजीनें
 किल्ला ६४ देशमें वाडमें बनवाया था और सन १४७५ में राजगादी बे-
 ठा था वर्ष ५० राज किया और देश मालवाका अथवा गुजरातका राजा.

और खिलजी वंशका मुसलमान नबाब इसीने लडाईकी तयारी किया जदी संवत् १४९६ रानाकुंभाजी फौज १ लाख १४०० हाथी लेकर श-
नुवाकुं जीत लिया था और रानाकुंभाजीके कुलमें सौ भाग्यवती मिरा-
बाई जीको श्रीनाथजी प्रसन्न हुये हैं हरी भक्तीसे और चितोड गढके
तले वस्ती बसता हैं यहां राजपुताना रेलवे स्टेशन हैं. नदी घोडा पछा
ड और बेडच हैं और देश मेवाडका अफीमका जगात अंग्रेज सरकार
का यहां चुकता हैं और यहां ज्जाडी जंगल और पर्वत चौदशा हैं औ
र पेदास ज्वार मका अफीम तील ज्वारी गेहूं चणा साठा. और देश मे-
वाडमें चितोडगढमें महाराणाजी भोजराजजी की राणी मिराबाई भ
क्त हुई हैं मेडताका राठोडाकी कन्या होती परंतु श्री हरीजीकी भक्ती
सौ सर्वदुःख निवारण हुवा और श्रीकृष्णचंद्रजी प्रसन्न होयकर प्रजको
छाडिकर देश मेवाडमें श्रीनाथदुवारे प धारे हैं ऐसा भक्तकुल हैं.

महाराणाजीका राजक छेडीमें अमराव भाई बैठे सरदाराका दर
वार होता इसीका राजबेठका हैं.

नंबर	ठिकाना	जाती	कुल	पदवी	नाम	देश संख्या हैं
१	सादडी मोठी	जाला	मुंखुवाण	राज	शिवसिंहजी	दे-गुजरात हैं
२	बेदलो	चहुवाण	संभरी	राव	तगतसिंहजी	पूर्वका हैं
३	कोठास्यो	चहुवाण	संभरी	राव	केसरसिंहजी	देश पूर्वका हैं
४	सलुंबर	सिसोदिया	चुंडावत	रावत	जोधसिंहजी	मेवाडका हैं
५	धाणेरा	राठोड	मेडतीया	ठाकूर	जोधसिंहजी	मारवाडका हैं
६	वौज्जोल्या	प्रमार	प्रमार	रावत	स-गोविंदसिं	पूर्वका हैं.
७	देवगढ	सिसोदिया	चुंडावत	रावत	कृष्ण सिंहजी	मेवाडका हैं
८	वेधम	सिसोदिया	चुंडावत	रावत	स-मेघसिंह	मेवाडका हैं

नंबर	ठिकाना	जाती	कुल	पदवी	नाम	देश संख्या हैं.
९	देल्वाडा	जाला	मुंकुवाण	राज	फतेसिंहजी	देश गुजरात का
१०	आबेट	सिसोदिया	चुंडावत	रावत	सिवनाथसिंह	मेवाड का हैं
११	मेज्जो	सिसोदिया	चुंडावत	रावत	अमरसिंहजी	देश मेवाड का हैं
१२	गो धूंदो	जाला	मुंकुवाण	राज	मानसिंहजी	गुजरात का हैं
१३	काहनोड	सिसोदिया	सारंगदेव	रावत	उमेदसिंहजी	देश मेवाड का हैं
१४	भैंडर	सिसोदिया	सक्तावत	महाराज	मदनसिंहजी	देश मेवाड का.
१५	वधनोर	राठोड	मेडतीया	ठकूर	केसरीसिंह	मारवाड का हैं
१६	वानसी	सिसोदिया	सक्तावत	रावत	मानसिंहजी	देश मेवाड का हैं
१७	भैंसरोड	सिसोदिया	चुंडावत	रावत	भीमसिंहजी	देश मेवाड का
१८	पारसोली	चहुंवाण	संभरी	राव	लक्ष्मणसिंह	देश पूर्व का.
१९	कुरावड	सिसोदिया	चुंडावत	रावत	रत्नसिंहजी	देश मेवाड का
२०	आसीद	सिसोदिया	चुंडावत	रावत	अर्जुनसिंह	देश मेवाड का

ए महारानाजीका वंश वीर पराक्रमी विजयलक्ष्मी जय दयालू दाता र दानी धर्मिष्ठ हैं प्रजापालक राज्यकर्ता हैं.

जयपूर देश ठुंढाड राजपुताना कलकत्ता होता.

क्षत्री राजपूत कछवाहं जात हैं महाराजा श्री सवाई माधोसिंहजी महाराजा का राज्य लंबा चौड़ा चौरस क्षेत्रफल १५२५० वर्ग मील मनुष्य संख्या २०००००० हैं महाराजा की आमदनी ४४ लाख है परंतु अधिक हैं यहां के लोग श्रीरामचंद्रजी की गादी कहते हैं मुख्य नगर जयपूर इसका मध्य भाग चबूतर के सदृश १५०० फूट उंचा है जिसे जयसिंहजी दुसरे नं सन १७२८ में बसाया था. इसके ईशान में आंबर पुरानी राजधानी हैं और कछवाड राजपूतों के रहने का मुख्य स्था

नहीं और राजमहल बहोत सुंदर हैं राजसोभा हाथी घोडा नगारानि सान हैं तोफ मान १७ स्वदेशी १८ हैं इसी सहरका चौरस बजार हैं. दि-वालीकी रोसनाई सुंदर होता हैं और सहरपनाके वहार वागवगीचा ब होत्सा हैं और यहां हिंदुधर्मका अच्छे अच्छे मंदिर नामजादी हैं और राजमहलमें गोविंद देवजीका मंदिर जहां तसबीरा देखने लाइख हैं और रन थं भौरका किल्ला जिसका वर्णन भरत खंडके अतिहासमें बहुधा मिलता हैं. यहां गनपतीकी मूर्ती जिसका वर्णन स्त्रीजातीका मुखसे होता हैं और इसके पश्चिमोत्तर भागको शेखावाटी कहते हैं यहां राजपूत शेखावताका राज्य हैं और महाराजाके अमराव सरदार भाई बेटे ५२ हैं यहां ज्योतिषका एक नलिकायंत्र हैं जिसमें नक्षत्रादि देखे जाते हैं और सीमा उत्तर में बिकानेर और हिसार, पूर्वमें अलवर और भरतपूर, दक्षिणमें करोली ग्वालियर बुंदी टोक मेवाड और अजमेर, और पश्चिममें किसनगढ़ मारवाड. और उपज जव चणा गेहूं बाजरी रुई साठा मका तील और यहां कारीगर जंडैया और चितारा तसबीर करने वाला नामजादी हैं सांभर ज्जील जयपूरके पूर्वमें अगले समयमें जयपूर और मारवाडके राजा इस ज्जीलके आधेर भागीदार थे. सांभरमें अनुमान ९००००० मणनीमक प्रत्येक वर्ष बनाया जाता हैं. और नदी जयपूरके आग्नेयमें बनास और रचंबलके निकट बना हैं और पर्वतसे घेरा हुआ हैं

जोधपूर देश मारवाड-राजपुताना.

क्षत्री राजपूत राठोड जात हैं महाराजाधिराज श्री जसवंत सिंह जी महाराजका राज्य लंबाई चौड़ाई चौरस क्षेत्रफल ३५००० वर्ग मील मनुष्य संख्या १५००००० हैं महाराजाकी आमदनी रुपये ३० लाख हैं मुख्य जोधपूर जहां राजा रहता हैं यहां एक दृढ गढ़ बना हुआ हैं इसीपर महामंदिर और मोतीमहल देखनेके लायक हैं और तोफ मान १७ राज-

सो भा हाती घोडा नगारा नीसान हैं और इसराज्यमें २३ परगने हैं य-
हां हाती दात और काठीया चमडे का काम होता हैं और ए देशमें बालू रे-
ती सर्वत्र हैं इस देशमें ढोर और उंटों के चरने के लिये बहुतसे चरा हैं इ-
सके ईशान्यमें मैडता और नागोर और डीडवाना तीन नगर हैं जिनका
वर्णन मुसलमानों का इतिहासमें बहुधा किया गया हैं नागोर के पूर्वको
खडू बसता हैं यहापर पत्थर की अनेक खदानें हैं अहमद खडू नामी प्र-
सिद्ध फकीर का जन्म यही हुआ था और पश्चिममें फुलौधी और पोरवारन
हैं पोरवारन के पूर्वमें एक लवणज्जील हैं दक्षिणमें ज्वालोर सुकरी के त-
टके निकट बसता हैं यहांपर एक गढ हैं और भाई बेटें सरदार बहो-
सा हैं और देश मारवाड अथवा मरुत देश मरुधर देश भी कहते हैं
जो धपूर का राज्य मारवाड के पोलिटिकल एजेंट के आधीन हैं और यहां
नदी लूनी प्रसिद्ध हैं और जोधपूर के निकट २ ताल हैं और मारवाडमें पा-
नी उढा हैं और बागबगीचों हैं और राजपुताना रेलवे जोधपूर जाती हैं
पाली सहर नाम जादी हैं. और पेदास गहूं चणा ज्वारी बाजरी मोट मका
केर सागरी और पंचमंद्रामें लवणज्जील हैं और यहां होके लोग न्यौपारक
र्ता परदेश दक्षिणमें बहोत्सा जाया आया करते हैं और जोधपूरमें ज्योति
षी चंडवानी नाम जादी और ज्योतिष का गणित पंचाग वर्ष वर्षमें बना
ते हैं. और सीमा उत्तरमें बिकानेर जयपूर सेरवावटी साभर अजमेर
कीसनगढ देशमेवाड. विंध्याचल पर्वत आबू पहाड सीरोही ज्वाला
वाड कच्छ भूज जैसलमेर हैं. और संवत् १५१५ राव जोधाजीने जोध
पूर वसाया था. यहां पर्वत भोमसी नाम घेरा हुआ जहां देवमंदिर हैं.

बीकानेर देश मारवाड राजपुताना

क्षत्रीराजपूत राठोड जात हैं महाराजा श्री सिंहजी महाराज का
राज्य लंबा चौड़ा चौरस क्षेत्रफल १०६८० वर्ग मील मनुष्य संख्या —

५५०००० हैं यहाँके आमदनी ७५०००० हैं इनरजवाडामें कूडाबहु
धा ३०० फूट ऊँचा गहरे होते हैं यहाँकीछा और राजमहल सो भावानहैं
और जो धपूरका भाईपहैं और राजपुत सरदार बहोत्सारहते हैं औ
र तोपमान १७. हाथी घोडा नगारा निसान राजसो भा सुंदर है और.
बागबगीचा हैं. सहरपनाबी हैं और मुख्यनगर बिकानेर मनुष्यसंख्या
२०००० हैं इसी देशमे बालूरेती बहुधा हैं आजकाल समयमें महाराजा
के और भाई बेटे सरदाराके कुछ तकरार चलता हैं और पेदास बाजरी
मूग मोठ गेहूं चणा सागरी केर और उंट अछे होते हैं. बकरीबी होते
हैं. सीमा पश्चिममें उत्तरमें पंजाब भावलपूर, पूर्वमें जयपूर सेखावठी
भरतपूर और जोधपूर जैसलमेर और सिंध देश. और नदी तालबी हैं. य
हाँके लोग व्यौपारकर्ता परदेशमें बहुधा हैं.

जैसलमेर देश मारवाड राजपुताना.

क्षत्री राजपुत भाटी जात हैं महारावलजी श्री बेरी सालजी महा
राजका राज्यका क्षेत्रफळ १२२५० वर्गमील मनुष्यसंख्या ७५००० हैं.
यहाँकी आमदनी १००००० हैं और मुख्यनगर जैसलमेर यहाँ एकगढ
किला हैं जहाँ जैनमतको अनेक मंदिर और एक प्राचीन पुस्तकालय
हैं और राजमहल सुंदर और तोपमान १५ हाथी घोडानगरानीसा
नहैं और सहरपनाके बाहेर बागबगीचा हैं यहाँ बालूरेती हैं और प
र्वत ज्जाडी वृक्ष थोडा हैं ए राज्यमें वस्ती कम हैं और यहाँके लोग
व्यौपारकर्ता परदेशमें बहुधा हैं और क्षत्री भाटी जे हिंदुस्थानमें
हैं जे इसी महारावलजीका वंश हैं और सीमा पूर्वमें जोधपूर उत्त
रमें पंजाब पश्चिममें सिंधदेश दक्षिणमें कच्छ जालावाड. पेदास
बाजरी मोठ गेहूं चणा और मरुभूमी कहते हैं.

किसनगढ देश मारवाड अजमेरा

राजपुताना कलकत्ता हाता.

क्षत्री राजपूत राठोड जात हैं. महाराजाजी श्रीशार्दूलसिंहजी महाराजका राज्यका क्षेत्रफल ७२४ वर्गमील मनुष्यसंख्या १००००० हैं यहांके आमदनीरूपये २५०००० हैं. मुख्यनगर किसनगढ किसनसिंहजी नाबसायाथा यहां राजमहल गढ हैं सहरपनाके बाहेर बागबगीचा हैं तोफ मान १५ हाथी घोडानगारानीसान हैं और इनके राज्यमें सरवाड नाम एक ग्राम हैं जहां एक दढ किल्ला हैं. यहां हीरा सुपेतला ल नीले रंगका पत्थरकी खान हैं और जो घपूरका भाईप हैं और राजपुताना रेलवे स्टेशन हैं अजमेर दिल्ली जाते हैं और पेदास जववाणा मका वाजरी रुई मोठ साठ अफीम गेहूं. सीमा अजमेर और जयपूरके मध्यमें हैं.

कोटा देश हाडोती राजपुताना कलकत्ता हाता.

क्षत्री राजपूत हाडा जात हैं. महारावजी श्रीछत्रशालजी महारावजीका राज्यका लंबा चौडा चौरस ५०००० वर्गमील मनुष्यसंख्या ४५०००० हैं यहांके आमदनी २५००००० हैं परंतू अधीक हैं. मुख्यनगर कोटा मनुष्यसंख्या १००००० चंबल नदीके दहिने किनारे पर हैं नगरके सहरपना और चंबल नदीमे पानीका दहभरारहता हैं यहां पत्थरका घाट बांधा हैं. संगोद मनुष्यसंख्या १२००० और यहां राजमहल बहोत सुंदर तोपमान १७ हाथी घोडानगारानीसान हैं और दशरावा की असवारी नाम जादी और बागबगीचा सोभावान हैं और यहांके राज्यमें ज्जाला जालम सिंहजी राज्यका मकर्ताथा कोईक समयमें महारावजी कुसीसे जालाने राज्य विभाग दियाथा जदी इसी राज्यविभागका नाम ज्जालरापाटन नाम रखवा हैं. पेदास कपास अफीम ज

व मका चणा साठा गेहूं. और बुंदी का महाराव का भाई प हैं. और चतुः सीमा पश्चिम में देश मेवाड उत्तर में जयपूर टोंक पूर्व में ग्वालेर का राज्य दक्षिण में जालरा पाटण और बुंदी का राज्य. यहा व्यौ पार बहोत होता हैं.

बुंदी देश हाडोति राजपुताना कलकत्ता हाता.

क्षत्री राजपूत हाडा जात हैं. महाराव राज श्री राम सिंह जी महाराव जी का राज्य का लंबा चौडा चौरस क्षेत्रफल २२९१ वर्ग मील मनुष्य संख्या २२४००० हैं यहाँ के आमदनी रुपये ५००००० हैं. मुख्य नगर बुंदी मनुष्य संख्या ४०००० जहाँ जुनी और नवी वस्ती हैं. पर्वत फूट ४०० उच्चा इसी उपर एक किल्ला उपर राज महल सुंदर हैं और एक पर्वत की ज्जील पडती रहती हैं सहर के घाटे में एक ताल में पानी भरार होता हैं और यहाँ चौक जहाँ पानी के फुवारा छूटता हैं और तोफ १७ मान हाथी घोडा नगारानी सान हैं. और कोटा का राज्य इसी का भाई प हैं और जालावाड वी हाडोति कहते हैं और यहा विद्यालय सरस्वती भंडार हैं यहाँ बडा एक दधीचवंशोद्भव जाती के पंडित आशानंद जी होगया हैं. पेदास गेहूं चणा कपास जव ज्वारी अफीम साठा. नदी चंबल और इसकी सहायक नदिया काली सिंध और पार्वती वहती हैं. चतुः सीमा पश्चिम में देश मेवाड उत्तर में जयपूर पूर्व में कोटा दक्षिण में जालावाड. भाद्रपद कृष्णामे ३ का उत्सव नाम जादी होता हैं और महाराव राजा जी हाडा में उच्च कुलीन हैं दयालू राज नीती प्रजापालक हैं.

जालरा पाटन देश हाडोती जालावाड.

राजपुताना कलकत्ता हाता.

क्षत्री राजपूत जाला जात हैं. महाराजा श्री जालीम सिंह जी महाराज का राज्य का लंबा चौडा चौरस क्षेत्रफल २५०० वर्ग मील मनुष्य संख्या २२६००० हैं. यहाँ की आमदनी रुपये १५००००० परंतू अधि

क हैं. मुख्यनगर ज्जालरापाटन मनुष्यसंख्या ५००००. जाला जालि मसिंहजीने इस नगरको प्रथम बसाया था यह राज्य कोटाका महारावजीने राज्यभाग दिया था. ज्जाला जालिमसिंहजीने मिला था और जाल रापाटनसे मील ३ लवा छावनी सहर यहां राजधानी हैं राजमहल एक किल्ला सुंदर हैं राजसोभा हाती घोडा नगरानीसान तोफ १५ मान हैं और सन १८५६ में यहां लूट हुवा था और बागवगीचा सोभाबान हैं और नदी वीनजी और एक ताल हैं और देश सुधावाडामां ४ परगना आबादान हैं. पैदास गेहूं चणा जव बाजरी ज्वार तिल साठा और अफीम हैं चतुःसीमा उत्तरमें कोटाबुंदी, पश्चिममें उदयपूर राज्य, दक्षिणमें रामपुरो हुलकर सिंधीया राज्य, पूर्वमें सिंधीया करोली राज्य हैं.

परतावगढ भीलवाडबागडराजपुतानाकलकत्ता.

क्षत्री राजपूत सूर्यवंसी सीसो दिया जात हैं महारावलजी श्री उदयसिंहजी महाराजका राज्य लंबाई चौड़ाई क्षेत्रफळ १४७ वर्गमील मनुष्यसंख्या १५०००० हैं. यहांकी आमदनी २५०००० मुख्यनगर परतावगढ राजमहल एक किल्ला सुंदर हैं. पर्वतसे घेरा हुवा हैं. और देवत्या लंबा मील ६ उपर राजमहल हैं राजसोभा तोफ मान १५ हाथी घोडानगरा निसान हैं और महारानाजीरा भाईप हैं. और समुद्रसे १७०० फूट उंचा हैं. यहां पैदास अफीम गेहूं चणा जव ज्वार तिल साठा बाजरी. सीमा उत्तरमें मेवाड पश्चिममें डोंगरपूर, दक्षिणमें मालवा पूर्वमें नीमच जावद अठाना और बागवगीचा बहोत्सा हैं.

डोंगरपूर भीलवाडबागडराजपुतानाकलकत्ता.

क्षत्री राजपूत सूर्यवंशी सीसो दिया जात हैं. महारावलजी श्री उदेसिंहजी महाराजाका राज्य का लंबा चौड़ा क्षेत्रफळ १००० वर्गमील मनुष्यसंख्या १००००० हैं यहांके आमदनी १२५००० परंतु अ-

धीक हैं और राजमहल एक किल्ला हैं. पर्वतसे घेरा हुआ. जाड़ी जंगल हैं राजसोभा तोफ मान १५ हाथी घोडा नगारा निसान हैं. और यहाँ के निवासी राजपूत भील जातीके हैं. पेदास गेहूँ चणा ज्वार बाजरी जव साठा तील अफीम और लकड़ी बास होता हैं. चतुःसीमा उत्तरमें देश मेवाड पश्चिममें सीरोई आबु दक्षिणमें बासवाडा पूर्वमें परतापगढ राज्य. और महारानाजीका भाईप हैं और बागबगीचा हैं. नदी १ यहाँके निवासी भील राजपूत हैं.

बांसवाडा भीलवाड बागड राजपुताना कलकत्ता.

क्षत्री राजपूत सूर्यवंशी सीसोदिया जात हैं. महारावजी श्री लछमणसिंहजी महाराजका राज्य लंबा चौडा १४४० वर्गमील मनुष्यसंख्या १४४००० हैं यहाँकी आमदनी १५०००० आसरे अनुमान हैं. राजमहल और किल्ला डुंगरपर हैं. और राजसोभा हाथी घोडा नगारा निसान तोफ ११ मान हैं और नदी मही नामवहती हैं यहाँ निवासी भील मीना राजपूत. वंध्याचलकी राजश्रेणी जाड़ी जंगल बहोत्सा हैं पेदास गेहूँ चणा जव बाजरी रुई अफीम तील साठा. सीमा उत्तरमें डोंगरपूर, पश्चिममें सीरोही दक्षिणमें वडोदाराज्य, इडर, पूर्वमें परतापगढ मालवा और महारानाजीका भाईप हैं. मेवाडके पोलिटिकल एजेंट रसिदेंटके आधीन हैं. यहाँ बागबगीचा हैं.

सीरोही देश मारवाड छोटी राजपुताना कलकत्ता.

क्षत्री राजपूत देवडा जात हैं. महारावजी श्रीकेसरी सिंहजी महाराजका राज्य लंबा चौडा क्षेत्रफल ३१२४ वर्गमील मनुष्यसंख्या १५०००० यहाँकी आमदनी रुपये १५०००० हैं. मुख्यनगर सीरोही पर्वत उपर गढ राजमहल हैं जाड़ी जंगल हैं इस राजवाडेके मध्य-

में आबू पर्वत हैं जिसके सबसे उंची चोटी गुरुशिखर ५७०० फुट हैं अर्बली श्रेणी सिरोही मेवाडकी उच्चसमभूमीसे अलग करती हैं इस रजवाड़े में दश परगने हैं जिनमें राजपूत भील मीना गरासिया जति बसती हैं राजसोभा हाथी घोडा तोफ १५ मान यहां तबरो के कारण प्रसिद्ध हैं और आबू पर्वत आरोग्यस्थान और जैनमतवालों के बड़े तीर्थस्थान हैं. कहते हैं की यह के मंदिर १८ करोड़ रुपये लगकर बने थे और यहां राजपुताना का अठाराजा का जनरल रसिडंत रहते हैं य हा महाराजा का कामकाज रेख देख करते हैं. आबू से सीरोही मील २१ लंबा हैं. और पैदास चणा जव बाजरी मांठ गेहूं अफीम. सीमा-उत्तरमें जांधपूर मारवाड, पश्चिममें जालावाड कछ, दक्षिणमें वडोदा राज्य और इडर राज्य पूर्वमें देश मेवाड हैं. राजपुताना रे लवे स्टेशन आबू रोड नाम हैं लंबा ३ मील हैं और यहां के सा-हुकार व्योपारकर्ता देश दक्षिणमें नीवाशकर्ता हैं.

भरतपूर राजपुताना कलकत्ता हाता.

जाट जात हैं महाराजा श्री जसवंत सिंह जी महाराजा का राज्य लंबा चौडा क्षेत्रफळ १८७४ वर्ग मील मनुष्य संख्या ६००००० हैं. यहां के आमदनी रुपये २६५००००. मुख्यनगर भरतपूर राजा के रहने का मुख्यस्थान हैं. यहां एक गढ़ हैं. डीग में एक प्रसिद्ध महल हैं राजसोभा तोफ १७ मान हाथी घोडा नगारा नीसान और बागबगीचा सुंदर. इस रजवाड़े में १३ परगना हैं. जिनमें विशेषकर के जाट लो गरहते हैं भरतपूर से १६ मील उपर एक महाराजा का बागनाम जा दी यहां राजमहल जहां फवार सुंदर धनुषाकार छुटते हैं और रूपवास में लाल रेतीले पथरो की खदानें हैं और भरतपूर का रजवाडा भरतपूर के पोली ठिकल एजंट के आधीन हैं. नदी उटंगन

वा बनगंगा पेदास जव चणा गेहूं बाजरी सांठा मोठ और चतुःसीमा भरतपूरके पश्चिममें अलवर दक्षिणमें जयपूर करोली धोलपूर जीला आगरा पूर्वमें मथुरा और आगरा उत्तरमें पंजाब हैं और भरतपूरका किल्ला नामजादी हैं परंतू अगले समयमें लडाईसे कुछ जोखम हुवा हैं. और रजपुताना रेलवे स्टेशन हैं.

अलवर देश दुबाड राजपुताना कलकत्ता हाता.

क्षत्री राजपूत कछवा जात हैं महाराजराजाजी श्रीमंगलसिंहजी महाराजाका राज्य लंबा चौड़ा क्षेत्रफळ ३५७३ वर्गमील मनुष्यसंख्या— ७०००००. यहांके आमदनी रुपये २०००००० हैं यहां पहिले मेवाडके प्राचीन जिले का भाग था. मुख्यनगर अलवर यहां राजमहल और एक किल्ला हैं. राजसोभा तोफमान १५ हाथी घोडानगारा निसान हैं बागबगीचा सुंदर हैं और जयपूरका भाई हैं एक ताल और नदी १ मील ३ पर हैं इसके पूर्वमें लसवाडी जहां जनरल लेकनेसन १८०३ में मरहट्टोको पराजित किया था. पेदास जव चणा गेहूं बाजरी मुंग मोठ साठ. और चतुःसीमा उत्तरमें जयपूर पश्चिममें मथुरा. और जाडी जंगल पर्वत हैं यहां रेलवे स्टेशन हैं.

करोली राजपुताना कलकत्ता हाता.

क्षत्री राजपूत यदुवंशी जात हैं महाराजराजाजी श्री अर्जुनपालजी महाराजाका राज्य लंबा चौड़ा क्षेत्रफळ १८७० वर्गमील मनुष्यसंख्या १८००००. यहांके आमदनी ३५०००० हैं. मुख्यनगर करोली चामलन दीके बाएतटपर बसते हैं यहां पर्वत उपरा किल्ला जहां राजमहल सुंदर राजसोभा तोफमान १७ हाथी घोडानगारा हैं बागबगीचा सोभावान हैं. और यदुवंशीमें येही राज्य हैं जयपूर और धौलपूरके मध्यमें हैं. पेदास गेहूं चणा ज्वारी साठा अलसी. सीमा उत्तरमें जयपूर दक्षिणमें

धौलपूर पूर्वमें सींधीया ग्वालहेर राज्य पश्चिममें मध्यप्रदेश हैं नदी चामल वहती हैं.

धौलपूर राजपुताना कलकत्ता हाता.

जाटजात हैं. महारानाजीका राज्यका लंबा चौड़ा क्षेत्रफल -

१६२६ वर्गमील मनुष्यसंख्या ५२५०००. यहांके आमदनी १०००००० हैं मुख्यनगर धौलपूर चामल नदीके बाए किनारे पर हैं. यहां राजमहल और एक किल्ला पर्वत उपर हैं राजसोभा तोप १५ मान हाथी घोडा बागबगीचा सुंदर हैं और इसराज्यमें विशेष करके जाट लोग रहते हैं यहां अनेक मसजिदें और मकबरे बने हैं. इसके उत्तरमें जाजऊ वा सराय जाज उत्तंगन नदीके बाए किनारे बसता हैं. यहां पर सन १७०७ ई० में बहादुर शाहाने अजम शाहको पराजित करके उसकी गादी लेली थी. पेदास गेहूं चणाज्वारी साग. यहां राजपुतानाका एजेंट के आधीन हैं और नदी १ चामल वहती हैं. चतुःसीमा करोली उत्तरमें हैं पूर्वमें ग्वालहेर राज्य पश्चिममें मध्यप्रदेश दक्षिणमें उट्टेवाडी देश.

टोंक राजपुताना कलकत्ता हाता.

मुसलमान पठान जात हैं. नबाब साहिब श्री अम्बारै मजीकारा ज्य लंबा चौड़ा क्षेत्रफल २३७० वर्गमील मनुष्यसंख्या ३०८००० हैं यहांके आमदनी १४००००० हैं इसराज्यमें ६ पृथक जिले हैं यहां राजमहल नजरबागमें हैं जहां नबाब साहेब रहते हैं और एक किल्ला जिसपर राजमहल सुंदर राजमान तोप ११ हाथी घोडा और टोंक रामपुरानी ममेरा सिरोंज चपरा पिरावा और नदी बनास पार्वती इस राज्यमें वहती हैं. और यहांका पहिला अमीर महमद अमीर खाबडा नामी होगया हैं. पेदास जवमका चणा गेहूं बाजरी साग. चतुःसीमा पूर्वमें जयपूर उत्तरमें किसनगढ़ पश्चिममें मेवाड दक्षिणमें-

हाडोती.

भरतखंडकी मध्यएजंटीकेरजवाड़े.

मध्य भरतखंडकी एजंटीमें ७१ रजवाड़े हैं जिनका क्षेत्रफल ८३६०० वर्गमील और जिनमें प्रायः ८० लाख मनुष्य रहते हैं आमदनी इन सबोंकी २ करोड़ ६१ लाख है ये रजवाड़े नर्मदानदीके दहिने किनारेसे लेकर चंबल नदीके दहिने किनारे तक फैले चले गये हैं

इस रजवाड़ेके तीन भाग हैं

- १ पूर्वोत्तर भाग अर्थात् रीवा और बुंदेल खंडके रजवाड़े.
- २ उत्तरी भाग अर्थात् सिंधीयाका राज्य ग्वालियर और आश्रित
- ३ नैऋत्य भाग अर्थात् देश मालवेके रजवाड़े. [रजवाड़े.

रीवा ग्वालियर इंदौर देहरी और दतिया. भोपालके राजा-अपनी २ प्रजाको फौजदारीके जजुगडोंमें फांसी तक देनेका अधिकार रखते हैं.

पहला रीवा और बुंदेलखंड परगना.

क्षेत्रफल २२४०० वर्गमील मनुष्यसंख्या ३२००००० हैं आमदनी ६५ लाख इस भागमें आधेसे भी अधिक रीवाका राज्य है जिसकी आमदनी २५ लाख है.

रीवा मध्यदेश बुंदेलखंड कलकत्ता हाता.

क्षेत्री राजपूत वाघेला जात हैं महाराजाका राज्य लंबा चौड़ाई क्षेत्रफल १२७२३ वर्गमील मनुष्यसंख्या १३८०००० हैं यहांके आमदनी रुपये २५००००० हैं. मुख्यनगर रीवा यहां एक किला और राजमहल सुंदर हैं राजसोभा तोफमान १७ हाथी घोड़ानगारानी-सान और बागबगीचा सोभावान हैं और रीवाका राज्य अमरकंटकसे लेकर इलाहाबाद और बांदा जिले तक फैला है और केमूर श्रेणीके

बीचमें पडनेसे इसके दोटुकडे होगये हैं ये देश धातू और कोयलेकी खदान और जंगलोसे भरे हुए हैं. नदीया ठोंस सोनवेहरपर महाराजके रहनेका स्थान हैं. और बुंदेला राजपुतोंका स्थान ३५ रजवाडे हैं और पेदास गेहूं चणा बाजरी अलसी साठा धातू और कोयला और बुंदेला राजपुतोंका यहाका महाराज मुख्यिया माना जाता हैं और बांदो गढ बाघेले राजपुतोंका प्रसिद्ध गढ हैं.

दतिया बुंदेलखंड मध्यदेश कलकत्ता हाता.

क्षत्री राजपूत बुंदेला जात हैं. महाराजाजी श्री भवानी सिंहजी महाराजका राज्य लंबाई चौडाई क्षेत्रफल ८५० वर्गमील मनुष्यसंख्या १३०००० हैं. यहांके आमदनीरुपये १०००००० हैं यहां एक किल्ला जहा राजमहल सुंदर हैं राजसोभा तोफ मान १५ हाथी घोडानगरा और बागबगीचा हैं और जैनमतके अनेक मंदिर हैं और भाई बेटे. सरदार नीवासी हैं. पेदास गेहूं चणा साठा बाजरी अलसी और ज्जासी के वायव्यमें हैं. नदी सिंध उत्तर पश्चिम लंबा १० मील हैं मुख्यनगर दतिया मनुष्यसंख्या ४००००

उछा बुंदेलखंड मध्यदेश कलकत्ता हाता.

क्षत्री राजपूत बुंदेला जात हैं महाराजाजी श्री परताप सिंहजी महाराजका राज्य लंबाई चौडाई क्षेत्रफल २१६० वर्गमील मनुष्यसंख्या २००००० हैं यहांके आमदनीरुपये १२००००० हैं और एक किल्ला राजमहल सुंदर हैं. राजसोभा तोफ मान १५ हाथी घोडानगरा निसान और उछा नगर बेटवानदीपर हैं वीर सिंह बुंदेला यहां रहता था. जिसने अबूल फजलको मार डाला था. पेदास गेहूं चणा अलसी साठा चावल सीगाडा ज्जाडी जंगल पर्वत बहोत्सा हैं.

छतरपूर बुंदेलखंड मध्यदेश कलकत्ता हाता.

क्षत्री राजपूत बुंदेला जात हैं. महाराजाका राज्यकालंबाई चौड़ाई क्षेत्रफल १२४० वर्गमील हैं मनुष्यसंख्या १२०००० हैं. यहांके आमदनी रुपये ३००००० मुख्यनगर छतरपूर यहां एक किल्ला राजमहल राजसोभा तोफ मान ११ हाथी घोड़ा और बागबगीचा सुंदर हैं और यहां पर छत्रसालकी समाधी हैं ललतपूरके पूर्वमें हैं. पेदास गेहूं-चणा जव अलसी साठा.

अजयगढ बुंदेलखंड मध्यदेश कलकत्ता हाता

क्षत्री राजपूत बुंदेला जात हैं महाराजाका राज्यकालंबाई चौड़ाई क्षेत्रफल ३४० वर्गमील मनुष्यसंख्या ९०००० हैं यहांके आमदनी रुपये १७५००० मुख्यनगर अजयगढ यहां एक किल्ला जहां राजमहल और बागबगीचा सुंदर हैं. राजसोभा तोफ मान ११ हाथी घोड़ानदी १ और पनाके दक्षिणमें हैं. पेदास गेहूं-चणा बाजरी साठा. यहां जंगल जाड़ी बहोतसा हैं.

पना बुंदेलखंड मध्यदेश कलकत्ता.

क्षत्री राजपूत बुंदेला जात हैं महाराजाका राज्यकालंबाई चौड़ाई क्षेत्रफल ६८८ वर्गमील मनुष्यसंख्या ६८००० हैं यहांके आमदनी रुपये ४००००० मुख्यनगर पना यहां एक किल्ला जहां राजमहल और बागबगीचा सुंदर हैं. राजसोभा हाथी घोड़ा और पना बाँदे-के दक्षिणमें हैं पना शहर समुद्रके पृष्ठसे १३०० फूट उंचा बसता है यहां हीरोकी कारण प्रसिद्ध हैं अगले समयमें इस जिलामें उत्तम प्रकारके हाथी मिलते थे.

चरखारी मध्यदेश बुंदेलखंड कलकत्ता हाता.

क्षत्री राजपूत बुंदेला जात हैं महाराजाका राज्यकालंबाई चौ-

डाई क्षेत्रफल ८८० वर्गमील मनुष्यसंख्या ८१००० हैं यहांके आमदनीरूपये ५००००० हैं मुख्यनगर चरवारी यहां एक गढ राजमहल और बागबगीचे सुंदर हैं राजसोभा तो फमान ११ हाथी घोडा और जाडी जंगल हैं नदी १ पैदास गेहूं चणा अलसी साग और पनाके दक्षिणमें हैं।

दूसरा सिंधीयाकाराज्य ग्वालियर और दूसरे—
आश्रित रजवाडे.

ग्वालियर लसकर मध्य देश मालवा कलकत्ता हा०

मरेठा जात हैं सिंधीया महाराजा श्री जीवाजी संसेर अलीजा वहा दूरकाराज्य लंबाई चौडाई चौरस क्षेत्रफल ११५०० वर्गमील मनुष्यसंख्या १२५००० हैं यहांके आमदनी रूपये ६८००००० मुख्यनगर ग्वालियर नदी सुवर्णरेखा पर हैं यहां एक प्रसिद्ध गढ हैं और राजमहल बागबगीचा बहोत सुंदर हैं राजसोभा तो फमान ११ हाथी घोडा नगारा नीसान हैं इसीके निकट सुरारकी छावनी हैं यहां फौजलसकर रिया करता हैं और इससे १५ मील पश्चिममें महाराजपूर बसता हैं जहां लार्ड गफने ग्वालीयरकी सेनाको सन १८४३ में पराजित किया था और उसी साल और उसी दिन २९ दिसंबरको पन्धार पर मेजर जनरल ग्रेने मरहठेकी दूसरी सेनाको हराया था सिंधू नदीके निकट नरवर वसता हैं जहां वीर सिंह बुदेछाने अबुल फजलको मार डाला था.

देश मालवामें नैर्ऋत्य कोणके पृथक् भागमें उज्जैन क्षिप्रानदी पर समुद्रके तलसे १७०० फूट उंची हैं और सिंधीया महाराजकाराज्य हैं इसी राज्यका विभाग ४० परगना हैं और आश्रयभूत महाराजा बहोत्सा हैं मुख्यनगर उज्जैन अगर सुसनेव बडौद रुणीजा

राजगढ़ आमजरा बडनगर खाचरोद मंदसोर जावद निमच और-
गंगापूर. निमचमें अंग्रेज सरकारकी छावनी हैं. और उज्जैनमें क्षि-
प्रानदी जहां महाकाल महादेवका मंदिर तटपर हैं और सहरमें गो-
पालराज मंदिर सुंदर हैं और यहां अगले समयमें विक्रमादित्यकी प्राची-
न राजधानी थी और यहां और धौलपूर और ज्वांसीके मध्यमें ग्वालिय-
र हैं पेदास गेहूं चणा ज्वारी अफीम साठा अलसी चावल रुई मका.

इंदौर मालवा मध्यदेश होलकर राज्य कलकत्ताहा.

मरेठाजात हैं होलकर महाराजा श्री शिवाजीराव संसेर अलीजा
बहादुरका राज्यका लंबाई चौड़ाई चौरस क्षेत्रफल ०३२० वर्ग मील म-
नुष्य संख्या ९१५००० हैं आसरे अनुमान यहांके आमदनी रुपये -
३०००००० हैं आसरे अनुमान हैं मुरव्यनगर इंदौर नदी चंद्रभागा
कावेरीपर राजमहल सुंदर हैं और राजसोभा तोफ १९ मान हाथी घो-
डा नगारा निसान और फौज पलटन यहां रहती हैं और जाडवृक्ष बाग-
बगीचा बहोत्सा हैं और सहरकी सड़का सफाई अच्छा हैं यहां मारवा-
डी सेठीया धनपात्र और व्योपार अफीमका बहुधा होता हैं इंदौर म-
नुष्य संख्या १५००० समुद्रके पृष्ठसे २००० फूट उंचा हैं और इसके पूर्व
में रसिदेत साहेबकी छावनी हैं. जहां रसिदेत एजेंट साहेब रहते हैं.
और यहां होलकर सिंधीया रेलवे स्टेशन हैं और दक्षिण दिशामें मऊ
अंग्रेजी छावनी सदरकंपू हैं और इसके नैर्ऋत्य कोणमें चोली महेश्वर-
जहां एक किल्ला गढ़ सुंदर हैं. और पेदास अफीम गेहूं चणा ज्वार बाजरी
साठा रुई अलसी चावल. चतुःसीमा दक्षिणमें नर्मदासे लेकर उत्तरमें
रामपुरा भाणपूर तक चली गई हैं और महीदपूर इंदौरसे उत्तरमें य-
हांपर सरटी हिस्लाप साहिबने मल्हारराव होलकरको सन १८१७ में
पराजित किया था और पश्चिम दिशामें एक पीलारवाल इसपर साधू-

स्वारवीरमतारामकामंदिरजहांभक्तवैष्णवबहुधाआयाजायाकरते हैं और नदीपर महाराजाकीछतरीयाबहोत्साहैं और यहांबागबगीचा फलफूलबहोत्सासुंदरहैं और अगलेहोलकर महाराजबड़ेसूरभीहो ते. और पश्चिमदिशामध्येपीलाखालउपरएकस्वारवी माराज हंसदास जी साधुचमत्कारी हुवाहैं आज समयमेंसीयारामदासजीवर्तमान हैं और दक्षिणदेशामें एकसंतदुदाधारीरहतेहैं

समथर बुंदेलखंडमध्यदेशकलकत्ता हाता.

क्षत्री राजपूत बुंदेलाजातहैं महाराजाजी श्रीचतुरसिंहजी- महाराजाका राज्यकालंबाईचोडाई क्षेत्रफल २७५ वर्गमील मनुष्य संख्या १०००० हैं आसरे अनुमानहैं यहांके आमदनी रुपये — ४५०००० आसरे अनुमान मुख्यनगर समथर यहां एक किल्ला जहां राजमहल और बागबगीचे सुंदर हैं राजसोभातोफमान ११ हाथी घोडा और पेदास गेहूं चणा साग रुई बाजरी. ऐक यहां नवीन मोटा- किल्ला वधाया हैं और एक रामनामीका मेला भरता हैं.

विजापूर बुंदेलखंडमध्यदेशकलकत्ता हाता.

क्षत्री राजपूत बुंदेलाजातहैं महाराजाका राज्यलंबाई चोडाई क्षेत्रफल १२० वर्गमील मनुष्य संख्या १०००० हैं यहांके आमदनी रुपये २५०००० आसरे अनुमान मुख्यनगर विजापूर यहां एक किल्ला राजमहल और बागबगीचा यहां नदी १ पेदास गेहूं चणा साग रुई.

जौडा बुंदेलखंडमध्यदेशकलकत्ता हाता.

क्षत्री राजपूत बुंदेलाजातहैं महाराजाका राज्यलंबाई चोडाई क्षेत्रफल ८७२ वर्गमील मनुष्य संख्या ८५००० हैं यहांके आमदनी रुपये ३५०००० मुख्यनगर जौडा यहां एक किल्ला राजमहल और बागबगीचा सुंदर हैं और नदी १ पर्वत जाडी हैं पेदास रुई गेहूं चणा

साठा.

राजगढ उमटवाडी मध्यदेशकलकता हाता.

क्षत्री राजपूत उमटजात हैं महाराजाजी श्रीबलभादर सिंहजी महाराजका राज्यकालंबाई चौडाई क्षेत्रफळ ४२५ वर्गमील मनुष्यसंख्या ४९२५० हैं मुख्यनगर राजगढ यहांके आमदनी रुपये १५०००००. मुख्यनगर राजगढ यहां यहां पर्वत उपर एक किल्ला जहां राजमहल और बागबगीचा सुंदर हैं और राजसोभा तोफमान ११ हाथी घोडानगरा निशान और नरसिंहगढके भाई हैं और नदी नैवज और नर्मदा बहती हैं और एक श्रीरामचंद्रजीको मंदिर नामजादी हैं और एक जमा मसीद हैं पेदास अफीम चणा गेहूं जवार चावल रुई अलसी.

नरसिंहगढ उमटवाडी मध्यदेश कलकता हा०

क्षत्री राजपूत उमटजात हैं महाराजाजी श्री परताप सिंहजी महाराजाका राज्यकालंबाई चौडाई क्षेत्रफळ ४६० वर्गमील मनुष्यसंख्या ४१५३७ यहांके आमदनी रुपये १७५००० मुख्यनगर नरसिंहगढ यहां पर्वत उपर एक किल्ला राजमहल और बागबगीचा सुंदर हैं और राजगढका भाई हैं यहां डुंगर पर एक महादेवका मंदिर हैं नदी १ ताल सुंदर हैं पेदास गेहूं अफीम चणा रुई साठा चावल जवारी अलसी राजसोभा तोफमान ११ हाथी घोडानगरा निशान हैं.

भोपाल माळवा मध्यदेशकलकता हाता.

मुसलमान जात हैं बेगमसाहेब श्री साहजहांका राज्यकालंबाई चौडाई क्षेत्रफळ ६७६४ वर्गमील मनुष्यसंख्या ८१५००० वस्ती हैं यहांके आमदनी रुपये २४००००० हैं. मुख्यनगर भोपाल यहां पर्वत पर एक सुंदर गढ हैं और सहर में राजमहल और बागबगीचा सहरपनासा भावान हैं और एक तालकी पाज मोठी मजबूत पर्वतसे घेरा हुवानाम

जादी हैं इसतालपर राजमहल सुंदर हैं राजसोभा तोफ १९ मान हाथी घोडा और फौज रहती हैं पैदास गेहूं चणा जवारी अफीम बाजरी रुई साठा चावल. और यहां गेहूं का ब्यौ पार बहोत्सा होता हैं. और यहां जुमामशीद नाम जादी हैं. चतुःसीमा उत्तरमें ग्वालेर का राज्य और उ. मटवाडी देश, पूर्वमें नरासिंहगढ राज्य दक्षिणमें अंग्रेजी राज्य पश्चिममें इंदौर राज्य और रेल हुशंगाबाद से जाती हैं नदी नर्मदा बहती हैं यहां बौद्ध मतके प्रसिद्ध मंदिर हैं.

धार माळवा मध्यदेश कलकत्ता हाता.

क्षत्री राजपूत पवार जात हैं. महाराजा का राज्य का लंबाई चौडाई चौरस क्षेत्रफल २००० वर्ग मील आसरे अनुमान मनुष्य संख्या— १२५००० आसरे अनुमान यहां के आमदनी रुपये ५००००० आसरे अनुमान हैं मुख्य नगर धार यहां एक गढ और राजमहल और बागबगीचा सुंदर हैं और ये प्राचीन शहर जहां एक काल का देवी का मंदिर उंच हैं और ताल अछे अछे हैं और मुसलमाना के चमत्कारी कपीर जुमा मशीद हैं. छोटे छोटे पर्वत से घेरा हुआ हैं और धारानगरी बहोत्सा. अतिहासमें लरवी जाता हैं और मांडू गढ प्राचीन नगर हैं इसीमें अनेक खंडेरे हैं किसी समय यहां धारकी राजधानी थी. और थोड़े दिन हुए मालवे के मुसलमान राजा यही पर रहा करते थे. पैदास अफीम चणा गेहूं रुई पान चावल ज्वार बाजरी. दक्षिणमें नर्मदा पश्चिममें राजगढ माचेडी पूर्वमें इंदौर उत्तरमें सिंधिया का राज्य.

देवासगादी २ माळवा मध्यदेश कलकत्ता हाता.

क्षत्री राजपूत पुवार जात हैं महाराजाजी श्री कृष्णरावजी श्री नारायणरावजी पुवार साहिब का राज्य लंबाई चौडाई चौरस क्षेत्रफल— ४२९ चौरस वर्ग मील मनुष्य संख्या ८०००० यहां के आमदनी रुपये—

२७५००० आसरे अनुमान हैं मुख्यनगर देवास यहां पुवार महारा जाका राज्यका २ दोयभाग पृथक् हैं. जहां राजमहल सुंदर हैं राज सोभा तोफ मान १५ हाथी घोडा और बागबगीचा सोभावान हैं और धारका भाई हैं. नदी १ सहरके तटपर हैं पेदास गेहूं चणा अफीम ज्वारी रुई तिलदाणा. चतुःसीमा उत्तरमें रतलाम दक्षिणमें धार पूर्वमें होलकर सिंधीया राज्य.

रतलाम मालवामध्यदेश कलकत्ता हाता.

क्षत्री राजपूत राठोड जात हैं महाराजाजी श्रीरणजित सिंहजी महा राजका राज्यका लंबाई चौड़ाई क्षेत्रफळ १८२५ वर्गमील मनुष्यसंख्या- १५०००० यहांके आमदनी रुपये ५५०००० आसरे अनुमान हैं मुख्य नगर रतलाम यहां राजमहल सुंदर हैं राजसोभा तोफ मान १३ हाथी घोडा नगरा निसान हैं और बागबगीचा सुंदर हैं और शहरमें सडका रस्ता साफ हैं एक बजार चांदणी चौक चौरस शोभावान हैं यहां मारवाडी व्यौ पारी बहुधा रहते हैं और पश्चिम दिशामें नदी पर साधुलोगका मंदिर- जहां यात्री बहोत्साजाते आते हैं और भाई बेटे सरदार पंचेड और नामली मुख्य हैं और जोधपूरके भाई हैं राजपुतानारे लवे स्टेशन हैं- और अनाजका गह्लाका व्यौपार बहोत्सा हैं. पेदास अफीम गेहूं चणा रुई दाणा चावल ज्वार. चतुःसीमा पूर्व सिंधीयाका राज्य दक्षिणमें देवास पश्चिममें कुलगढ जावबा उत्तरमें सलाणा जावरा राज्य.

जावबा मालवामध्यदेश कलकत्ता हा०

क्षत्री राजपूत राठोड जात हैं महाराजाजी श्री भोपाल सिंहजीका राज्यका लंबाई चौड़ाई क्षेत्रफळ ५७५ वर्गमील मनुष्यसंख्या ९०००० हैं यहांके आमदनी रुपये २२५००० आसरे अनुमान हैं. मुख्यनगर- जावबा यहां राजमहल और एक गढ पर्वतसे घेरा हुआ हैं राजमहलमें

श्रीकृष्णचंद्रजीका सुंदरमंदिर हैं. राजसोभातोफ ११ मान हाथी घोड़ा नगारा और बागवगीचा हैं और यहांके निवासी राजपूत भील मीनाबहोत्सा हैं पेदास अफीम गेहूं ज्वार चणा दाणा तिल रुई चतुःसीमा पूर्वमें रतलामराज्य उत्तरमें डुंगरवासवाडा राज्य पश्चिममें अलीराजपूर अंग्रेज सरकार का राज्य दक्षिणमें सिंधीया राज्य और रतलामका भाई हैं जंगल पर्वत बहोत्सा हैं.

कुशलगढ मालवा मध्यदेश कलकता हाता.

क्षत्री राजपूत राठोड जात हैं. राज्य का लंबाई चौड़ाई क्षेत्रफल २५५ वर्गमील मनुष्यसंख्या ६००० आमदनी रुपये २५००० आसरे अनुमान मुख्य नगर कुशलगढ यहां राजमहल बागवगीचा और नदी सुंदर हैं. पेदास अफीम गेहूं दाणा ज्वार चणा साग. और रतलामका भाई हैं और जावबार तलाम मध्यभागमें हैं.

सिलाना मध्यदेश मालवा कलकता हाता.

क्षत्री राजपूत राठोड जात हैं. महाराजाजी श्री डुलसिंहजी महाराज का राज्य लंबा चौड़ा क्षेत्रफल ३९१ वर्गमील मनुष्यसंख्या ९१००० हैं यहां के आमदनी रुपये २५०००० आसरे अनुमान हैं मुख्य नगर सिलाना यहां राजमहल और बागवगीचा सुंदर हैं और मील १ पर बंगला जहां हुवा पवनकर्ता महाराज कानीवाश हैं और संस्कृत विद्यामें कुछ ज्ञाता हैं. राजसोभा तोफ ११ मान हाथी घोड़ा नगारा और रतलामका भाई हैं और पेदास अफीम गेहूं चणा दाणा रुई तिल ज्वार साग और पश्चिममें एक गढ पर्वत पर हैं और महाराजा धर्मिष्ठ दातार हैं. जाड़ी अगल हैं.

सीतामऊ मालवी मध्यदेश कलकता हाता.

क्षत्री राजपूत राठोड जात हैं महाराजाजी श्री भवानी सिंहजी महाराजा का राज्य लंबाई चौड़ाई क्षेत्रफल २८७ वर्गमील मनुष्यसं-

रख्या ५०००० हैं यहांके आमदनी रुपये १५०००० आसरे अनुमान हैं. मुख्यनगर सितामऊ यहां राजमहल गढ छोटी टेकरे पर हैं सहरफना और बागबगीचा सुंदर हैं और १ मील पर लदुणा ग्राम जहां एकता लपर राजमहल यहां महाराज हवा पवनकर्ता रहते हैं राजसोभा हाथी घोडा तोफ ११ मान और रतलामका भाई हैं और सिंधिया महाराजा को खिरणी देते हैं और पेदास अफीम दाणा जव ज्वारी गेहूं चावल साठा चणा तील चतुःसीमा पूर्वमें बसी अजपर नदी चामल, उत्तरमें होलकर राज्य, पश्चिममें सिंधियाकाराज्य, दक्षिणमें तालमंडालराज्य.

बड़ी मालवा मध्यदेश कलकताहाता.

क्षत्री राजपूत देवडा जात हैं. महारावजी श्री केसर सिंह जी का राज्य का क्षेत्रफल ५० वर्ग मील मनुष्य संख्या ५००० आमदनी २०००० आसरे अनुमान हैं. मुख्य बसी चामल नदी के तट पर राजमहल सुंदर हैं. और यहां एक नदी चामल के तट पर महादेव का स्थान हैं. सिरोही का भाई हैं पेदास अफीम गेहूं चणा साठा जाड़ी जंगल हैं.

घसोई

क्षत्री राजपूत देवडा जात हैं. ठाकर साहेब श्री बेरी शालजी का राज्य का क्षेत्रफल २५ वर्ग मील मनुष्य संख्या २००० आमदनी ५००० आसरे अनुमान मुख्यनगर घसोई छोटा पर्वत पर राजस्थान वस्ती हैं और ताल २ और प्राचीन वस्ती देवता का स्थान हैं. यहां पर्वत में गुंफा बहोत हैं और जुने पत्थर की मूर्तियां हैं. पेदास अफीम गेहूं चणा ज्वार साग. और बड़ी का भाई हैं.

रामपुरा मालवा मध्यदेश कलकताहाता.

क्षत्री राजपूत सूर्यवंशी सीसोदिया चंद्रावत महारावजी श्री तेज सिंह जी केसरी सिंह जी का राज्य का क्षेत्रफल १५० वर्ग मील मनुष्य सं

रक्या १०००० आमदनी ५०००० आसरे अनुमान मुख्यनगर रामपुरा य-
हाराजमहल एकतालपर हैं और ये सहर जुनी प्राचीन राजधानी पर्व
तसे घेरा हुआ हैं आज दिने होलकर राज्य वर्तमान हैं और नदी १ चा
मलवहती हैं. पेदास अफीम दाणा गेहूं चणा साठा रहान तीलज्वा
र और सहेरमें और ताल बहोत्सा हैं. और महारानाजीका भाई हैं.
चतुःसीमा पूर्वमें होलकर राज्य, दक्षिणमें होलकर सिंधीया पश्चिम
मेरानाजी राज्य, उत्तरमें कोटा बुंदी जालरापाटन हैं.

अठाना मालवा मध्यदेश कलकत्ता हा०

क्षत्री राजपूत सूर्यवंशी सीसो दिया जात हैं महारावजी श्री
बजे सिंहजी का राज्य कालंबाई चौडाई चौरस क्षेत्रफल ३०५ वर्ग-
मील मनुष्यसंख्या ३५००० आमदनी रुपये ७५००० आसरे अनुमान
हैं मुख्यनगर अठाना यहानदी पर राजमहल बागबगीचा सुंदर हैं.
राजसो भा हाथी घोडा और महारानाजीका भाई हैं और यहां उत्तरदि
शामें पर्वत सौ घेरा हुआ शिखर पूर्वमें चला गया हैं और अठानासे मील
३ पर एक पर्वत पर उत्तर दिशामें श्रीसुरवदेवजी महाराजकी मूर्ती हैं
इनोने श्रीमत् भागवत राजा परिक्षितीको किया था जिसे मोक्ष हुई-
थी. यहां गंगाकी धारा पडती हैं. और यात्री बहुधा आयाजाया करता
हैं. पेदास अफीम दाणा गेहूं चणा ज्वार साठा रुई आलसी. चतुः
सीमा उत्तरमें देशमेवाड पूर्वमें सिंधीया राज्य, पश्चिममें नीमचकी छा
वनी हैं. यह राजस्थान नीमचसौ ८ मैल हैं.

जावरा मालवा मध्यदेश कलकत्ता हाता.

मुसलमान जात हैं. नबाब साहिब का राज्य लंबाई चौडाई चौरस
क्षेत्रफल ११५२ वर्गमील मनुष्यसंख्या १११००० यहांके आमदनी रु-
पये ५००००० आसरे अनुमान हैं. मुख्यनगर जावरा यहां राजम-

हलनदी तट पर हैं. सहरमें नदी इसका पूल बंध्या हैं रस्ता सडका सुंदर है राजसोभा तो फमान ११ हाथी घोडा और बागबगीचा फल फूल बहोत्सा हैं. राजपुताना रेलवे स्टेशन हैं और यहां अफीम का ब्यौपार सेठी या ब्यौपार बहोत्सा करते हैं. पेदास अफीम दाणा गेहूं साठा चणारुई तील चतुसीमा पश्चिममें सिलाना राज्य उत्तरमें सिंधीया पूर्वमें ताल दक्षिणमें होलकर राज्य.

कुचबिहार देश बंगाला कलकत्ता हाता.

महाराजा का राज्य लंबाई चौड़ाई चौरस क्षेत्रफल १३०० वर्ग मील मनुष्य संख्या १०००००० यहांके आमदनी ७००००० रुपये मुख्यनगर कुचबिहार यहां राजमहल और एक किल्ला सुंदर हैं राजसोभा तो फमान १३ हाथी घोडा और बागबगीचा सोभावान हैं नदी १ इस राज्य में बहती हैं. पेदास चावल धान्य गेहूं और यहां ब्यौपार बहोत्सा होता हैं. चतुःसीमा इस रजवाड़े के उत्तरमें भूटान पूर्वमें ग्वालपारा दक्षिण और नेत्रित्यमें रंगपूर जिला और पश्चिममें दिनाजपूर हैं.

मनीपूर देश बंगाला कलकत्ता हाता.

महाराजा का राज्य लंबाई चौड़ाई क्षेत्रफल ७५०४ वर्ग मील मनुष्य संख्या ५०००००० हैं यहांके आमदनी रुपये ५००००० आसरे अनुमान हैं मुख्यनगर मनीपूर यहां राजमहल एक गढ और बागबगीचा सोभावान हैं और यहांके लोग एक प्रकारके गैंदके खेल में बहुत होशियार हैं. पेदास चावल गेहूं साठा सकर चना धान्य चतुसीमा कछार और ब्रम्हाके मध्य पहाडी देश हैं.

आसाम देश बंगाला कलकत्ता हाता.

इनको छोडकर आसाममें छोटे कई रजवाड़े हैं.

बंगालके नबाब देश बंगाला कलकत्ता.

मुसलमान जात हैं नबाब साहिब श्री नाजीम को ग्राम मुर्शीदाबाद में राजस्थान हैं यहांके पिन्शन अर्थात् वार्षिक वेतन रोकड़ रुपये - १६००००० अंग्रेज सरकार से मिलता है और मुर्शीदाबाद में दधीच कुलके पंडित नामजादी हैं.

रामपूर पश्चिमोत्तर देश कलकत्ता हाता.

मुसलमान जात हैं नबाब साहिब का राज्य लंबाई चौड़ाई चौरस क्षेत्रफल ८९० वर्ग मील मनुष्य संख्या ५००००० हैं यहांके आमदनी रुपये १००००० हैं मुख्य नगर रामपूर को सिलानदी के बाए किनारे पर-यहां राजमहल और एक किल्ला और बागबगीचा सुंदर हैं राजसोभा-तौफमान १३ हाथी घोड़स्वार हैं यहांपर एक मसजिद सुंदर और नबाब बुजुर्ग फैजुल्ला की कबर बनी है. यहांपर विशेष करके रुहेला अफगान बसते हैं. पैदास धान्य गेहूं चणा साठा ज्वारी रुई यह राज्य रुहेलखंड भाग में है.

गढवाल देश बंगाला कलकत्ता हाता.

महाराजा का राज्य का लंबाई चौड़ाई चौरस क्षेत्रफल ४५०० वर्ग मील मनुष्य संख्या ३००००० हैं और यहांके आमदनी रुपये १००००० मुख्य नगर गढवाल यहां राजस्थान राजमहल और एक किल्ला और बागबगीचा हैं नदी १ राज्य में बहती है. पैदास धान्य चावल रुई साठा गेहूं चणा गढवालके वायव्य में हैं कमाऊं और ब्रिटिश ब्रम्हाराज्य हैं.

काशी बनारस कलकत्ता हाता पर देश पूर्व.

ब्राम्हण जाती जात हैं सूरध्वज ईश्वरी प्रसादजी श्रीनारायण सिंह बहादुर का राज्य का लंबाई चौड़ाई चौरस क्षेत्रफल ९९५ वर्ग मील

मनुष्यसंख्या ७५००० यहाँके आमदनी रुपये १५०००० मुरव्यनगर रामपूर यहाँ महाराजाका राजमहल और एक गढ और बागबगीचासुंदर हैं. राजसोभा तोफ मान १३ हाथी घोडानगारा निशान हैं नदी महागं- गाजी वहते हैं. पेदास चावल गेहूं चणा साठा खांड. चतुःसीमा द- क्षिणमें कलकत्ता पूर्वमें गोरखपूर हैं. और श्रीकाशीजीमें ब्राम्हणवि- द्धान पंडित बहोत्सारहते हैं और सप्तपुरीमें श्रेष्ठ हैं और साधू सन्या- सीका निवासका स्थान हैं श्रीगंगाजीका मणिकर्णिका तटपर श्रीबिम्ब- नाथ कालभैरवका मंदीर जयायात्री लोग बहुधा आया जाया करता हैं. और देश मेवाडके महारानाजीका राजमहल और धर्मक्षेत्र हैं और जय- पूरका महाराजाका नक्षत्रादियंत्रज्योतिषका वना हैं और हिंदुमें ब्रा- म्हणजातीका विद्यास्थान हैं और मोक्षबी होता हैं.

मद्रास हातेके रजवाडे नंबर २.

मैसूर और कुर्ग मिद्रास हाता.

मैसूर शक शालीवाहन वंशजात हैं. महाराजा श्रीराज भूपालजी महाराजाका राज्य लंबाई चौड़ाई क्षेत्रफल २७००० वर्ग मील मनुष्यसं- ख्या ४०००००० हैं यहाँके आमदनी रुपये ११००००० मुरव्यनगर मै- सूर. यहाँ राजमहल और एक किल्ला सुंदर हैं राजसोभा तोफ मान २१ हाथी घोडानगारा निसान हैं और बागबगीचा यहाँ एक बंगला सुंदर हैं मैसूर देश एक उच्च समभूमि पर वसा है जो १००० फूट से लेकर ६००० फूट तक उंचा है इसके तीनों ओर पर्वतों की श्रेणी हैं परंतु उत्तर दिशा- की ओर खुला है इनमें प्रधान पर्वत श्रेणी ये हैं शिवगंगा श्रेणी बंगलूर से २५ मील वायव्य को ४६०० फूट और बाबा बुद्धीन श्रेणी वेदनूर के नि- कट ६००० फूट उंचा है. पृथक् पहाडिया तथा दुर्ग गढ किल्ला अनुमा- न दो मील के घेर में बहुधा गोलाकार हैं. रेतीली चटानोंके अनुसार इ-

स उच्चसमभूमीके उपरको उठती हुई देशको अद्भुत शोभा देती हैं। इनमें से बहुतैरो जगा पर गढ बने हुए हैं जिनके कारण उनका दुर्ग गढ पड गया हैं पृष्ठसे ३००० फूट उच्चा हैं और कुर्ग देश लंबा चौडा मील ३००७ क्षेत्रफल मनुष्य संख्या १२५००० देशकी भूमी दोय प्रकारकी हैं थोडे स्थल हैं और दुंगर पहाडी हैं और समुद्र से उच्च ३००० फूट से भी उंचा हैं। नदिया- म्हेसूर के ये हैं कावेरी और तुंग और भद्रा इन दो शेष नदीयों का संगम हल्लूर पर हुवा हैं वही से तुंग भद्रा कलाती हैं और पलार भी बडी नदी इसमें हैं और पेदास उपज धरती चिकनी मटी हैं। धान रागी ज्वार चना गेहूं खांड पान अफीम काफी उपजती हैं। बैल गाडी के जोतणे कूं अच्छे होते हैं और कुर्ग में बडी इलायची काफी चहा कपास रुई गेहूं चणा तिल होता हैं। म्हेसूर की खास कपडो सूती कपडे उनी गलीचे दुशाले नाम जादी हैं और नीवासी म्हेसूर मध्ये हिंदु तथा मुसलमान रहते हैं परंतू हिंदु अधिक हैं कुर्ग में नेयर लोग रहते हैं। भाग- म्हेसूर में भाग ३ और ८ जिले हैं। और कुर्ग तो एक जिला हैं। म्हेसूर मनुष्य संख्या ६५००० और उंचा २४५० फूट हैं दक्षिण में वसता हैं यहां पर एक गढ हैं जिसमें राजा के रेहेने का स्थान हैं राजमहल हैं पूर्व की ओर इस नगर की सीमा पर शिवसमुद्रम् हैं। जहां कावेरी के द्वीप के उपर प्राचीन नगर के खंडेरे पडे हुए हैं यहां नदी की अनेक प्रसिद्ध धारा बडे वेग से नीचे की गिरती हैं और सिरिंग पट्टम अथवा श्रीरंग पट्टन म्हेसूर के उत्तर में कावेरी नदी के एक द्वीप के पश्चिमी नोक पर वसता हैं इसकी व्याहार दिवाती दढ नही हैं। अंग्रेजों ने इस नगर को सन् १७९९ में अचांचकले लिलाया था और टिपू को मार डाला था और बंगलूर पलटन और कमिशनर साहिब के रहने की जगा हैं और अंग्रेजों के बगीचो और सतरंजी और

रेशमी कपड़े बनाने के कारण प्रसिद्ध हैं इसके उत्तर में नंदी दुर्ग हैं जिसे अंग्रेज सरकार ने सन १७९१ में ले लिया था. यह नगर पत्तार के उत्पत्ति-स्थान के निकट ४८५६ फूट उंचा वसता है इसके दक्षिण में देवनहली हैं जहां सन १७५३ में टिपू उत्पन्न हुआ था. त्रिवर्ग ईशान में हैं यहां एक दृढ गढ़ बना है. वेदनूर वायव्य में हैं यहां से हैदर सन १७६३ में बारह करोड़ रुपये का असबाब लूट ले गया था. कुर्ग के मुख्य नगर ये हैं मरकाराम ध्य में समुद्र के जल से ३७०० फूट उंचा वसता है इसके दक्षिण में विरा जेंद्र पेठ इन दोनों नगरों में विशेषकर यूरोपीयन लोग उनके रहलुए क़स्तान लोग वसते हैं.

त्रावनकोर मद्रास हाता.

राजा का राज्य लंबाई चौड़ाई चौरस क्षेत्रफल ६६५३ वर्ग मील मनुष्य संख्या १५००००० हैं. यहां के आमदनी रुपये ५१००००० हैं. मुख्य नगर त्रिवन्द्रम यहां राजमहल और एक किला सुंदर हैं और बागबगीचा बहोत्सा हैं राजसोभा तोफ १९ मान हाथी घोडा नगारा नीशान हैं और वर्षा बहुधा वर्ष भर हुआ करती हैं. इससे देश देखने में सुंदर और रमणीय लगता है और चारों ओर सदा हरियाली की शोभा रहती है यहां पर एक अजायब घर और नक्षत्रादि देखने के लिये एक उच्च गृह बना है. यहां एक कंपनी की कोठी सन १६०४ से लेकर सन १८१३ तक रही थी. और अल्लीपल्ली और कीलेन दोनों बंदरस्थान हैं. यहां से गोलमरी च और बड़ी इलायची अन्य देशों को भेजी जाती हैं निवासी इस देश की बातें और यहां के निवासी मलेबार से मिलते हैं यहां पर १००००० ईसाई बसते हैं. पैदास धान ज्वार बाजरी तिल तमाकू साठा नारियल चहा गोलमरी च और बड़ी इलायची. चतुर्सीमा को चीन से लेकर रासकुमारी तक फैला है.

कोचीन मद्रास हाता.

महाराजाका राज्यका लंबाई चौड़ाई क्षेत्रफल ११३१ वर्गमील मनुष्यसंख्या ४००००० यहांके आमदनी १०००००० हैं मुख्यनगर-त्रिचूर समुद्रके किनारे बसता हैं. यहां राजमहल और एक किल्ला सुंदर हैं राजसोभा १७ तोफमान हाथी घोडा और बागबगीचा सोभावान हैं. पेदास धान्यज्वार बाजरी तिल साग नारीयल. चतुसीमा दक्षिणमें मले वार त्रावणकोर उत्तरमें मलबार.

पुदुकोटा मद्रास हाता.

महाराजाका राज्य लंबाई चौड़ाई चौरस क्षेत्रफल १०३७ वर्गमील मनुष्यसंख्या २७०००० हैं. यहांके आमदनी ३५०००० मुख्यनगर पुदुकोटा वेलार नदी पर बसता हैं. यहां राजमहल और एक किल्ला और बागबगीचा सुंदर हैं. राजसोभा हाथी घोडा हैं. पेदास धानज्वार बाजरी तमाकू साग चहानारियल. चतुःसीमा त्रिचनापल्ली उत्तरमें और तोंदि मन राजाका देस कहता हैं.

और छोटे राजा संख्या.

- १ बल्लारीमें संदूरका राजा.
- २ कडपामें बगामीलीका जागीरदार.
- ३ कर्नाटकका राजा अजीमजहा जिसे तीन लाख रुपये मालकी पे नशान मिलता हैं.
- ४ कनानोर और दक्षिणी द्वीपका राजा जो मापिल्ला जानीका हैं.
- १००० मनुष्योपर राज्य करता हैं. इसकी आमदनी ३०००० रुपये हैं.

मंबोई हातेके रजवाडे.

बडोदा देश गुजरात मंबोई हाता.

मरेठा गायकवाड जात हैं. महाराजा श्री सयाजी महाराजकारा

ज्यका लंबाई चौड़ाई चौरस क्षेत्रफल ८५७० वर्गमील मनुष्यसंख्या २१८५०००. यहांके आमदनी रुपये ६१००००००. मुख्यनगर बडोदामनुष्यसंख्या १४००००. यहां राजमहल जिसमें चांदीका कामबहोत्सा हैं. और बागबगीचा और ताल सुंदर हैं इसके बंशमे विशेषकरके दमाजी गायकवाड अधिक बलवान निकला जो पेशवासे जुगुगडा करने लगा और निदान उसने अंग्रेजोसे सहायता मांगी और इस प्रकार अपने राज्यको स्वाधीन कर लिया. राजसोभा तोफ मान २१ हाथी घोडानगारा निशान हैं और ए महाराज गायकवाडका राज्य वीस्वरता हैं. सू रत जिलामें नवसारी बस्त्रावी बलेश्वर गणदेवी तेलारी हैं. काठियावाडमें अमरेली ओरवामंडळ और पालनपूर और महीकाठके निकट पाटण सिद्धपूर में साना कडी. और खानदेशमें वाजपूर तरफ और छोटा बहुधा राजाके पाससे खिरणी लेता हैं. और अंग्रेज सरकारके तरफसे रसिदेत साहिब और फौज पलटन बडोदाकी कापजे छावनीमें कामकाज रेखा देरवी को रहते हैं. और नदी २ इस राज्यमें बहती हैं उतरमें नदी डीसा बनास और दक्षिनमें पटन सरस्वती बहती हैं. पेदास गेहूं चणा धान रुई साठा पान गीर माला आंबा बहुधा होता हैं और संवत् १९४४ थी १९४६ सुधीमें एक राजमहल नवीन पत्थरका मेल १ लंबा बना हैं. जिसमें खरच रुपया ५० लाख आसरे हैं और यह शहरमें बागबगीचा बहोत्सा हैं. और बडोदारे लवे स्टेशन हैं. और जुनाराजमहलके पास एक घडीचाळ हैं.

कोल्हापूर देश दक्षिण मंबोई हाता.

क्षत्री राजपूत सूर्यवंशी सीसों दिया जात हैं. महाराज छत्रपती कालंबाई चौड़ाई चौरस क्षेत्रफल ३१८४ वर्गमील मनुष्यसंख्या ८००१८०. यहांके आमदनी रुपये १०००००००० हैं मुख्यनगर कोल्हापूर

यहां राजमहल और एक किल्ला सुंदर हैं राजसोभा तो फमान १९ हाथी-घोडा नगरा निसान और बागबगीचा बहोत्सा सोभावान हैं नदी १ राज्य में बहती हैं और सतारा की गादी का.क्षत्री वंश हैं और देश मेवाड का महाराजाजी का वंश साखा हैं. पेदास धान जुवार डांगर सादा शाख भाजी तमाकू रुई चावल तिल मरचा कसुंबो सुतर उनका कापड और भाटी का वासण नाम जादी हैं. देश भाषा. मरेठी और कानडी बोली जाती हैं. यहां पोलीटीकल एजेंट रहते हैं और सतारा का राजा शिवाजी का वंश की छोटी शाखा का राज्य हैं चतुःसीमा उत्तर में सतारा जीला, वारणानदी, पूर्व कृष्णानदी सांगली मिरज दक्षिण में वेळगाव पश्चिम में सह्याद्री पर्वत कोकन सावंतवाडी रत्नांगीरी हैं

सावंतवाडी देश दक्षिण कोकण.

मंबोई हाता.

मरेठा जात हैं महाराजा सरदेशाई का राज्य का लंबाई चौड़ाई-चौरस क्षेत्रफल ९०० वर्ग मील मनुष्य संख्या १७४४ ३३ वसते हैं यहां की आमदनी रुपये ३०००००. मुख्य नगर सावंतवाडी यहां राजमहल और एक किल्ला और बागबगीचा सुंदर हैं. पर्वत से घेरा हुआ है समुद्र तट से-मील ५ आसरे हैं सोभा तो फमान ९ हाथी घोडा हैं पेदास धान चावल बाजरा साठा तील बडी हरड डांगर शाक भाजी रुई. चतुःसीमा उत्तर और पश्चिम में रत्नांगीरी जिला और अरब समुद्र पूर्व कोलापूर राज्य बेल्गाव जिला, दक्षिण में गोवाराज्य. इसमें पोलीटीकल एजेंट रहते हैं.

सांगली देश दक्षिण महाराष्ट्र मंबोई हाता.

ब्राम्हण जात हैं. राज्य का लंबाई चौड़ाई चौरस क्षेत्रफल ८१६ वर्ग मील मनुष्य संख्या १९६ ८३२ यहां के आमदनी रुपये १३०००० आसरे अनुमान हैं यहां राजमहल सुंदर हैं और बागबगीचा एक किल्ला-

सोभावान हैं. पेदास धान्य डांगर रुई साठा ज्वारी.

और मरेठा जागीरदारका नामसंख्या.

नाम	क्षेत्रफल	मनुष्यसंख्या
१ जमखिंडी	४९२	८३०००
२ मिरजवडील शाखा	३४०	६९०००
३ मिरज नानी शाखा	२०८	३००००
४ कुरुंदवाडवडील शाखा	१८२	३५०००
५ कुरुंदवाडनानी शाखा	११४	२५०००
६ सुधोळ	३६२	५२०००
७ रामदुर्ग	१४०	२९०००

पेदास ज्वारगेहूं चना रुई डांगर साठा कपडा रुई का सूती

जमखिंडी मिरज कुरुंदवाड पटवर्धन वंशका ब्राम्हण जागीरदार हैं. रामदुर्ग भावे वंश ब्राम्हण हैं और सुधोळ घोरपडे मरेठा हैं
जंजिरा देश दक्षिणकोकण में बौर्ड.

मुसलमान हबसी जात हैं नबाबका राज्य लंबाई चौड़ाई चौर सक्षेत्रफल ३२४ वर्गमील मनुष्यसंख्या ७२००० हैं यहांके आमदनी ९९००० हैं. मुख्यनगर जंजिरा यहां राजमहल और एकगढ और बागबगीचा सुंदर हैं और इसका देश काठावाडमें जाफराबाद ग्राम जिसमें राज्य हैं. यहांका गीरत नाम जादी हैं और पेदास धान चावल चना साठा डांगर लून होता हैं देश भाषा मरेठी कोकन पर्वत और ज्जाडी. नदी १ राज्यमें बहती हैं. यहां समुद्रकी खाड़ी बानकोटी बहती हैं.

वासदा देश गुजरात में बौर्ड हाता.

क्षत्री राजपूत जात हैं महाराजाका राज्यका लंबाई चौड़ाई क्षेत्र

त्रफळ ३२५ वर्गमील मनुष्यसंख्या ३४१२२ वस्ती हैं यहांके आमदनी रुप ये १५००० आसरे अनुमान हैं. मुख्यनगर वासदा यहां राजमहल और एक किल्ला और बागबगीचा सुंदर हैं यह राज्यमें पर्वत और जंगल ज्जाडी से भरा हैं. नदी कावेरी अंबिका वहती हैं वासदामें २४४७ वस्ती हैं पेदास ज्वार डांगर साठा नागली दाल तिल कोद्रा महुडा खजूर और ला गडा सीसमें घर बनानेका होता हैं और यहां एक मदसी लडका पढने को नवी बनाई हैं.

धरमपूर देश गुजरात मंबोई हाता.

क्षत्री राजपूत सूर्यवंशी सीसो दिया जात हैं महाराजा श्री नारायण देवजी का राज्य कालंबाई २४ चोडाई १५ हैं मनुष्यसंख्या १०१२८ वस्ती हैं यहांके आमदनी रुपये १५०००० आसरे अनुमान हैं मुख्यनगर धरमपूर मनुष्य ५१७६ वसते हैं यहां राजमहल और एक गढ सुंदर हैं और नदी तट पर महाराजाका एक बंगला और बागबगीचा सोभावान हैं और यह राज्यमें पर्वत डुंगर ज्जाडी बहोत्सा हैं. पेदास धान कठोल साठा डांगर नागली सादडी नलिया केलू इट मदीका बासण चू नो माचा और घर बनानेका लकडा सीसम हैं चतुःसीमा उत्तरमें वासदा, पूर्वमें खानदेश दक्षिणमें थाणा जिला और पश्चिममें सूरत जिला.

सचीण देश गुजरात मंबोई हाता.

मुसलमान हबसी जात हैं. नबाब साहिब का राज्य कालंबाई चोडाई क्षेत्रफळ २५१ वर्गमील मनुष्यसंख्या १५७२१ यहांके आमदनी रुपये ५०००० आसरे अनुमान हैं मुख्यनगर लाचपूर यहां राजमहल और बागबगीचा सुंदर हैं और रजजीराका भाई हैं. रेलवे स्टेशन हैं. पेदास ज्वार बाजरी डांगर साठा रतालू कपडा बनता हैं और नबाब साहिब का गाम नग १९ में राज्य हैं.

राजपीपला देश गुजरात रेवाकांठा.

मंबोई हाता.

क्षत्री राजपूत गोयल जात हैं. महाराजाकाराज्यकालंबाईचो डाईमील ९० लंबांमील ६० चोडा मील क्षेत्रफळ १५१४ वर्गमील मनुष्यसंख्या ११४७५६ हैं. यहांके आमदनी रुपये ५५०००० आसरे अनुमान हैं मुख्यनगर नांदोद यहां एक गढ और राजमहल सुंदर हैं और राजपीपलामें एक किल्ला पर्वतपर हैं राजसोभा तोफ मान ११ हाथी घोडा नगारा नीसान और बागबगीचा सुंदर हैं और भावनगरका भाई हैं. इसराज्यमें नदी उत्तरमें नर्मदा दक्षिणमें तापी वहती हैं निवासी राजपूत और भील कलुबी रहते हैं पेदास धान साठा रुई ज्वार और लाकडा घर बनानेका बहोत्सा हैं यह राज्यमें पर्वत जाडी बहोत्सा हैं

उदेपूर छोटा देश गुजरात रेवाकांठा

मंबोई हाता.

क्षत्री राजपूत चव्हाण जात हैं. महारावलजी श्री मोती सिंहजी महाराजकाराज्यकालंबाईचो डाई क्षेत्रफळ ८१३ वर्गमील मनुष्यसंख्या ७१२१८ हैं यहांके आमदनी रुपये १५०००० आसरे अनुमान हैं मुख्यनगर छोटा उदेपूर यहां एक किल्ला और राजमहल सुंदर हैं. राजसोभा तोफ मान ११ हाथी घोडा नगारा नीसान और यह राज्य पर्वतसे घेरा हुआ हैं और बागबगीचा एक ताल हैं और नदी १ राज्यमें वहती हैं पेदास धान गेहूं चणा साठा रुई और लाकडा घर बांधणेका बहुधा होता हैं और देवगढ वाडीयाका भाई हैं.

देवगढ वाडीया देश गुजरात रेवाकांठा

मंबोई हाता.

क्षत्री राजपूत चव्हाण जात हैं. महारावलजी श्री जसवंत सिंह-

जीकाराज्यकालंबाईचोडाई क्षेत्रफळ ८७३ वर्गमील मनुष्यसंख्या ६६८२२ हैं यहाके आमदनीरुपये १००००० आसरे अनुमान हैं. मुख्यनगर देवगढवाडीया यहां राजमहल एकगढ सुंदर हैं और बागबगीचा हैं. और एकरोगीयाकर्ता इस्पितालद्वारखाना हैं और छोटाउदे पूरका भाई हैं. पेदास धानगेहूं चणा साठा रुई.

लुणावाडा रेवाकाठा देशगुजरात • मंबोई हाता.

क्षत्री राजपूत सोलंख्याजात हैं. रानासाहेब श्रीवगतसिंहजी-काराज्यकालंबाईचोडाई क्षेत्रफळ ३८८ वर्गमील मनुष्यसंख्या- ७५४५० हैं यहाके आमदनीरुपये १००००० आसरे अनुमान हैं. मुख्यनगर लुणावाडा यहां राजमहल और एक किल्ला और बागबगीचा सुंदर हैं राजसोभा तोफमान ९ हाथी घोडा और शहर सडका रस्ता साफ हैं. पेदास धानगेहूं चना साठा रुई अफीम यहां नदी १ राज्यमें बहती हैं

सुंथरेवाकाठा देशगुजरात मंबोई हाता मध्यभाग.

क्षत्री राजपूत सोलंख्याजात हैं. महारानाजी श्रीपरताबसिंहजी का राज्यकालंबाईचोडाई चौरस क्षेत्रफळ ३९४ वर्गमील मनुष्यसंख्या ५८८२२ हैं यहाके आमदनीरुपये १००००० आसरे अनुमान हैं मुख्यनगर सुंथ यहां राजमहल सुंदर हैं और बागबगीचा और ताल हैं और पेदास धान रुई गेहूं चना साठा और लाकडा घर बांधणे का बहुधा होता हैं इस राज्यमें डुंगरज्जाडी बहोत्सा हैं.

वाडा सिनोर रेवाकाठा देशगुजरात मंबोई.

मुसलमान नवाबी जात हैं नवाब साहिबकाराज्य लंबाईचोडाई चौरस क्षेत्रफळ १८९ वर्गमील मनुष्यसंख्या ४६३२८ वस्ती-

हैं यहांके आमदनी रुपये ८०००० आसरे अनुमान हैं. मुख्यनगर बाडा-
सिनोर यहां राजमहल और बागबगीचा सुंदर हैं राजसोभा तो फमान
९ हाथी घोडा और नदी १ वाजमें बहती हैं. पेदास धानगेहूं चनासा-
ठारुई लाकडा.

खंवात संस्थान देश गुजरात में बोई हाता.

मुसलमान जात हैं. नबाब साहिब श्रीजाफर खान जी का राज्य का
लंबाई चौड़ाई लंबा मील २४ चौड़ा मील २४ क्षेत्रफल ३५० वर्ग मील मनु-
ष्यसंख्या ८६००४ हैं यहांके आमदनी रुपये २५०००० आसरे अनुमान
हैं. मुख्यनगर खंभात मनुष्यसंख्या ३६००० हैं. जिसमें मुसलमा-
न २८०३८ हैं शहर महीनदी के तट पर यहां राजमहल और बागब-
गीचा सुंदर हैं इस खाड़ी में तीन नदीया गिरती हैं और बंदर का जग-
त चुकता हैं. पेदास बाजरी ज्वारगेहूं धान निमक लून रुई गुली नील.
अफीम सूती कपडा सतरंजी और हीरामाणक नामजादी हैं चतुःसी-
मा उत्तर और पूर्व में खेडा जीला हैं अग्निकोण में वडोदरा राज्य दक्षिण
में महीनदी खंवात नो अस्वात हैं पश्चिम में साबरमती नदी और अम-
दावाद जिला ये राज्य में २ कसबा, ८३ ग्राम और मदर्शा ४ विद्याशा-
ला हैं. नदीया मुख्य साबरमती मेवाड में से होकर सादरा अमदावाद
स खंवात में मिली हैं

महीकाठा का महाराजा का राज्य.

महीकाठा के ईशान्य में और उत्तर में आबूपर्वत, पूर्व में मेवाड को
पहाडी मूलक, दक्षिण में वडोदेका देश ग्राम जीला और अमदावाद खे-
डा जिला रेवाकाठा, पश्चिम में वडोदरा राज्य और पालनपूर हैं एरा-
ज्य ९० मील लंबाई ६० मील चौड़ाई क्षेत्रफल ११०४२ वर्ग मील हैं
इसमें ग्राम १८१६ और मनुष्यसंख्या ५१०४८५ हैं. जिसमें कोली

१४६५६७ चमते हैं. मदगाँ ६१ विद्याशाला हैं.

ईडरगढ महीकाठा देशगुजरात मंबोईहा०

क्षत्री राजपूत राठोड जात हैं. महाराजाजी श्रीकेसरसिंहजी महाराज्यका राज्यका लंबाई चौड़ाई चौरस क्षेत्रफल ४९६६ वर्गमील मनुष्यसंख्या २५८४२९ वस्ती हैं. यहांके आमदनी रुपये ३५०००० मु-
ख्यनगर ईडरगढ यहां पर्वतसे घेरा हुआ है एकगढ और राजमहल
सुंदर हैं राजसोभा तोफमान १५ हाथी घोडानगारा निसान हैं और
बागबगीचा सोभावान हैं ये शहर पर्वतपर वसता है. अमदनगरका
किल्ला इसीके स्वाधीन है और जोधपूरका भाई है. पेदास धानगेहूं ति-
ल साठा अफीम शाबु और अमदनगरकी पाससे पत्थरकी खदाना हैं
और लाकडा बहुधा होता है और अमदनगर जोधपूरके महाराज-
का आधीन था. परंतु सन १८४८ ई० ईडरगढका महाराजने अं-
ग्रेज सरकारको कियाके अमदनगर मेरा है जदी जोधपूरका महाराज
पर होक मकर पीछा दिलाया है.

छोटे ठाकोरका राज्यस्थान है.

१ दांतामें ठाकोर राजपूत राठोड जात हैं. मनुष्यसंख्या १२५००
पेदास बाजरी धान साठा. पत्थरका खान है इसके पास आरासूरको
पहाड है जिसपर अंबाभवानीका मंदिर जहां यात्रा भरता है.

२ मालपूर ठाकोर राजपूत राठोड जात हैं मनुष्यसंख्या १४००९
हैं पेदास बाजरी धानगेहूं साठा रुई.

३ मोहनपूर ठाकोर राजपूत राठोड जात हैं मनुष्यसंख्या १४३९२
हैं पेदास ज्वार बाजरी गेहूं साठा मल तिल कोद्रा यहां अवररवनी
खान है.

४ भालुसणा ठाकोर परमार राजपूत हैं मनुष्यसंख्या २४९४

पेदास बाजरी ज्वार साठा गेहूं मठ.

५ सतलासणा कोली जात ठकोर हैं मनुष्यसंख्या ३२६१ हैं.
पेदास बाजरी ज्वार साठा मठ गेहूं.

६ माणसा राजपूत ठकोर का हैं मनुष्यसंख्या १३२९९ पेदास-
ज्वार बाजरी साठा तिल गेहूं कोद्रा.

७ घोडासर कोली ठकोर का हैं मनुष्यसंख्या ८४०० पेदास-
डांगर धान बाजरी.

८ अमल आरा कोली ठकोर का हैं मनुष्यसंख्या १२४३७ हैं पे-
दास गेहूं बाजरी डांगर साठा.

९ वाडा सिनोर मुसलमान जात नबाब साहिब का हैं मनुष्यसंख्या
४६३२८ हैं. पेदास धान रुई साठा गेहूं.

ये एजंटीका भाग ५९ किया हैं इसमें ४८ ठकोर हैं जिसमें रा-
जपूत ठकोर १८ हैं. कोली ठकोर ३० हैं. बहोत्सा ठकोर बडोदा का
महाराज को खिरणी देते हैं. कतराक ठकोर अंग्रेज सरकार को इ-
डरगढ काराजा को खिरणी देते हैं.

पालणपूर देश गुजरात मंबोई हा.

मुसलमान जात हैं पठाण हैं दिवाण साहिब का राज्य लंबा मी-
ल ६० चौडामील ४५ ग्राम ४५१ क्षेत्रफल २८०० वर्गमील मनुष्यसं-
ख्या २३४४०२ हैं. यहां के आमदनी रुपये ५००००० इसमें से बडोदा
का राज को ५०००० खिरणी देते हैं. मुख्य नगर पालनपूर मनुष्यसंख्या
१७५४७ हैं यहां राजमहल और सहरपना और सात दरवाजा सुंदर
हैं और बागवगीचा और जैनमत का मंदिर हैं राजसोभा तोफमान ११
हाथी घोडा और यहां पोलीटिकल सुपरिटेण्डेंट साहिब का स्थावीर-
हने का बंगला हैं और रेलवे स्टेशन हैं. पेदास गेहूं डांगर बाजरी ज्वा

रधान साठारुई अफीमल कडा और इसके पास डिसाकी छावणी जहां अंग्रेजसरकारकी फौज रहती हैं. नदीया वनास सरस्वती नीमराखी. हैं. चतुसीमाउतरमें मारवाड सिरोही दक्षिणमें बडोदाकाराज्य पूर्वमें सिरोही पश्चिममें थराद देवदर हैं.

राधनपूर देश गुजरात मंबोई हा०

मुसलमान नवाबीजात हैं नवाब साहिबका राज्यकालंबाई ३५ मील चौडाई ३५ मील क्षेत्रफळ ११५० वर्गमील ग्राम १५६ मनुष्यसंख्या ९८१२९ बसते हैं यहांके आमदनी रुपये १५०००० आसरे अनुमान हैं मुख्यनगर राधनपूर मनुष्यसंख्या १४७२२ यहां राजमहल और फरता कोटका दरवाजा है और राजसोभा बागबगीचा हैं तोफ मान ११ हाथी घोडा और नदी १ वनास परंतू खारी जमीनपर वहती हैं जीसे पानी पीने लायक नहीं हैं. पेदासगेहूं चणा रुई रेशमी कपडा और कपास छेढनेका संचा हैं.

छोटे रजवाडे.

१ बाराई गाव ४९ मनुष्यसंख्या २१३७६ हैं यहां जाटराज्य हैं. २ तेरवाडा वलूच ठाकोरका राज्य हैं मनुष्यसंख्या ८८६४ हैं ग्राम १६ हैं.

३ थराद मोरवाडा ग्राम १५४ यहां ठाकोर राज्य हैं मनुष्यसंख्या ५८९८५ हैं. मोरवाडामें ग्राम ९ मनुष्यसंख्या ६५०९

४ वाव गाव ५५ ठाकोर राज्य हैं मनुष्यसंख्या २७७३५ हैं

५ सुईगाव. ग्राम १६ ठाकोर हैं मनुष्यसंख्या ११५२१ हैं

६ देवदर गाव ६६ ठाकोर राज्य हैं. मनुष्यसंख्या २४०६१ हैं.

७ सांतलपूर जाडेजा रजपूत ठाकोरका हैं मनुष्यसंख्या — १५१३६ हैं.

८ भाभर गाम २३ कोलीठाकोर राज्य हैं. मनुष्यसंख्या — ७२२२ वस्ती है.

९ काक्रंज गाम ८२ कोलीठाकोर राज्य हैं मनुष्यसंख्या — ४५१६४ हैं. बडोदाका राजाको खिरणी ५००० देता हैं.

गुजरात भागदुसरा.

गुजरातका महाराजाका राज्यका अथवा अंग्रेजसरकारका थोडासा भाग इसीका क्षेत्रफल ५१३१० वर्गमील मनुष्यसंख्या — ४७३७०४४ हैं और काठीयावाड इसीकानाम सौराष्ट्र होता और बडोदा राज्यका महाल अमरेली ओरवाहरन परगना छोडकर इसदेश का लंबाई चौडाई पूर्वपश्चिम २०० मील उत्तरदक्षिण १७५ मील क्षेत्रफल २०५५९ मनुष्यसंख्या २३४३८९९ हैं. इसमें ४१ कसबा और ४१२७ गाम हैं और मदर्शा ६९० बिद्याशाला और ४०००० बिद्यार्थी. चतुःसीमा उत्तरमें कच्छ भूजराज्य, पूर्वमें अमदावाद जिला खंभातकी खाडी, दक्षिणमें और अधिकोणमें अरबसमुद्र हैं. इसीराज्यपर अंग्रेजसरकारका पोलीटिकल एजेंट राजकोटमें हैं यही छावनी और एजेंट साहेबकी कछेडी न्यायाधीश रहते हैं. एमहाराजका राज्यका विभाग ४ देशानामकिया हैं. और प्रत्येक भागपर असिस्टेंट पो लिटिकल एजेंट जुदाजुदार रहते हैं.

१ ज्जालावाड उत्तरमें धांग घा वढवाण.

२ गोहेलवाडा पूर्वमें सोनगढ.

३ सौरठ दक्षिणमें माणोकवाडा.

४ हालर पश्चिममें राजकोट.

चारभागमें मुख्य मुख्य राज्यस्थान लिखा हैं.

ज्जालावाड.

नदीया १ भोगावा बढवाणमें जाबुके पास बहती हैं. २ भोगा-
वा लीमडी वडोद पास बहती हैं ३ फलकु धांग धा पास बहती हैं और
४ मच्छुवाकानेर पास बहती हैं.

मुख्य शहर.

१ धांग धा हळवद	४ वाकानेर	७ चूडा
२ लिमडी	५ लकतरथान	८ बजाणा
३ बढवाण	६ सायला	९ छोटाराज्य ४५ हैं

धांग धा ज्जालावाड देश गुजरात मं बोई हा०

क्षत्री राजपूत ज्जाला जात हैं महाराजा श्रीमान सिंहजी राज
राना का राज्य कालंबाई चौडाई चौरस क्षेत्रफल २३५१ वर्ग मील म
नुष्य संख्या १९६८६. यहांके आमदनी रुपये १०००००० आसरे अ
नुमान हैं मुख्य नगर धांग धा यहां राजमहल और कोट फर्ती हैं और-
हाईकोर्ट जहां एक घड़ी सुंदर हैं यहां पंचदेव श्रीरामचंद्र श्रीकृष्ण का
मंदिर सो भावान और ग्रामके निकट नदी फलकु का तट पर एक बाग सुं
दर जहां बंगलाना मजादी हैं और रोगी दर दी करता एक इस पिताल
हैं. और यहां राज सो भातो फमान ११ हाथी घोडानगारा निसान और
रफौज पलटन घोडे स्वार तो फखानाना मजादी हैं और ज्जालाके म
ध्ये मुखी पाट घर हैं और हळवद जहां राजमहल और ताल देवी का
हैं मंदिर हैं ज्जाला का मुखी राजस्थान कहते हैं और रस्ता साफ स-
डका वंदी हैं. और इस राज्यमें नीम खलून बहुधा होता हैं और फ-
थर की घंटी नाम जादी हैं और यहां राजकोट का रासिदंट एजेंट का हो
कम रहता हैं और बढवान कैप जे छावनी रेलवे स्टेशन से रस्ता लंबा
२० मील जाता हैं. पेदा सधान ज्वार बाजरी गेहूं रुई चणा निमक प-

थरा. और ज्जाला राजपूत जे सर्व इसीकावंश शाखा कुल हैं.

लीमडी ज्जालावाड देश गुजरात मंबोई हाता.

क्षत्री राजपूत जाला जात हैं ठाकोर साहिबका राज्य कालंबाई चोडाई चौरस क्षेत्रफल ७३५ वर्ग मील मनुष्य संख्या ४०३६३ हैं यहां के आमदनी रुपये १५०००० आसरे अनुमान हैं मुख्यनगर लिमडी यहां राजमहल और बागबगीचा सुंदर हैं नदी भोगावा बहती हैं. पेदास रुई ज्वार बाजरी साठा. और धांग धाका भाई हैं.

वढवाण ज्जालावाड देश गुजरात मंबोई हाता.

क्षत्री राजपूत जाला जात हैं ठाकोर साहिबका राज्य कालंबाई चोडाई चौरस क्षेत्रफल ५६१ वर्ग मील मनुष्य संख्या ४२५०० यहां के आमदनी रुपये १५०००० आसरे अनुमान हैं मुख्यनगर वढवाण यहां नदी भोगावा के तट पर राजमहल और बागबगीचा सुंदर हैं और शहर में सरकारस्ता साफ हैं और यहां से मील २ पर रेलवे स्टेशन हैं वढवाण कैंप जे छावनी हैं यहां पोलिटिकल एजेंट साहिब इसी ज्जालावाड का महाराज पर रेंख देख करता हैं और पेदास धान गेहूं चणा ज्वार बाजरी रुई साठा और धांग धाका भाई हैं और देश हाडोती में जालरा पाटण में जाला इनका भाई हैं.

वांकानेर ज्जालावाड देश गुजरात मंबोई हाता.

क्षत्री राजपूत जाला जात हैं राजा श्री अमर सिंह जीका राज्य कालंबाई चोडाई चौरस क्षेत्रफल ४५१ वर्ग मील मनुष्य संख्या ३०४९१ हैं यहां के आमदनी रुपये २५००० आसरे अनुमान हैं. मुख्यनगर वांकानेर यहां नदी मच्छुका तट पर राजमहल और बागबगीचा हैं. पेदास रुई ज्वार बाजरी साठा.

लखतरज्जालावाड देश गुजरात मंबोई हाता.

क्षत्री राजपूत जाला जात हैं. ठाकोर साहिब श्री कर्ण सिंहजी. का राज्य का लंबाई चौड़ाई चौरस क्षेत्रफल ३७५ वर्ग मील मनुष्य संख्या २३२०८ वसते हैं यहांके आमदनी रुपये ७५००० आसरे अनुमान हैं मुख्यनगर लखतर यहां राजमहल और बागबगीचा हैं. पेदासगेहूं चणारुई ज्वार बाजरी साग. और धांग धाका भाई हैं और रेलवे स्टेशन हैं और लखतर थानबी कहते हैं.

सायलाज्जालावाड देश गुजरात मंबोई हाता.

क्षत्री राजपूत जाला जात हैं ठाकोर साहिब श्री हरी सिंहजी का राज्य का लंबाई चौड़ाई चौरस क्षेत्रफल १५० वर्ग मील मनुष्य संख्या १६९८१ हैं यहांके आमदनी रुपये ४०००० आसरे अनुमान हैं यहां राजमहल बागबगीचा सुंदर हैं. पेदास रुई ज्वार बाजरी साग. और धांग धाका भाई हैं.

चूडाज्जालावाड देश गुजरात मंबोई हा.

क्षत्री राजपूत जाला जात हैं ठाकोर साहिब श्री बेटर सिंहजी का राज्य का क्षेत्रफल १२५ वर्ग मील मनुष्य संख्या १३४९६ वस्ती हैं. यहांके आमदनी रुपये १५००० आसरे अनुमान हैं मुख्यनगर चूडा यहां राजमहल और बागबगीचा हैं पेदान धान रुई ज्वार बाजरी साग. और धांग धाका भाई हैं.

बजाणाज्जालावाड देश गुजरात मंबोई हा.

मुसलमान जात हैं नवाब साहिब का राज्य क्षेत्रफल १३० वर्ग मील मनुष्य संख्या १५८७७ यहांके आमदनी रुपये १८००० आसरे अनुमान हैं. मुख्यनगर बजाणा यहां राज्य स्थान हैं. पेदास रुई धान ज्वार बाजरी.

छोटाराजस्थानजालावाड देश गुजरात मंबोई हाता.

क्षत्री राजपूत अथवा मुसलमान हैं. इसीके राज्यका मनुष्य संख्या ४४१००० हैं. पेदास रुई धान ज्वारी चणा बाजरी साठा.

गोहेलवाडा.

गोहेल राजपूत का राजस्थान है जिसे गोहेलवाडा कहते हैं.

मुख्य शहर.

१ भावनगर २ पालीताणा ३ वला ४ लाठी

५ और छोटे राजस्थान २१ हैं.

भावनगर गोहेलवाड देश गुजरात मंबोई हा०

क्षत्री राजपूत गोहेल जात हैं. रावलजी श्रीतगत सिंहजी महा राजका राज्यकालंबाई चौडाई चौरस क्षेत्रफल २७८४ वर्गमील. मनुष्य संख्या ४००३२३ हैं यहांके आमदनी रुपये ३१०००००० हैं. मुख्य नगर भावनगर यहां राजमहल और शहरपना और बागबगीचा सुंदर हैं और राजसोमा तोफमान ११ हाथी घोडा नगरानिसान और शहरमें सडकारस्ता साफ हैं और ताल १ सो भावान हैं इस राज्यमें पानी और ज्जाड वृक्ष बहुधा हैं और भावनगरमें समुद्रकी खाडी हैं गोहेल राजपूतमें मुख्य राजस्थान हैं. पेदास धान्य गेहूं तेल नीमक कपडा सूतरी तांबाका पीतलका वरतन होता हैं. इस राज्यमें नदी १ बहती हैं और रेलवे स्टेशन हैं परंतु भावनगर गोंडल रेलवे कहते हैं. और महाराजाने अपने राज्यमेसे रुपये स्वर्चकर रेलवे बंधाया हैं.

पालीताणा गोहेलवाडा देश गुजरात मंबोई हा०

क्षत्री राजपूत गोहेल जात हैं ठाकोर साहिब श्रीशूर सिंहजी का राज कालंबाई चौडाई चौरस क्षेत्रफल ५०९ वर्गमील मनुष्य संख्या ४९

२७१ यहांके आमदनी रुपये ४००००० आसरे अनुमान हैं. मुख्य-नगर पालीताणा यहां मोटा एक पर्वत हैं. इसकी उच्चाई १५०० फुट गज ७५० हैं इसीका शिखर पर जैनमत मंदिर लारवा रुपये लगे हैं जैनमतके इसीको शत्रुंजा कहते हैं और राजमहल और एक गढ़ और बागबगीचा सुंदर हैं और नगरवस्ती पर्वतके तट पर हैं और यहां ज्जाडी जंगल पर्वत बहु घा हैं. पैदास धान रुई ज्वारी बाजरी साठा पत्थर. और भावनगरका भाईप हैं.

वला गोहेलवाड देश गुजरात मंबोई हाता.

क्षत्री राजपूत गोहेल जात हैं. ठाकोर साहिबका राज्यका क्षेत्र फळ १५० वर्गमील मनुष्यसंख्या १७०१९ हैं यहांके आमदनी रुपये— १७००० आसरे अनुमान हैं. मुख्यनगर वला यहां राजमहल और बागबगीचा और नदी १ हैं. पैदास धान ज्वार बाजरी. और भावनगरका भाई हैं

लाठी गोहेलवाड देश गुजरात मंबोई हाता.

क्षत्री राजपूत गोहेल जात हैं ठाकोर साहिबका राज्यका क्षेत्र फळ ५० वर्गमील मनुष्यसंख्या ६८०४ हैं यहांके आमदनी रुपये १०००० आसरे अनुमान हैं मुख्यनगर लाठी यहां राजमहल और बागबगीचा हैं. और भावनगरका भाई हैं. पैदास धान ज्वार बाजरी रुई साठा.

सोरठ देश.

गीरी पर्वत हैं और जुनागढ़के पास गिरनार पर्वत हैं काठावाडमें सर्वसे उंच ३५०० फूट हैं और वर्डा पर्वत वर्डामें हैं और उत्तर हलारमें लालपूर भलसाण सूधी गयी हैं इसीकी उच्चाई २००० फूट हैं सोरठका गिरी पर्वतमें तुलसी स्थानमें गरम जलकी जीर्णा हैं नदीया भादर बुब्री ओज्जात कांबहिरण सामन और शिंगवडो.

मुख्यशहर.

१ जुनागढ.

२ बाटवा.

३ जसदण.

जुनागढ सौरठ देश गुजरात मंबोई हाता.

मुसलमान नबाबीजात हैं नबाबसाहिबका राज्यका लंबाई-
चोडाई चौरस क्षेत्रफल ३८०० वर्गमील मनुष्यसंख्या ३८७४९९.
यहांके आमदनी रुपये १५००००० आसरे अनुमान हैं. मुख्यनगर
जुनागढ यहां राजमहल और किला और शहर पना और बागबगीचा
सुंदर हैं राजसोभा तोफमान ११ हाथी घोडानगारा निसान हैं औ
र यहां एक गिरनारका पर्वत नामजादी हैं. इसीकी उच्चाई ३५०० फू
ट हैं. यहां साधुसंत बहुधा आयाजाया करते हैं और यहां ब्राह्मण
नागरजातीका नरसी मेहता हरीभक्त नामजादी होगया हैं और य
हां नबाबसाहिबका राजकोखन १७३५ इ० में स्थापना हुई हैं. पेदास
धान रुई ज्वार बाजरी साठा गीरत डुगली कांदा पथरा.

बाटवा सौरठ देश गुजरात मंबोई हाता.

मुसलमान नबाबीजात हैं. नबाबसाहिबका राज्यका क्षेत्रफल
१५० वर्गमील मनुष्यसंख्या १४५२४ हैं यहांके आमदनी रुपये १००००
आसरे अनुमान हैं मुख्यनगर बाटवा यहां राजमहल और बागबगीचा
सुंदर हैं और जुनागढका भाई हैं. पेदासरुई गिरत धान ज्वार बा
जरी साठा.

जसदण सौरठ देश गुजरात मंबोई हाता.

क्षत्री राजपूत खाचर काठीजात हैं. राजाका राज्यका लंबाई
चोडाई चौरस क्षेत्रफल २५० वर्गमील मनुष्यसंख्या २९०३७ हैं य
हांके आमदनी रुपये २५००० आसरे अनुमान हैं मुख्यनगर जसद
ण यहां राजमहल और शहर पना और बागबगीचा सुंदर हैं इस रा.

ज्यमें नदी १ वहती हैं. पेदास धान रुईज्वार माटीका वासण साठा.

हालर.

नदीयारामावती १ लालपोरमें और छीकारी पास हैं उंड २ जो-
डीया पास हैं. आजी ३ राजकोटमें बालंभाके पास हैं.

मुख्यनगर.

१ जामनगर २ गोंडल ३ राजकोट ४ ध्रोल.
५ मुली ६ पोरबंदर ७ द्वारका.

जामनगर हालर देश गुजरात मंबोई हाता.

क्षत्री राजपूत जाडेजा जात हैं जाम साहिब श्री बी भवाजी म-
हाराज का राज्य कालंबाई चौडाई चौरस क्षेत्रफळ ३३८३ मनुष्य सं-
ख्या ३१६१४७ हैं यहांके आमदनी रुपये ११००००० आसरे अनुमा-
न हैं मुख्यनगर जामनगर यहां राजमहल और शहरपना और बाग
बगीचा सुंदर हैं राजसोभा तोफ मान ११ हाथी घोडा नगारा निसान
हैं और कच्छ भूजके भाई हैं और शहरके पास १ लालबंगला हैं औ-
र ससुद्रकी खाडीमें मोली सिंपमे साचा पेदास होता हैं और मसीदा
वहोतवनी हैं.

गोंडल हालर देश गुजरात मंबोई हाता.

क्षत्री राजपूत जाडेजा जात हैं. ठाकोर साहिब श्री भगवंत सिंह
जी का राज्य कालंबाई चौडाई क्षेत्रफळ ४५० वर्गमील मनुष्य संख्या
४६५४० वसते हैं यहांके आमदनी रुपये ३००००० आसरे अनुमा-
न हैं मुख्यनगर गोंडल यहां राजमहल और एकगढ और शहरपना
और बागबगीचा सुंदर हैं और ताल जिसमें एक लाखोटा हैं इस राज्य
में नदीया ३ वहते हैं और रेलवे स्टेशन हैं परंतु यहांके ठाकोर साहि-
बने अपने रुपये खर्चकरके रेलवे बनाई हैं इसीका नाम भावनगर गों

डलरेलवे कहते हैं. पेदास धानगेहूं ज्वारी बाजरी सागरुई. और कच्छ भूजका भाई हैं.

राजकोट देश हालर गुजरात मंबोई हाता.

क्षत्री राजपूत जाडेजा जात हैं. ठाकोर साहिब श्रीबाबा सिंहजीका राज्य लंबाई चौड़ाई क्षेत्रफळ ४५० वर्गमील मनुष्यसंख्या ४६५४० हैं यहांके आमदनी रुपये २००००० आसरे अनुमान हैं मुख्यनगर राजकोट यहां राजमहल और बागबगीचा सुंदर हैं और यहांका ठावा डएजंटकी छावनी हैं यहां पोलिटिकल एजंट रहते हैं. ए सर्वमहाराजाके पर देरखरेखका होकम रखते हैं और यहां फौजरहती हैं पेदास ज्वार बाजरी रुई साग.

ध्रोल हालर देश गुजरात मंबोई हाता.

क्षत्री राजपूत जाडेजा जात हैं. ठाकोर साहिबका राज्यका क्षेत्रफळ २२७ वर्गमील मनुष्यसंख्या २१७७६ हैं यहांके आमदनी रुपये- २०००० आसरे अनुमान हैं मुख्यनगर ध्रोल यहां राजमहल और बागबगीचा सुंदर हैं. और इस राज्यमें नदी १ बहती हैं. पेदास धान ज्वार बाजरी सागरुई और कच्छ भूजका भाई हैं.

मुली हालर काठावाड देश गुजरात मंबोई हाता.

क्षत्री राजपूत परमार जात हैं. ठाकोर साहिबका राज्य लंबाई चौड़ाई क्षेत्रफळ १५० वर्गमील मनुष्यसंख्या १९८३२ यहांके आमदनी रुपये १६००० आसरे अनुमान हैं मुख्यनगर मुली यहां राजमहल और बागबगीचा सुंदर हैं. पेदासरुई धान ज्वार बाजरी साग. और इस देशमें परमार एक राजस्थान हैं.

पोरबंदर (सुदामापुरी) हालर काठावाड देश गुजरात मंबोई हाता.

क्षत्री राजपूत जेठवाजात हैं. राना साहिब श्रीवीकमातजी महाराजका राज्यकालंबाई चौडाई चौरस क्षेत्रफल ४५५ वर्गमील मनुष्यसंख्या ७१००२ यहांके आमदनी रुपये २००००० आसरे अनुमान हैं. मुख्यनगर पोरबंदर सुदामापुरी यहां राजमहल और बाग बगीचा समुद्रतटपर हैं राजसोभा तोफ मान ११ हाथी घोड़ा और ताल १ शहरमें हैं और यहां एक सुदामाजी श्रीकृष्णचंद्रजीकामित्र रहता था इसीसे सुदामापुरी नाम हैं. और इस देशमें जेठवा राजपुताका राज्यस्थान एकज हैं. पेदास धान रुई ज्वार बाजरी साग नीमख साबु.

श्री द्वारका वडोदाराज्य हालरकाटावाड देश गुजरात मंबोई हाता.

राजनके राजाधिपती श्री द्वारकाधीशजी महाराजका राज्य धार्मा में ओरवामंडळ जहां गोमती गंगा हैं यहां हिंदु लोग पितृपिंडदा न करते हैं और इसीसे लंवा मील १२ परबेट संखेधार द्वारका यहां श्रीकृष्णचंद्रजीका मोटा मंदिर जहां यात्री लोग बहु धाजाया आयाक रता हैं. पेदास धान ज्वारी बाजरी यहां वडोदाका महाराजाका राजधानी हैं. और सन १८१४ में बाघेरलोक कालूट हुवा था.

मोरवी मच्छुकाठा देश गुजरात मंबोई हाता.

क्षत्री राजपूत जाडेजाजात हैं गकोर साहिब श्रीवागसिंहजी का राज्यका क्षेत्रफल ४३५ वर्गमील मनुष्यसंख्या ८९९६४ हैं यहांके आमदनी रुपये २००००० आसरे अनुमान हैं मुख्यनगर मोरवी यहां राजमहल और बागबगीचा सुंदर हैं.

कच्छ भूज मंबोई हाता.

क्षत्री राजपूत जाडेजाजात हैं और यदुवंशीबी कहते हैं रावसा

हिब श्री खेंगार सिंहजी महाराज का राज्य काल बाई मील १७० चोड़ाई मील ५० परंतु एक स्थल में मील १५ हैं. क्षेत्रफल ६५०० वर्ग मील मनुष्य संख्या ५१२०८४ हैं यहां के आमदनी रुपये २५००००० आसरे अनुमान हैं और इसी का गाव ८८९ और परगना कसबा ८ हैं. और इस राज्य में दक्षिण दिशा सपाट हैं और तीन ही दिशा पर्वत से घेरा हुआ हैं इसमें कालोनाम पर्वत इसका उंच शिखर १२६८ फूट हैं चाडवां हार पर्वत में ननामो शिखर १४२४ फूट हैं. मुख्य नगर भूज ए संवत् १६०५ में आगले राव श्री खेंगार जीने बसाया था यहां मनुष्य संख्या २०६६१ वसते हैं राजमहल मरहूम नवामहल बहोत्सुंदर हैं और बागवगीचा ज्जाड वृक्ष भूज के निकट हैं और राजसोभा तोफ मान १७ हाथी घोडानगारा निशान हैं और जाडेजा रजपूत जे भाई हैं. और ओस्वामंडल में एक गढ़ सुंदर हैं और अर्बसमुद्र का तट पर एक ग्राम मांडवी बंदर यहां मनुष्य संख्या ३५९८० वस्ती हैं जहां व्योपार बहुधा होता हैं और क्षत्री लुवाना भाटीया विशेष हैं और एक समुद्र मध्ये दीवाकी दांडी आगबोट जहाज बाण इसी का चलने की निसानी को बनाया हैं. मोटा परगना सुंदरालखपत जखो तूणा बंदर हैं. अंजार रापर अधोई मोरवीनु भचू बेला नलिया कठोरा तेरा सुमरी रोहा भद्रेसर केरा कंथकोट यह मोटा शहर हैं. परंतू पाछला चार शहर यहां जैन धर्म का प्राचीन मंदिर हैं. बंदर स्थान मोरवीका जिंजुवाडा और काठावाड नवानगर का और सिंध का वस्ता बंदर पर रावसाहिब का हक पोचता हैं और मदर्शा विद्याशाला ९१ हैं इसी में ५७५३ विद्यार्थी हैं और राजकछेडी सुंदर अदालत और कच्छ का काइदा की पुस्तक नवी बनाई हैं इसी परमाणे काइदा सौ इनसाफ होता हैं. दीवाणी फोजदारी ए अष्टकोसल में मोटा दीवान और तीन भाई ने मनुक किया

हैं और १७ परगना महलमें जुदाजुदाकामदारकामचलाते हैं और भूजमें अंग्रेजसरकारकी तरफसे पोलिटिकल एजेंट साहिब रहते हैं. और भूजका राजपररेखदेखकरते हैं और अंग्रेजी फौज छोटा लसक रकी छावनी हैं नदीया एदेशमें छोटी हैं परंतु पाणीकी खाडी बहो-त्सा हैं चातुर्मासमें भरी रहती हैं. और इस देशमें कच्छीरणजे रेती रसाल सपाट यहां पर्वत वृक्ष ज्जाड नहीं हैं. इसीको कच्छीरण कह-ते हैं. पैदास ज्वार बाजरी नीमक लून मूग गेहूं मठ रुई राई और घोडा गायवलद ऊंट घी तेल भूजमें सूती रेशमी कपडा और कसवका भरत और नकसी सोना चांदीपर नकसी दारकाम सुंदर होता हैं. फटकडी सूरोरवार कोयला खान बहोत्सा हैं.

स्वैरपूर देश सिंध मंबोई हाता

मुसलमान जाते हैं नवाब साहिब श्री मीर अल्ली मुराद रवांका - राज्य कालंबाई चौडाई चौरस क्षेत्रफल ५००० वर्ग मील मनुष्य संख्या १२५००० वसते हैं. यहांके आमदनी रुपये ५००००० आसरे अनुमा-न हैं मुख्य नगर स्वैरपूर यहां राजमहल और बागबगीचा सुंदर हैं. राजसो भातोफमान १५ हाथी घोडा हैं और सिंधमें पहिले इसे अ-ली मुरादका राज्य कहते थे.

पंजाबके रजवाडे.

राज्य प्रबंधके अनुसार पंजाबसे ३४ जिले हुए हैं अर्थात् का-श्मीर जंबू सतलज इसपारके रजवाडे अर्थात् पठियाला भींद ना भा कलसिया मलेरकोटला फरीदकोट, सतलज उसपारके रजवा-डे अर्थात् कपुरथला मंडी सकीत चंबा और सिम्लाके पहाडी रजवा-डे १९ हैं और देहली जिलामें दोजाना लुहारूपतावदी, भावल-पूर हैं.

जंबू काश्मीर पंजाब हाता.

क्षत्री राजपूत जात हैं. महाराजाजी श्रीरणवीर सिंहजी महा राजका राज्यका लंबाई चौड़ाई चौरस क्षेत्रफल २५००० वर्गमील मनुष्यसंख्या १२२५००० हैं यहांके आमदनीरूपये ६५०००० परंतु ८००००० आसरे अनुमान हैं. मुख्यनगर जंबू यहां राजमहल और एक किल्ला पर्वतपर सुंदर हैं और बागबगीचा राजसो भातोफ मान १९ हाथी घोडा नगरानिसान हैं और एदेश काश्मीर लंबाई चौड़ाई अनुमान ९० मील लंबी वायव्यसे लेकर आग्नेय तक चली गई हैं इसका अत्यंत चौड़ा भाग ४० मील हैं इसकी समुद्रकी पृष्ठसे मध्य उंचाई ५५०० फूट हैं इस देशकी शोभा ऐसी अति मनलोभा हैं की देख ताही बन आवे यहांकी आबोहवा बहुत ऊतम हैं. इसके खंडेरे दुशाले और फलनामी हैं और यहांकी स्त्रिया अति सुंदर और कोमलंगी होती हैं. और इस देशको किसीने कब जीता था. सन १३३४ में काश्मीरको मुसलमानोने जित लिया था सन १५०६ में अकबरने इसे लिया सन १७५२ में अफगानोके हाथ लगा इनसे सीखोंने सन १८१८ में लेकर अंग्रेजोंको सौंप दिया जिन्होंने गुलाब सिंहको एक करोड रुपया लेकर दे डाला था यह मनुष्य पहिले केवल सवार था परंतु ऐसा शीघ्र बढ़ा की की थोड़े ही समय में रंजित सिंहकी सेनाका सेनापती होगया इसीका बेटा रणवीर सिंह काश्मीरका वर्तमान महाराजा हैं यहांके निवासी भाषा त्वास काश्मीरके निवासी विशेषकर सुन्नी और शिया मतवाले मुसलमान हैं जो आपसमें बहुधा जुगुडते रहते हैं. पश्चिमी और दक्षिणी भागोंमें हिंदू और मुसलमान बसते हैं और पूर्व और उत्तरमें तिब्बतकी अनेक जाते बसती हैं भाषा यहांकी काश्मीरी हैं पश्चिम और नैर्ऋत्यके भागोंमें पंजाबी और आग्नेय

पूर्व और उत्तरमें तिब्बतकी भाषाबोली जाती हैं. और नदीया आदी सिंधु ज्जेलम और चनाब वाचंद्र भागा ये मुख्य नदीया हैं. उत्तर ज्जील और श्रीनगरका दलमुख ज्जीले हैं ज्जेलम वा बहात श्रीनगरके आग्नेय में पूलीके निकट अहाबाद परगनेसे निकलकर उत्तर ज्जीलमें होकर बहती हैं. पर्वत घाटी कश्मीरकी वादीके भीतर जानेमें ये घाटी पडती हैं भींचर राजोरी और पीर पंजल घाटीजो ११४०० फूट उंची हैं और दूसरा मार्ग श्रीनगरके पश्चिममें बाराहमूला होकर हैं और मुख्यनगर श्रीनगर वा काश्मीर दलके निकट बहात नदीपर दुशालेका गज और अन्नके कारण प्रसिद्ध हैं और इसके आग्नेयमें पामपूर केसरकी उपजके कारण प्रख्यात हैं. इसके नैऋत्यमें राजोरी हैं यहां पर चंगेज हाटीगांवके समीप जहांगीर सन १६२७ में मरा श्रीनगरके पूर्व सिंधुनदीके परे लेहवालदक हैं यहां पर उन चहा और सुरहगायका बडा बौ पार होता हैं. चतुःसीमा वायव्यमें जीला हजारा पश्चिममें हजारा रावलपिंडी और जेलम जिला और जेलमनदी दक्षिणमें गुजरात सियालकोट गुर्दासपूर और कांगडाके जिले और चंबाला हूल और स्पिती रजवाडे पूर्वमें चीनकाराज्य और उत्तरमें काराकोरम श्रेणी हैं.

सतलज इस पारके राज्य.

पटियाला देहा पंजाब पंजाब (लाहोर) हाता.

सीखजाटजात हैं महाराजा श्रीराजेंद्र सिंहजी महाराजाकाराज्यका लंबाई चौडाई चौरस क्षेत्रफल ५४१२ वर्गमील मनुष्यसंख्या १६२५००० यहांके आमदनीरुपये ३०००००० हैं मुख्यनगर पटियाला सीख लोगमें ये राज्य प्रसिद्ध हैं. यहांका महाराजा फुल्की जातीका सुखिया लेखा जाता हैं और पटियाला कौसिलाकी वेगधारा वा पटियालानदीपर बसता हैं यहां एकगढ और राजमहल और बागबगीचा सुंदर

हैं राजसो भा तोफ मान १७ हाथी घोडा नगारा निशान हैं. यहां एक नगर कोट देवी का मंदिर हैं और मोती बाग सुंदर हैं. और रस्ता सडका साफ हैं पेदास धान चणा जव गेहूं ज्वार बाजरी मोठ रुई साठा.

जींद देश पंजाब लाहोर हाता.

सीख जाट जात हैं महाराजा श्री रघुबीर सिंह जी महाराज का राज्य कालंबाई चौडाई चौरस क्षेत्रफल १२३६ वर्ग मील मनुष्य संख्या ३११००० बसते हैं यहां के आमदनी रुपये ४००००० हैं मुख्य नगर जिंद यहां राजमहल और एक किल्ला और बाग बगीचा हैं राजसो भा तोफ मान ११ हाथी घोडा नगारा निशान हैं और पटियाला का भाई हैं. और मील ५ पर रामरीज यहां पर परसराम जीना नक्षत्रीय किया हैं. जिसे तीर्थस्थान कहते हैं. पेदास यहां जमना की नहर का लियाया है इसीसे धान पेदास हैं. धान गेहूं चावल चना बाजरा रुई साठा ऊन. और सगस्तर ग्राम जहां एक कुंड सुंदर यहां राजस्थान हैं और कैथल के दक्षिण में हैं.

नाभा देश पंजाब लाहोर हाता.

सीख जाट जात हैं महाराजा श्री हीरा सिंह जी का राज्य कालंबाई चौडाई चौरस क्षेत्रफल ८६२ वर्ग मील मनुष्य संख्या २७६००० यहां के आमदनी रुपये ४००००० हैं मुख्य नगर नाभाय हाराजमहल और एक गढ और बाग बगीचा सुंदर हैं राजसो भा तोफ मान ११ हाथी घोडा नगारा निशान हैं और पटियाला का भाई हैं. पेदास यहां नरी सतलुज की नहर का पानी ले आया हैं. इसीसे खेती होती है. पेदास गेहूं चना ज्वार बाजरी चावल साठा रुई और पटियाला का वायव्य में हैं.

मलेरकोटला देश पंजाब लाहोर हा०

मुसलमान जान हैं नवाब साहिब श्री अबदुलरहमान खान कारा
ज्यकालंबाई चौडाई चौरस क्षेत्रफल १६५ वर्गमील मनुष्य संख्या—
४७००० हैं यहांके आमदनी रुपये १००००० हैं मुख्यनगर मलेरकोट-
ला यहां राजमहल और गढ और बागबगीचा सुंदर हैं. राजसोभा तो
फमान ९ हाथी घोडा हैं. पैदास धान ज्वार बाजरी गेहूं चना साठा
रुई. और नाभाके वायव्यमें हैं.

फरीदकोट देश पंजाब लाहोर हाता.

राज्यकालंबाई चौडाई चौरस क्षेत्रफल ६४३ वर्गमील मनुष्य
संख्या ५१००० यहांके आमदनी रुपये १००००० आसरे अनुमान हैं
मुख्यनगर फरीदकोट यहां राजमहल और एक किल्ला और बागबगी-
चा सुंदर हैं राजसोभा तो फमान ११ हाथी घोडा हैं. पैदास धान ज्वा-
र बाजरी ऊन साठा. फिरोजपूरके आग्नेयमें हैं.

कलसिया देश पंजाब लाहोर हाता.

राज्यकालंबाई चौडाई क्षेत्रफल १५५ वर्गमील मनुष्य संख्या-
६२००० हैं यहांके आमदनी रुपये ७५००० आसरे अनुमान हैं मुख्य
नगर कलसिया यहां राजमहल और एक गढ और बागबगीचा सुंदर
हैं पैदास धान गेहूं चना ऊन ज्वार बाजरी.

सतलज उसपारके राज्य.

कपुरथला देश पंजाब लाहोर हाता.

राज्यकालंबाई चौडाई क्षेत्रफल ५९८ वर्गमील मनुष्य संख्या-
२१३००० हैं यहांके आमदनी रुपये ५५०००० हैं मुख्यनगर कपुर-
थला ब्यास नदीके वाये तटके निकट बसता हैं यहां राजमहल और
एक गढ और बागबगीचा सुंदर हैं राजसोभा तो फमान ११ हाथी घोडा

हैं पेदास धान ऊन रुई चना गेहूं साठा ज्वार बाजरी.

मंडी देश पंजाब लाहोर हाता.

राज्य कालंबोई चोडाई चौरस क्षेत्रफल १०८० वर्ग मील मनुष्य संख्या १४०००० हैं यहां के आमदनी रुपये ३००००० हैं मुख्य नगर मंडी व्यास नदी के बाएतट पर बसते हैं. यहां राजमहल और एक किल्ला और बागबगीचा सुंदर हैं राजसो भातोफमान ११ हाथी घोडानगारा निशान हैं. पेदास धान ऊन ज्वारी बाजरी साठा.

सकीत देश पंजाब लाहोर हाता.

राज्य कालंबोई चोडाई चौरस क्षेत्रफल ३३९ वर्ग मील मनुष्य संख्या ४०००० हैं यहां के आमदनी रुपये ८०००० हैं मुख्य नगर सकीत यहां राजमहल और एक गढ़ और बागबगीचा सुंदर हैं राजसो भातोफमान ११ हाथी घोडा हैं पेदास धान ऊन रुई ज्वार बाजरी साठा चावल. और मंडी के दक्षिण में हैं

चंबा देश पंजाब लाहोर हाता.

क्षत्री राजपूत जात हैं महाराजा श्री सुलतान सिंह जी का राज्य लंबोई चोडाई चौरस क्षेत्रफल ३२१६ वर्ग मील मनुष्य संख्या १२०००० हैं यहां के आमदनी रुपये १५०००० हैं मुख्य नगर चंबा रावी नदी के दहिने किनारे पर हैं यहां राजमहल और एक गढ़ और बागबगीचा सुंदर हैं राजसो भातोफमान ११ हाथी घोडानगारा निशान हैं. पेदास धान ज्वार बाजरी चना गेहूं साठा ऊन और जंबू के पूर्व में हैं.

सिमला के पहाड़ी प्रदेश में मुख्य रजवाड़े.

सिरमौर देश पंजाब लाहोर हाता.

राज्य कालंबोई चोडाई चौरस क्षेत्रफल ८३४ वर्ग मील मनुष्य संख्या ८०५०० हैं यहां के आमदनी रुपये १२५००० आसरे अनुमान

मुख्यनगरनाहनयहां राजमहल और एक किल्ला और बागबगीचा सो भाचान हैं राजमानतोफ ११ हाथी घोडा हैं. पेदास धानऊन बाजरी चावल गेहूं चना साठा रुई और अंबालाके ईशान्यमें हैं.

छोटे छोटे राज्य.

१ कहलूर विलासपूर यहांके आमदनीरुपये ७०००० हैं मुख्य नगर विलासपूर सतलज नदीके बाये किनारे पर हैं.

२ हिंदूर नालागढ आमदनी रुपये ६०००० हैं

३ बुसाहीर सतलजनदीपर आमदनी रुपये ७०००० हैं इसके उत्तरीय भागको कनावर कहते हैं अंगूरेके कारण प्रसिद्ध हैं यहां पर एक स्त्री अनैक पुरुष कर लेती हैं इसमें वहांके लोग कुछ बुराई नहीं समजते हैं.

४ क्युंथल आमदनी रुपये ३०००० हैं

देहली जिलेके रजवाडे.

५ लुहारू आमदनी रुपये ४५००० नबाब लुहारू में रहता हैं.

६ दोजाना आमदनी रुपये ६०००० हैं.

भावलपूर देहली जिला पंजाबलाहोर हाता.

मुसलमान जात हैं नबाब साहिब श्री भाई दाऊद पुत्री का राज्य लंबाई चौड़ाई चौरस क्षेत्रफल १२४८३ वर्ग मील मनुष्य संख्या ३६५००० हैं यहांके आमदनी रुपये ३२५००० हैं मुख्यनगर भावलपूर घारा नदीके बाएं तटके निकट बसते हैं यहां राजमहल और गढ और बागबगीचा सुंदर हैं और ये रेशम बननेके कारण प्रसिद्ध हैं. पेदास धान गेहूं ज्वार बाजरी चना साठा रुई ऊन. यहांका राज्य नबाब देहांत हुवा पीछे अंग्रेज सरकारके हाथमें हैं.

नेपालका स्वतंत्रराज्य

क्षत्री सूर्यवंशी सीसो दिया जात हैं महारानाजी का राज्य कालं बाई चोडाई पूर्व से लेकर पश्चिम तक ५०० मील हैं और चोडाई १६० मील अनुमान हैं यह सर्व देश पहाड़ी हैं परंतु हिमालय की श्रेणी-समुद्र से उंची ४००० फूट हैं और यह देश में नदी बहोत बहती हैं. और खेती बहोत होती हैं धान गेहूं बहोत उपजते हैं यह राज्य में मनुष्य २०००००० हैं और यह महाराजा देश मेवाड का रानाजी का भाई हैं और यह देश में नदी बहोत बहती हैं. परंतु एक नदी गल्ली का नाम हैं यह नदी में शालिग्राम तथा और नरसिंह जी की मूर्ती निकलता हैं. यहां साधु लोग बहोत्सा जाते हैं और शालिग्राम तथा नरसिंह जी की मूर्ती पूजने को लियाता हैं और राजस्थान में राजमहल सोभावान हैं यह महाराजा की फौज बहोत्सा हैं और नेपाल देश पर्वत सौ घेरा हुआ हैं. नेपाल का एकरस्ता जाने आने का हैं.

काबूल अमीर का स्वतंत्रराज्य.

मुसलमान जात अमीर का राज्य लंबाई चोडाई क्षेत्रफल - ४९००० वर्ग मील हैं और मनुष्य संख्या साठ ६० लाख हैं और यहां का राज्य में पहाड बहोत्सा हैं और यहां का लोग लडाई में बहोत जो धासूरवीर हैं प्रजा संबंधी लडाई करते हैं और संस्थान का राज्य का रस्ता एक ते देश में होकर आता हैं हीरात का किल्ला सौ अनेकरस्ता हैं.

वादशा और सर्व महाराजा सरदाराकौ तोप मान्य हैं.

अंग्रेजी अधिकारी.

१ लाठसाहेब कलकत्ताका	३१	५ कमांडर इनचीफ़	१५
२ गवर्नर साहेब मंबोईका	१७	६ एजेंट गवर्नर जनरल	१३
३ गवर्नर साहेब मद्रासका	१७	७ चीफ़ कमिशनर	१३
४ लेफ्टेनेंट गवर्नर पंजाबका	१५	८ पोलीटिकल एजेंट	११

कलकत्ता हाताकाराजा.

१ हैदराबाद दक्षिण निजाम	२१	१८ धौलपूरकाराना	१५
२ बडोदा गायकवाड	२१	१९ जैसलमेरकामहाराजा	१५
३ चित्तोडगढ उदेपूर मेवाड	१९	२० ज्वालरापटणकामहाराजा	१५
४ गवालियर महाराजा सिंधिया	१९	२१ प्रतापगढकामहाराजा	१५
५ इंदौर महाराजा होलकर	१९	२२ डुंगरपूरकामहाराजा	१५
६ जयपूर महाराजा	१७	२३ रतलामकामहाराजा	१५
६ जोधपूर महाराजा	१७	२४ धारकामहाराजा पुवार	१५
८ बुंदी महाराजा	१७	२५ देवासका दोईर राजा पुवार	१५
९ कोटाका महाराजा	१७	२६ सीरोही महाराजा	१५
१० करोली महाराजा	१७	२७ रामपूरकानबाबसाहिब	१३
११ रीवाका महाराजा	१७	२८ जावराकानबाबसाहिब	१३
१२ भरतपूर महाराजा	१७	२९ बनारसका सीका महारा०	१३
१३ भोपाल बेगम	१९	३० कुचबिहारका महाराजा	१३,
१४ बिकानेरका महाराजा	१७	३१ त्रिपुराका राजा	१३
१५ हुंकका नबाबसाहेब	१७	३२ बासवाडाका महाराजा	११
१६ किसनगढ महाराजा	१५	३३ सिलानाका महाराजा	११
१७ अलवर महाराजा	१५	३४ ज्जाववाका महाराजा	११

३५ सितामउकाराजा ११	३८ राजगढनबाब ११	४१ वानुनीकानबाब ११
३६ पन्नाकामहाराजा ११	३९ नरसिंहगढमहाराजा ११	४२ दतियाकामहारा. १५
३७ वाउनीनबाब ११	४० खेलातखान ११	४३ अलीराजपूर ९
४४ फुदलीसुलतान ९	४५ नागोदराजा ९	
४६ लाहज सुलतान ९	४७ बालासिनोरनबाबवावी ९	

मद्रास हाताकामहाराजा.

१ म्हेसूरका महाराजा २१	२ त्रावनकोरमहाराजा १९	३ कोचीनमहाराजा १७
------------------------	-----------------------	-------------------

मंबोई हाताकामहाराजा.

१ कोलापूरमहाराजा १९	६ धांग धा महाराजा ११	११ खैरपूरका मीरअ.मु. १५
२ कल्लभूज महाराज १७	७ पोरबंदरकाराना ११	१२ पालनपूरका दिवान ११
३ जुनागढनबाब ११	८ राजपीपला महारा. ११	१३ सावतवाडी देसाई ९
४ जामनगरमहारा. ११	९ राधनपूरकानबाब ११	१४ छोटाउदेपूरकाराजा ९
५ भावनगरमहारा. ११	१० इडरकामहाराजा १५	१५ लुनावाडाकाराना ९
१६ वालासीनोरकानबाबवावी ९		

पंजाब हाताकामहाराजा.

१ जंबूकाशमीरकाम. १९	८ नाभाकाराजा ११	१५ कावेकानबाब ११
२ उर्छाटिहरीकाम. १५	९ सीरपुरानाहनराजा ११	१६ अजेगढकामहा. ११
३ पटियालाकामहा. १७	१० फरीदकोटराजा ११	१७ खैलूरविलासपूर ११
४ जींडकामहाराजा ११	११ सुकेटराजा ११	१८ मालेरकोटकानबा. ९
५ समरथमहाराजा ११	१२ चंबाकाराजा ११	१९ सुंथकामहाराजा ९
६ कपुरथलामहारा. ११	१३ छत्रपूरकाराजा ११	२० वरवानीकाराजा ९
७ चिरकारी महारा. ११	१४ मंडीकाराजा. ११	२१ वरीयाराजा ९

पंडित गंगाधर पुष्करलाल आपकी बुद्धी प्रकाशसौ यह सर्व ग्रंथ बनाकर प्रसिद्ध किया हैं. उसका नाम किंमत सहित.

नाम	किंमत	डा. म.
१ भूगोलज्ञानप्रकाश हिंदुस्थान इतिहास	१	=)
२ श्रीभारतसार संस्कृत	२॥	१)
३ श्रीभारतसार भाषाटीका	४	१=)
४ श्रीभारतसारकेवलभाषा अध्याय १०५	२॥	१=)
५ सारंगधरभाषाटीका अनुपानसहित	६॥	॥)
६ श्रीमहादेवीसारणी ज्योतिषब्रम्हपक्षकी	१॥	१)
७ कर्मविपाकसूर्यणिविभाषामिश्रित	१	१॥)
८ विद्याबुद्धिप्रकाशबालकाको पढनेका	॥=	=)
९ कार्तिकिमहात्म पद्मपुराणका भाषाटीका	१	=)
१० गरुडपुराणभाषाटीका अध्याय १६ सारोधार १॥		=)
११ एकादशीभाषाटीका चातुरमासकथा	१॥	=)
१२ दधीचवंशावली	—)	१॥)
१३ मनुस्मृती भाषाटीका	५	॥)
और नवीन छपता हैं.		
१४ अध्यात्मरामायणभाषाटीका	५	॥)
१५ गर्गसंहिता भाषाटीका	५॥	॥=)
१६ याज्ञवल्क्य स्मृती भाषाटीका	५	॥)
१७ श्रीमत् भागवत भाषाटीका	१५	२)
१८ श्रीमत् भागवत दशमस्कंध भाषाटीका	५	१)
१९ संकष्टचतुर्थी कथा भाषाटीका	॥	—)

२० सर्वकवितासंग्रहभाषा	३	१=)
२१ वृष्टीगर्भअनेकप्रकारकाग्रहणसहित	१	=)

इति समाप्तः

